यूनियन सृजन

वर्ष - 3 अंक - 3 • जनवरी-मार्च, 2019, मुंबई

'कुंभ' विशेषांक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 30.04.2019

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष - 3 अंक - 3 जनवरी-मार्च, 2019

संरक्षक

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

ब्रजेश्वर शर्मा
महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

राजेश कुमार
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन मंडल

आर. के. कश्यप
डी. सी. चौहान
महाप्रबंधक

ब्रिगे. आशुतोष सीरौठिया, सेना मेडल
मुख्य सुरक्षा अधिकारी

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: rajeshj@unionbankofindia.com
sulabhakore @unionbankofindia.com
9820468919, 022-22896595

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया | Union Bank of India

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- क्षेत्र प्रमुख की डेस्क से 4
- संपादकीय 5
- प्रयागराज के साहित्यकार - महादेवी वर्मा एवं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 6-8
- काव्य सृजन 9
- कुंभ की सामयिकता- प्रासंगिकता 10-11
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कुंभ 11
- सनातन संस्कृति के उद्देश्य एवं कुंभ 12-13
- कुंभ-धार्मिकता और मानवता 14-15
- कुंभ की तैयारियां - चुनौती 16-17
- कुंभ- ऐतिहासिकता व पौराणिकता 17
- नागा साधु 18-19
- महिला नागा साधु 20-21
- कुंभ और विदेशी सैलानी 21-22
- सशस्त्र साधु 23
- कुंभ तथ्य और मिथ 24
- कुंभ और महिलाएं 25
- कुंभ और अध्यात्म 26-27
- किन्नर अखाड़ा 28-29
- प्रयागराज के शाही स्नान 30-31
- कुंभ आयोजन में आने वाली समस्याएँ/उपाय 32-33
- कुंभ और गुमशुदगी 34-35
- कुंभ पर्व और पर्यावरण 36-37
- कुंभ पर्व - कट्टरता 38-39
- कुंभ में हिंसा एवं अव्यवस्था 40
- कुंभ, अर्धकुंभ और महाकुंभ 41
- प्रयागराज कुंभ में वैश्विकता और नवीनता 42-43
- कुंभ - सुरक्षा व्यवस्था, आपदा प्रबंधन 44-45
- कुंभ मेले का आर्थिक व्यवस्था पर प्रभाव 46-47
- कल्पवास 48-49
- लक्ष्मीपति त्रिपाठी, आचार्य महामंडलेश्वर, किन्नर अखाड़ा .. 50-51
- राजभाषा पुरस्कार 52-53
- राजभाषा समाचार 54-55
- यात्रा सृजन - गोवा की यात्रा 56-57
- आयुष्मान भव-खट्टी - मीठी चेरी 58
- आपकी नज़र में... 59
- बैक कवर 60

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

हर विकसित चीज के पीछे एक परंपरा होती है, उसकी अपनी एक संस्कृति होती है. परंपरा और संस्कृति के आधार पर ही कोई चीज टिकी होती है. लेकिन परंपरा और संस्कृति एक ही दिन में विकसित नहीं हो जाती, यह एक लंबी प्रक्रिया है. यहाँ कई चीजें समाप्त होती हैं और उनका फिर नए सिरे से निर्माण होता है. इसलिए परंपरा और संस्कृति का बचे रहना, बने रहना हमारे अस्तित्व के लिए बेहद जरूरी है. हम भारतीय शुरू से ही उत्सवधर्मी रहे हैं. हमारे तीज-त्योहार, पहनावा, गीत-संगीत, कलाएं, बोली-भाषा, खान-पान, मान्यताएँ आदि बहुत सी चीजें मिलकर हमारी परंपरा और संस्कृति का संगम बनाती हैं.

उत्सव और मेले, संस्कृति के विकास के अभिन्न अंग हैं. वैसे तो मेलों का आयोजन पूरे विश्व में किया जाता है, लेकिन इस संदर्भ में भारत की बात कुछ निराली ही है. भारत में तो हर गाँव, कस्बे, चौराहे-नुक्कड़ या बड़े-छोटे शहरों में मेलों के आयोजन की अलग-अलग परंपरा है. ऐसा ही एक महा मेला है कुंभ ! शायद इसे देखकर ही गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत को 'महामानव समुद्र' कहा था. कुंभ का आकर्षण सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं है. पूरी दुनिया से लोग इस कुंभ में डुबकी लगाने आते हैं. यह कुंभ केवल नदियों का संगम या स्नान भर नहीं है, यह इन्सानों का महासागर है और इन्सानों के आकर्षण के केंद्र में है- कुंभ से जुड़ी कथाएँ, मान्यताएँ. कुंभ में डुबकी लगाकर मनुष्य उस अमृत की बूंदों को पाना चाहता है, जो देवासुर संग्राम में धरती पर आ गिरी थीं. मनुष्य ने अपने जीवन को सार्थक और सुखी बनाने की अनगिनत कोशिशें की हैं. कुंभ भी उसकी इसी खोज का एक रास्ता है. हिन्दू मान्यताओं के अनुसार कुंभ-स्नान को साक्षात स्वर्ग का दर्शन करना माना जाता है; इससे कई उच्च लोकों के द्वार खुल जाते हैं, मुक्ति मिल जाती है तथा पापों से निजात मिल जाती है.

कुंभ मेले का इतिहास 850 सालों से भी ज्यादा पुराना है. नागा साधुओं और विविध अखाड़ों से लेकर कई ऐसी चीजें हैं, जिन्हें हम केवल कुंभ में ही देख सकते हैं. कुंभ मेला हम सबके लिए कई जिज्ञासाएँ लेकर आता है. यहाँ ऐसा बहुत कुछ है, जो लोग जानना चाहते हैं. हर किसी के लिए आसान नहीं होता कि वह कुंभ में स्नान करने जा सके. ऐसे में 'यूनियन सृजन' का कुंभ विशेषांक प्रकाशित करने की यह कोशिश बेहद सराहनीय है. आशा है, यह अंक हमारे ऐसे कई सवालों का जवाब होगा, जो कुंभ के बारे में हमारे जेहन में अक्सर आते रहते हैं. मुझे विश्वास है कि यह अंक हमारी परम्पराओं और संस्कृति को समझने में बेहद कारगर होगा.

हमारे बैंक की भी बेहद समृद्ध परंपरा है. 'अच्छे लोग, अच्छा बैंक' के नारे के साथ हमारे कार्य की एक विशेष संस्कृति है. इसी के बल पर आज हम अपना शताब्दी वर्ष मना रहे हैं. कहते हैं, जो पेड़ बहुत विशाल होते हैं, उनकी जड़ें भी काफी गहरी होती हैं. आइए, हम अपने शताब्दी वर्ष में हमारी बैंकिंग परम्पराओं और बैंकिंग संस्कृति को कुछ और जाने और समझें. यह समय अपनी जड़ों से जुड़े रहकर एक बेहतर भविष्य के निर्माण का है.

आपका

(राजकिरण रै जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

क्षेत्र प्रमुख की डेस्क से ...

दो पवित्र नदियों गंगा ,यमुना व मानस उद्धृत सरस्वती नदी के पवित्र मिलन के कारण यह तीर्थ राज संगम या त्रिवेणी कहलाता है. यही कारण है कि प्रयाग के कुंभ का महात्म्य सर्वोपरि है.

पौराणिक पृष्ठभूमि में समुद्र मंथन से जुड़ा है, कुंभ का पर्व! समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्नों में एक 'अमृत कुंभ' (घट) भी था. मान्यता के अनुसार यही अमृत, देव दानवों के बीच संघर्ष के फलस्वरूप जिन-जिन स्थानों पर छलका उन्हीं चार स्थानों - प्रयाग, उज्जैन, नासिक व हरिद्वार में, कुंभ मेला के रूप में प्रतिस्थापित हुआ .

यही अमृत तत्व था जिसकी कामना में सुधीजन एकत्र होने लगे और उस धार्मिक उत्सव ने कालांतर में मेले का रूप ले लिया. अमृत योग में इसी अमृत में स्नान - पान हेतु जन समूह उमड़ पड़ता है.

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में वृहस्पति को ज्ञान का, सूर्य को आस्था का व चन्द्रमा को मन का प्रतीक माना गया है, कुंभ का पर्व इन ग्रहों की एक विशेष स्थिति में ही आयोजित होता है.

एक सहज विश्वास यह भी है कि ग्रहों की विशेष स्थिति में नदियों के जल में भी एक विशेष जीवनीय गुण अर्थात अमृत आ जाता है जिससे मन की शुद्धि के साथ आध्यात्मिक विकास तो होता ही है, साथ ही आरोग्य की प्राप्ति होती है.

कुंभ को आस्था का जन सैलाब कहा जा सकता है. गृहस्थ और गृहत्यागी दोनों का महामेल है कुंभ. सनातन धर्म की सेना कहे जाने वाले साधुओं के अखाड़े कुंभ की विशेष शोभा होते हैं. ये एक ओर भक्तों के लिए आस्था व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति होते हैं वहीं विदेशी सैलानियों के लिए कौतूहल का विषय!

प्रयागराज (पूर्ववर्ती इलाहाबाद) शिक्षा व साहित्य का गढ़ रहा है. यह प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की जन्मभूमि व उनके पिता पंडित मोती लाल नेहरू की कार्यस्थली रही. पंडित मोती लाल नेहरू भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आरंभिक कार्यकर्ताओं में से थे, जो सन 1919 व पुनः सन 1928 में कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे. भारत के मुक्ति संग्राम में क्रांतिकारी धारा का योगदान अप्रतिम है. इसी धारा के एक पुरोधा चन्द्रशेखर 'आजाद' की शहादत इलाहाबाद में 27 फरवरी, 1931 को हुई. इनकी विशाल प्रस्तर प्रतिमा शहर के अल्फ्रेड पार्क (अब आजाद पार्क) में स्थापित है.

वर्ष 2019 का कुंभ कई मायनों में अद्भुत रहा. लगभग दो माह के इस समागम में 20 करोड़ से अधिक भक्तों ने आस्था की डुबकी लगाई. देश-विदेश से सैलानी इस महान पर्व के साक्षी बने. पूरा परिवेश आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एकत्व की भावना से सराबोर रहा. कुंभ नगरी एक अलौकिक वातावरण के लिए आकर्षण का केंद्र बनी रही. गंगा, यमुना व अदृश्य सरस्वती के तट पर बसी कुंभ नगरी में इतना कुछ था कि हर कोई इसे अपनी स्मृति में समेट लेना चाहता था. जल ही जीवन है, सतत सलिल नदियां जीवन का स्त्रोत हैं. स्मृति, विश्वास व मिथक के सहारे भारतीय जन इस मान्यता को न केवल अभिव्यक्ति देते हैं बल्कि इसे और विश्वसनीय बनाते हैं.

2019 के कुंभ मेले में बैंक ने एटीएम से युक्त दो अस्थायी शाखाएँ खोलकर श्रद्धालुओं के प्रवास को सहज बनाने में भागीदारी की. इन शाखाओं के माध्यम से बैंक ने सामाजिक रूप से जिम्मेदार कार्पोरेट छवि न केवल प्रस्तुत की बल्कि उसे मजबूती प्रदान की .

एस. के. शुक्ला
क्षे. का., प्रयागराज

संपादकीय

ना कोई निमंत्रण पत्र छपता है, ना कोई बुलावा भेजा जाता है, ना कोई साग्रह अनुरोध किया जाता है. बावजूद इसके जब भी कुंभ का आयोजन अमृत की बूंदों से पावन चार स्थलों पर होता है, तब वहाँ भीड़, भक्ति एवं निस्वार्थ भावना का सैलाब उमड़ पड़ता है. इस बार प्रयागराज का अर्धकुंभ अपने आयोजन की भव्यता, नियोजन, सहभागिता और सुव्यवस्था को लेकर 14 जनवरी, 2019 के प्रथम शाही स्नान के साथ महाकुंभ के रूप में सामने आ गया था. यह एक ऐसा अनूठा अनुभव था, जिसे हर कोई लेना चाहता है, एहसास करना चाहता है. 'यूनियन सृजन' ने इस आयोजन को अपने पृष्ठों में समेटने की कोशिश की है. आयोजन की व्याप्ति, भव्यता, इतनी थी कि कुछ पृष्ठों में उसके सभी पहलुओं के साथ समेटना आसान नहीं था, जिसे हमने यूनियनाइट्स की सहायता और सहयोग से सम्पन्न करने की कोशिश की है.

गंगा-जमुनी तहजीब और सरस्वती का ज्ञान इन तीनों पवित्र बातों के त्रिवेणी संगम पर सम्पन्न इस कुंभ को एक इवेंट मैनेजमेंट के बेहतरीन आयोजन को लेकर भी देखा जा सकता है. कार्यक्रमों का आयोजन तो सर्वत्र होता है, बेहतरीन ढंग से आयोजन करने के प्रयास और अंततः आयोजन के सम्पन्न होने की बात होती है लेकिन किसी भी आयोजन के पीछे पूरी टीम काम करती है और विभिन्न पहलुओं को लेकर उस पर विचार कर तदनुसार पूरे कार्यक्रम को सम्पन्न कराती है. कुंभ के आयोजन में तो पूरा सिस्टम और सरकार लगती है, लेकिन कितने लोग कुंभ में अपनी उपस्थिति देंगे, इस बात की कोई जानकारी उनके पास नहीं होती, होता है तो बस अनुमान. ऐसे में उस कार्यक्रम की सफलता, आयोजकों के साथ-साथ उसमें सहभागिता देने वालों पर निर्भर करती है. कुंभ का सफल आयोजन यही दर्शाता है कि यह आयोजन कितना बड़ा तथा लोकप्रिय है तथा इसकी आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक महत्ता देश विदेशों से लोगों को किस तरह अपनी ओर आकृष्ट करती है. यहाँ साधू, संन्यासियों, धार्मिक अनुष्ठान करने वालों के साथ, आम जनता, विदेशी सैलानियों आदि सभी का एक ही उद्घोष होता है, जो गंगा-जमुना की कल-कल करती लहरों के साथ सबको आमंत्रित करता है और वह होता है.

धुल-धुल जाए हर एक जीवन
और आत्मा को शक्ति मिले
यह अमृत स्नान की बेला है
एक अनुभव अद्भुत करते चलें
चलो कुंभ चलें, चलो कुंभ चलें

दोस्तों, आप भी 'यूनियन सृजन' के साथ इस अनुभव की अविरल धारा में डुबकी लगाएँ और आपको यह अनुभव कैसा लगा, यह हमारे साथ शेयर करें, अपनी प्रतिक्रियाओं के साथ!

शुभ कुंभ, मंगल कुंभ !

आपकी

डॉ. सुलभा कोरे
संपादक

प्रयागराज के साहित्यकार - महादेवी वर्मा एवं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रयागराज शहर से यूं तो देश के तमाम नामचीन साहित्यकारों का नाता रहा है लेकिन इस शहर को खास पहचान महाकवि निराला के साथ महादेवी वर्मा के नाम से मिलती है. मुझे दोनों ही रचनाकारों के प्रयागराज स्थित मकान का दौरा करने एवं दौरा के दिन उनके परिवार के उपस्थित सदस्यों से वार्ता करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. प्रयागराज में कुंभ मेले के आयोजन का अवसर था जिसके लिए प्रशासन द्वारा शहर के रूप रंग के काफी बदलाव किया गया था. प्रयागराज में अशोक नगर स्थित महादेवी वर्मा के मकान में जाकर उनके दत्तक पुत्र की पत्नी एवं उनके बेटे से मिलने का अवसर मुझे यूनियन बैंक के सेवानिवृत स्टाफ सदस्य श्री अनिल रंजन भौमिक(दादा) के माध्यम से मिला साथ ही दौरा के दौरान सुलभा कोरे मैडम का सानिध्य मिला जिनसे साहित्य, रंगमंच और लेखन की बारीकियों को समझने का अवसर प्राप्त हुआ. शाम के समय हम लोग प्रयागराज में अशोक नगर स्थित महादेवी वर्मा के मकान में पहुंचे तो शहर के आपाधापी, भाग दौड़ से दूर प्रकृति के पास आने का अहसास हुआ. मकान में उपस्थित महादेवी वर्मा के दत्तक पुत्र के पुत्र से बहुत ही आत्मीयता से मुलाक़ात एवं वार्ता हुई. थोड़े समय पश्चात उनकी अम्माजी(महादेवी वर्मा के दत्तक पुत्र की पत्नी) से भी मुलाक़ात हुई और सामान्य बातचीत हुई.

महादेवी वर्मा का जन्म वैसे तो उत्तर प्रदेश के फ़र्रुखाबाद में हुआ, लेकिन उनका पूरा जीवन प्रयागराज में बीता. यहीं उनकी पढ़ाई हुई. यहीं उन्होंने अध्यापन का कार्य किया और इसी शहर में दीपशिखा समेत अपनी ज़्यादातर रचनाओं को कागज पर उकेरा. महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को होली के दिन फ़र्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था. आज भी उनके मकान में होली के त्योहार में होलिका दहन कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसमें शहर भर के साहित्य से जुड़े लोग सम्मिलित होते हैं. महादेवी वर्मा के दत्तक पुत्र की पत्नी बताती हैं कि अपने समय में महादेवी वर्मा बड़े धूमधाम से होलिका दहन कार्यक्रम का आयोजन करती थीं जिसमें शहर के सभी साहित्यकार एवं साहित्य प्रेमी अवश्य भाग लेते थे. सामान्यत: इसी आयोजन में काव्य पाठ का भी आयोजन हो जाता था. महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा मिशन स्कूल, इंदौर में हुई. वह बौद्ध दीक्षा लेकर भिक्षुणी बनना चाहती थीं, लेकिन महात्मा गांधी के संपर्क में आने के बाद वह समाज-सेवा में लग गईं. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए करने के पश्चात नारी शिक्षा प्रसार के मंतव्य से प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की व उसकी प्रधानाचार्य के रुप में महादेवी वर्मा कार्यरत रहीं. मासिक पत्रिका चांद का अवैतनिक संपादन उन्होंने किया. 11 सितंबर, 1987 को इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में इनका निधन हो गया. महादेवी वर्मा को स्कूली शिक्षा के साथ-साथ संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही. विवाह के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही. विवाहोपरान्त महादेवी जी ने क्रास्थवेट कॉलेज, इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं. महादेवी जी की प्रतिभा का निखार यहीं से प्रारम्भ होता है. महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया और कविता यात्रा के विकास की शुरुआत भी इसी समय और यहीं से हुई. महादेवी वर्मा सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने तक एक सफल कवियत्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था. महादेवी वर्मा पति-पत्नी संबंध को स्वीकार न कर सकीं. छायावाद के चारों प्रमुख स्तंभों जैसे प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य प्रवृत्ति गीतात्मक है, फिर भी इन चारो कवियों की अपनी निजी विशेषताएं भी हैं. महादेवी वर्मा के काव्य में बौद्ध दर्शन की करुणा व्याप्त है. महादेवी जी की कवितायें मन को एक मार्मिक तरीके से छू जाती. महादेवी जी का समूचा काव्य वेदनामय दुखों के

आंसुओं से भरा हुआ है. यह उनका अपना व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी है तथा सब मिलकर विश्व वेदना बन जाता है. प्रकृति उनके कार्य में प्राय: उद्दीपन, अलंकार, प्रतीक और संकेत के रूप में चित्रित हुई है. इस प्रकार प्रणय, करुणा, वेदना, रहस्य, जागरण जैसे भाव से समृद्धि उनकी कविता को अभिव्यक्त करने वाली काव्य शैली की प्रमुख विशेषताएं हैं- चित्रमयी भाषा, प्रतीकात्मकता, लाक्षणिकता, नूतन अलंकारिता, संगीतात्मकता, नवीन छंदबद्धता. महादेवी जी ने न केवल कविता में स्त्री का भावात्मक इतिहास लिखा अपितु गद्य में विविध विधाओं द्वारा गरीब, दलित, चर्चित नारी, बच्चों, विधवाओं को प्रमुख वर्ण्य विषय बनाकर नवजागरण का प्रयास किया. श्रृंखला की कड़ियां, स्मृति की रेखाएं, चांद का संपादन उनके विशिष्ट हैं. हिंदी साहित्य और भाषा के विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय है. सन 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में 'साहित्यकार संसद' की स्थापना की और पं. इला चंद्र जोशी के सहयोग से 'साहित्यकार' का संपादन सँभाला. यह इस संस्था का मुखपत्र था. स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्य मनोनीत की गईं. 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिए 'पद्म भूषण' की उपाधि और 1969 में 'विक्रम विश्वविद्यालय' ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि से अलंकृत किया. इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिए 'सेकसरिया पुरस्कार', 'स्मृति की रेखाओं' के लिए 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए. उन्हें 'मंगला प्रसाद पुरस्कार' एवं उत्तर प्रदेश सरकार के 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया. 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिए उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ. महादेवी वर्मा ने अपना संपूर्ण जीवन प्रयागराज में ही रहकर साहित्य की साधना की और आधुनिक काव्य जगत में इनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा उनके काव्य में उपस्थित विरह वेदना, भावनात्मक गहनता के लिए अमूल्य मानी जाती है और इन्हीं कारणों से महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है.

दूसरे दिन शाम के वक्त हम लोग प्रयागराज में दारागंज की गलियों से होकर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के घर पहुंचे जहां निराला जी के परपोते श्री विवेक त्रिपाठी जी से मुलाक़ात हुई. श्री विवेक त्रिपाठी हिन्दी अध्यापन का कार्य करते हैं.

'निराला' अपने नाम के अनुरूप विलक्षण व्यक्तित्व से संपन्न थे. स्वाभिमान, आत्म-गौरव एवं विद्रोह उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएं थीं. निराला जी का जन्म सन 1896 ई. में महिषादल राज्य के अन्तर्गत जिला मेदिनीपुर में पंडित राम सहाय त्रिपाठी के यहाँ कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ. निराला ने दलित-शोषित किसान के साथ हमदर्दी का संस्कार अपने अबोधपन से ही अर्जित किया. सुख-सुविधा का अभाव बचपन से ही था. तीन वर्ष की

आयु में माता का और 20 वर्ष का होते-होते पिता का देहान्त हो गया. इनकी चाची और भाभी ने इनका पालन-पोषण किया. निराला जी का जन्म का नाम सूर्य कुमार त्रिपाठी था जिसे बदलकर इन्होंने सूर्यकान्त कर दिया. जब वे मतवाला पत्रिका के सम्पादक बने तो नाम के साथ उपनाम 'निराला' जोड़ दिया गया. स्कूली शिक्षा नौवीं तक ही हुई थी. घर पर स्वाध्याय से ही संस्कृत, अँग्रेजी, उर्दू, हिन्दी, फारसी आदि का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया. मात्र चौदह वर्ष की आयु में इनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ. इनकी दो सन्तानें थीं. 1918 में पत्नी की मृत्यु भी हो गई. इसके पश्चात सारा जीवन कष्टमय, संघर्षपूर्ण एवं आर्थिक दृष्टि से विपन्न था. इस जीवन में मस्ती, साहस, निराशा और पौरुष के अनेक मोड़ देखे जा सकते हैं. परन्तु निराला के जीवन की प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया. 15 अक्टूबर, 1961 ई. को असामयिक बीमारी से इनका देहान्त हो गया.

निराला जी की साहित्यिक प्रतिभा बहुमुखी थी. इन्होंने विभिन्न साहित्य-रूपों में सक्षम रचनाएँ प्रदान की हैं. काव्य, रेखाचित्र, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, जीवन, आलोचना आदि विविध क्षेत्रों में इनकी लेखनी गतिशील रही. कुछ रचनाओं का अन्य भाषाओं से अनुवाद भी इन्होंने किया.

निराला का युग प्रमुखत: प्रगीत युग रहा है और इस युग का काव्योत्कर्ष वस्तुत: प्रगीत काव्य का उत्कर्ष ही कहा जा सकेगा. निराला वस्तुमुखी और चित्रणात्मक विशेषताओं के प्रगीत कवि हैं. उनके प्रगीतों में वैयक्तिक प्रतिक्रियाएँ अत्यन्त विरलता से प्राप्त होती हैं, परन्तु जहाँ कहीं वे मिलती हैं वहाँ वे श्रृंगारमूलक न होकर करुण रस की प्रतिक्रियाओं से समन्वित हैं.

''दु:ख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज जो नहीं कही.

हिन्दी के आधुनिक कवियों के काव्य में इतना रस-वैविध्य नहीं है, जितना निराला के काव्य में है.

निराला जी की काव्य-यात्रा विविध चरणों में

विविध प्रवृत्तियों के साथ विकासोन्मुख हुई. इनकी काव्य-कला का आरम्भ सन 1916 में लिखी 'जूही की कली' कविता से हुआ. यह कविता भाव और शिल्प दोनों दृष्टियों से परम्परा का उच्छेदन है. सर्वप्रथम यह कविता महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित 'सरस्वती पत्रिका' में प्रकाशित होने के लिए भेजी गई परन्तु वहाँ से अस्वीकृत होने पर 'मतवाला' पत्रिका के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित की गई. सन 1923 में इनका 'अनामिका' नामक प्रथम काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ.

इनकी दूसरी काव्य-रचना 'परिमल' है. इसमें विषय-वैविध्य दिखाई देता है. इसमें 'तुम और मैं' जैसी दार्शनिक, आध्यात्मिक, जूही की कली, बादल-राग, जागो फिर एक बार, भिक्षुक, विधवा जैसी प्रगतिशील रचनाएँ हैं.

इस युग में निराला की सबसे बड़ी विशेषता स्वच्छन्दता है. इसी काल में उन्होंने काव्य को छन्दों के बन्धन-को तोड़ने का उपक्रम किया था और मुक्त छन्द में काव्य-रचना की थी. इसी समय जहाँ 'बादल राग' और 'जागो फिर एक बार' जैसी रचनाएँ एक क्रांति का आह्वान करती हैं वहीं अतीत का एक स्वर्णिम स्वप्न उपस्थित करने वाली 'यमुना के प्रति' जैसी कविता भी है.

निराला ने अपने काव्य-विकास के द्वितीय चरण में संतुलन प्राप्त किया. प्रथम चरण पूर्ण स्वछन्दतावादी विद्रोही भूमिका पर अंकित है. सन 1927-28 से निराला जी के काव्य का द्वितीय चरण प्रारम्भ होता है, जो सन 1935-37 तक चलता है. इस अवधि में उन्होंने अधिकांशत: गीतों की सृष्टि की. 'गीतिका' के समस्त गीतों के अतिरिक्त कुछ स्फुट गीत भी हैं जो 'अनामिका' की द्वितीय आवृत्ति में प्रकाशित हुए. प्रारंभिक प्रगीत-रचनाओं की तुलना में ये परवर्ती रचनाएँ अधिक संयत और प्राय: छन्दोबद्ध हैं.

निराला के काव्य-विकास का तृतीय चरण सन 1935 से सन 1942 तक माना जा सकता है. इस अवधि में निराला के कवि-व्यक्तित्व की दो धाराएँ परिलक्षित होती हैं. एक ओर तो वे उदात्तता की भूमि पर महाकाव्योचित शैली का प्रयोग करते हुए दीर्घ आख्यान लिखते हैं और इसी युग में दूसरी ओर एक भिन्न प्रकार की हास्य-व्यंग्य की प्रवृत्ति का भी उन्मेष करते हैं. आध्यात्मिक मूल्यों में आस्था रखने के कारण इनकी 'राम की शक्ति पूजा' और तुलसीदास जैसी रचनाओं में निराशा के साथ ही आशा का स्वर भी मिलता है.

सन 1942 से 1950 तक निराला के काव्य का चतुर्थ चरण है, इसमें प्रयोगों की बहुलता देखते हुए इसे निराला का प्रयोग-चरण भी कहा जा सकता है. 'कुकुरमुत्ता, 'बेला', 'नये पत्ते' इसी समय की रचनाएँ हैं. इन रचनाओं में इनका प्रगीतिवादी स्वर सुनाई देता है. इस चरण की रचनाओं में व्यंग्य, विद्रोह, क्रांति का भाव उभरकर आया है. 'कुकुरमुत्ता' इनकी इसी सामाजिक संचेतना, प्रगतिशील विचारधारा और व्यंग्यात्मक प्रवृत्ति का परिणाम है. 'चर्खा चला', 'कुत्ता भौंकने लगा', 'रानी और कानी', 'खजोहरा', 'गरम पकौड़ी', 'महँगू महँगा रहा' आदि कविताओं में व्यंग्य का स्वर सुनाई देता है. यथार्थ का वर्णन करने के लिए तीखे और पैने व्यंग्य का सहारा लिया गया है.

इसके पश्चात निराला जी का काव्य अपने अंतिम मोड़ पर पहुँचता है और वे आध्यात्मिक भावना से अनुप्राणित होते हैं. 'अर्चना', 'आराधना' और 'गीत गुंज, में यह देखा जा सकता है.

हिन्दी साहित्य-जगत में निराला मुक्त-छंद के जन्मदाता माने जाते हैं. उनका कहना है कि 'मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति' होती है. उन्होंने छन्द-योजना में लय, गति, यति का विशेष ध्यान रखा है. निराला-काव्य की प्रगतिशीलता ही उन्हें बाद के कवियों के साथ जोड़ती है.

अपने जीवन के विषाद, विष, अंधेरे को निराला ने जिस तरह से करुणा और प्रकाश में बदला, वह हिंदी साहित्य में अद्वितीय है. निराला की मृत्यु के बाद धर्मवीर भारती ने निराला पर एक स्मरण-लेख लिखा था. उसमें उन्होंने निराला की तुलना पृथ्वी पर गंगा उतार कर लाने वाले भगीरथ से की थी. निराला खुद को और खुद के साथ अपने समय को अंधकार से घिरा पाते हैं- 'है अमानिशा'. उनकी कविता लगातार इस अंधकार से लड़ती है. निराला के बारे में भी यह बात भुला दी जाती है कि उन्होंने कविता के अलावा काफी कुछ लिखा है- कहानी, उपन्यास, आत्मकथात्मक गद्य, निबंध आदि. निराला ने गद्य को जीवन संग्राम की भाषा कहा था और दरअसल अपने गद्य से उन्होंने यही काम लिया. 'अलका', 'चतुरी चमार' या 'बिल्लेसुर बकरिहा' जैसी रचनाएं निराला के सरोकारों के व्यापक क्षितिज की गवाही देती हैं. निराला की विचारधारा को ठीक से समझने के लिए उनकी कविताओं के साथ उनके गद्य को भी पढ़ा जाना चाहिए. मसलन, निराला के लेखों, संपादकीय टिप्पणियों और उपन्यासों को पढ़े बगैर जाति-व्यवस्था, किसान आंदोलन, स्त्रियों की दशा आदि पर उनके विचारों और पक्षधरता को ठीक से नहीं समझा जा सकता. यह निराला के ही वश की बात थी कि उन्होंने टैगोर, गांधी, नेहरू- तीनों से अलग-अलग मसलों पर असहमति जताई. निराला की एक कविता की पंक्ति है- ***'मेरे ही अविकसित राग से विकसित होगा, बंधु दिगंत अभी न होगा मेरा अंत'.*** उनकी कविताएं अंत को अस्वीकार करने वाली कविताएं हैं. निश्चित तौर पर हिंदी साहित्य के खाते में निराला का होना हिंदी का सौभाग्य है.

विक्रांत कुमार
क्षे. का., वाराणसी

वक़्त

समय से बलवान कोई नहीं
ये बात उसने क्या खूब कही
वक़्त की नज़ाकत कहिए या उसकी ख़ूबसूरती
ये वक़्त ही है जो कभी किसी के लिए नहीं है रूकती
बदलता कभी किसी का वक़्त है
तो कभी वक़्त के साथ लोग बदल जाते हैं
रोज़ की जिंदगी में इस कदर मगरूर हो जाते हैं
कि खूबसूरत पल हाथों से फिसल जाते हैं
समय ज़िन्दगी की सबसे बड़ी शिक्षिका भी है
समय ही सबसे कठोर दंड भी
जो हो साथ वक़्त तो कठिनाईयां छू हो जाती हैं
अनुकूल वक़्त ही अपने इशारों पे नचाती है

हिम्मत और संयम का इम्तेहान लेती है वक़्त
किसी को रुला तो किसी को हँसा जाती है वक़्त
मिला देती मिट्टी में अहंकार जिसके हो सख्त
हर शूरवीर से बलवान है कभी ना रुकने वाली ये
वक़्त..

- प्रीति कुमारी
दुर्गापुर सिटी शाखा

नसीहत

खुद से मिला सको नज़रें जब आईने में
इंसान समझना खुद को तब सही माईने में

लोग दाद देंगे, बेवजह वाह वाह करेंगे
मगर सुकून तो है, खुद की पीठ थपथपाने में

कम बोलते हैं और जो वक्त पे बोलते हैं
उनकी तूती बोलेगी वक्त के नक्कारखाने में

तजुर्बा पल भर में उन्हें समझा देगा
एक उम्र लग रही है जिन्हें समझाने में

आती हुई रात को देख, तू ग़म न कर
आएगी ज़रूर, थोड़ी देर है अभी सुबह आने में

भीड़ की गुमराही से बच, अकेला चल
इस सफर में भलाई है, खामोशी से गुज़र जाने में

सर पे पत्थर ढोने वालों के, हाथों में आज पत्थर है
गरीबी बेपर्दा हो गयी, सफेदपोशों के भड़काने में

ज़मीर उनका ही बेदाग दिखाई देता है **"शफ़ीक़"**
सुबह से ही लग जाते हैं जो हाथ के छाले कमाने में

- शफ़ीक़ ख़ान,
क्षे. का., रायपुर

नागा साधू

भोले के हैं भक्त यहाँ, स्वभाव से हैं सख्त यहाँ,
हैं ये औघड़ संन्यासी, आत्मा जिनकी शिव की
प्यारी,
डम-डम डमरू बजते, जिनके हाथों में,
हैं त्रिशूल चमकते जिनके माथों में,
इरादों से ये कट्टर हैं, सनातन धर्म की है
आधारशिला,
यह हिंदू धर्म के तीन पत्थर हैं ,
तेज हिमालय का बरसता जिनकी आँखों में,
रक्षा धर्म की गंगा बहती जिनकी बातों में,
डराता है चेहरा इनका, भूत प्रेत आत्माओं को,
छोड़ दिये इन्होंने, घर-बार और कई सम्मानों को,
न वस्त्र हैं, न त्रस्त हैं, ये सन्यासी अपने में मस्त हैं ,
आते हैं कुंभ में यहाँ, हम नादानों को बतलाने को,
नागा यानि त्याग और बलिदान,
दिखाये हम भी ज़माने को, बन जाएं हम भी नागा,
त्यागकर अपने अहंकार और दिखावे को .

- आलोक चौहान,
यू एल पी, इंदौर

कुंभ की सामयिकता-प्रासंगिकता

हिन्दू मान्यताओं के अनुसार माना जाता है कि समुद्र मंथन से अमृत कलश बाहर निकला था और इंद्र का बेटा जयन्त इस कुंभ को लेकर भागा था ताकि ये राक्षसों के हाथ न लगे. 12 दिन तक राक्षस जयन्त का पीछा करते रहे और इस आपाधापी में उस अमृत कलश से चार बूंदें धरती पर गिरीं-प्रयागराज, नासिक, उज्जैन और हरिद्वार और इन्हीं जगहों पर विशाल कुंभ का आयोजन होने लगा. कुंभ महोत्सव पौष मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होता है. कुंभ महोत्सव प्रत्येक चौथे वर्ष नासिक, इलाहाबाद, उज्जैन, और हरिद्वार में बारी-बारी से मनाया जाता है. इनमें प्रयाग कुंभ सबसे विशेष महत्व रखता है.

प्रचीन काल से ही कुंभ विश्व की सबसे प्राचीन वह सांस्कृतिक विरासत है, जहां ज्ञान, तर्क, विज्ञान, धर्म व अध्यात्म एवं समाज के विषयों पर मंथन के लिए ऋषियों-मुनियों, साधु-संन्यासियों, समाज को नेतृत्व प्रदान करने वाले वर्ग, बुद्धिजीवियों और ज्ञान-पिपासुओं का संगम होता रहा है और इस संगम में चिंतन और मंथन से मानव के लिए उपयोगी विचार, नीति, सिद्धांत व मार्गदर्शी व्याख्याएं निकल कर आती रही हैं.

हालांकि, इधर के कुछ दशकों में कुंभ को केवल एक मेले के रूप में देखने और दिखाने की प्रवृत्ति के कारण इसके मूल स्वरूप व उद्देश्यों को दुनिया के सामने पहुंचाने के प्रयास नहीं किए गए. इसे केवल धर्म के खांचे में बांधकर इसकी प्रासंगिकता को हानि पहुंचाने की कोशिश की गयी.

वर्तमान में, कुंभ को लोगों के लिए विचार और चिंतन के स्वरूप में लाकर देश और समाज में सुधार के सूत्रों के प्रतिपादन का माध्यम बनाया जा रहा है. यही वजह है कि कुंभ प्रारंभ होने से पूर्व सरकार की ओर से विभिन्न आयामों पर विचार विमर्श का आयोजन होता है. सरकार ने कुंभ के नये आयाम निधारित किये हैं-विचार कुंभ, युवा कुंभ, समरसता कुंभ व संस्कृति कुंभ. विचार कुंभ में सद्भाव, पर्यावरण, महिला शक्ति, सर्व समावेश, नेत्र कुंभ और युवा कुंभ में अपने-अपने क्षेत्र के विद्वानों, आचार्यों, पर्यावरणविदों, वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं, चिकित्सकों, अभियंताओं, विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ विचार मंथन किए जाते हैं.

'अखाड़ा' कुंभ का एक अभिन्न अंग है. यह शब्द सुनते ही मानस पटल पर दृश्य उतरता है, वह मल्लयुद्ध का है. किन्तु यहाँ भाव शब्द की अन्वति और वास्तविक अर्थ से संबोधित है. 'अखाड़ा' शब्द 'अखण्ड' शब्द का अपभ्रंश है जिसका अर्थ न विभाजित होने वाला है. गुरु शंकराचार्य ने सनातन धर्म की रक्षा हेतु साधुओं के संघों को मिलाने के प्रयास हेतु इसका उपयोग किया था. उसी प्रयास के फलस्वरूप सनातन धर्म की रक्षा एवं मजबूती बनाये रखने एवं विभिन्न परम्पराओं व विश्वासों का अभ्यास करने वालों को एकजुट करने तथा धार्मिक परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने के लिए विभिन्न अखाड़ों की स्थापना हुई.

अखाड़ा सामाजिक व्यवस्था, एकता और संस्कृति तथा नैतिकता का प्रतीक है. समाज में आध्यात्मिक महत्व मूल्यों की स्थापना करना ही अखाड़ों का मुख्य उद्देश्य है. अखाड़ा, मठों की सबसे बड़ी जिम्मेदारी सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना करना है. भारतीय संस्कृति एवं एकता इन्हीं अखाड़ों के बल पर जीवित है. अलग-अलग संगठनों में विभक्त होते हुए भी अखाड़े एकता के प्रतीक हैं.

कुंभ का वास्तविक स्वरूप यही है और वर्तमान समय में विश्व को इसकी आवश्यकता है. देश-दुनिया में तमाम ऐसी घटनाएं लगातार हो रही हैं, जो मानव जाति के लिए खतरे की आशंका उत्पन्न कर रही हैं. भारत भी इससे अछूता नहीं है. आज के विज्ञान ने मनुष्य को चेतनायुक्त न मानकर भौतिक व रासायनिक कारकों से ही उत्पन्न शरीर समझकर उसकी व्याख्या की है. इन्हीं व्याख्याओं के कारण विश्व को अनेक समस्याओं की ओर धकेल दिया गया है. जबकि प्राचीन भारतीय विज्ञान परंपरा मनुष्य की चेतना को आधार मानकर ही उसके सूक्ष्म व स्थूल तत्वों के आधार पर वैज्ञानिक चिंतन, आविष्कार व व्याख्याएं प्रस्तुत करता था, जिससे प्रकृति के साथ और प्रकृति के

अनुकूल व्यवस्थाएं बनती थीं. किंतु आधुनिक तकनीक व विज्ञान के दौर में प्रकृति से मनुष्य की दूरी बहुत बढ़ गयी है.

इस दौर में मनुष्य आभासी व संदिग्ध माध्यमों में जीने लगा है. आधुनिक तकनीक ने सूचनाओं का प्रवाह इतना तीव्र व अप्राकृतिक कर दिया है कि इनके जाल में फंसकर मनुष्य का मोहरा बन जाना आसान है. खासकर जब इस सशक्त माध्यम का दुरुपयोग कर गुमराह करने वालों की संख्या इसके सदुपयोग करने वालों की संख्या से कई गुना अधिक हो. असहिष्णुता, धर्मांधता, आतंकवाद, हथियारों की होड़, परमाणु बम व अन्य खतरनाक हथियारों को इकट्ठा करने की सनक, साम्राज्यवादी मानसिकता, पर्यावरण पर मानवजनित खतरा व प्रदूषण जैसी राक्षसी प्रवृत्तियां दुनियाभर में बढ़ी हैं. इन समस्याओं के अनेक कारणों में सबसे बड़ा कारण इंटरनेट व कृत्रिम बुद्धिमता की लत की वजह से आभासी दुनिया में जीने की वजह से प्रकृति व वास्तविकता से दूर होना भी है.

सदियों से चले आ रहे पौराणिक कुंभ मेले का महत्व आज भी उतना ही है जितना कि प्राचीन समय में था. हाँ, यह बात अवश्य है कि बदलते समय तथा सुविधाओं के इस दौर में कुंभ का स्वरुप बहुत कुछ बदल चुका है जो कि स्वाभाविक और जरुरी भी है. लेकिन कुंभ की महिमा ऐसी है कि पूर्ण कुंभ तथा अर्ध कुंभ के आयोजन के प्रति लोगों की आस्था एवं श्रद्धा भाव कम नहीं हुआ है. कुंभ के लिए आज भी करोड़ों की संख्या में लोगों का एकत्रित होना इसका सबसे बड़ा प्रमाण है. देश के हर कोने से आने वाले श्रद्धालु किसी निमन्त्रण या बुलावे की प्रतीक्षा नहीं करते. माघ महीने के आगमन से पहले ही इनके मन-प्राण प्रफुल्लित एवं जागृत हो उठते हैं.अलग-अलग रंगरूप, वेश भूषा, भाषा की भिन्नता होने पर भी भारत की अनेकता, एकता में बदल जाती है. यह हमें अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को बचाए रखने और आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करने में सहायता करेगा. युवाओं को मेले का महत्व और उनकी प्रासंगिकता के विषय में जागरूक करेगा.

मीडिया अथवा इंटरनेट के इस युग में हमें यह समझना होगा कि मेले का अर्थ मेल-जोल और मेल-मिलाप से है. कहीं ऐसा न हो कि हम अपने घर के चार दिवारी में मोबाइल के साथ रात दिन बिताते हुए अपनी परंपरा, रीति रिवाज़ों को भुला दें. युवा वर्ग को कुंभ के मेलों का हिस्सा बनकर भारतीय जन मानस का अभिन्न अंग बनना होगा. यह भी सत्य है कि संस्कृति, धर्म और सभ्यता के बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं पशु है. युवा वर्ग की संवेदना, अनुभूति एवं जागरूकता को सही दिशा देने में कुंभ पर्व की उपयोगिता पहले भी थी और हमेशा रहेगी.

रुचि यादव

सरल, जयपुर

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कुंभ

जैसा कि विदित है कुंभ का हिन्दू धर्म में एक विशिष्ट महत्व है और प्राचीनकाल से ही कुंभ स्नान की परंपरा चली आ रही है. इस उत्सव के दौरान लोग पवित्र नदी में स्नान करते हैं और अपने कष्टों, क्लेशों से मुक्ति पाते हैं. इसका आयोजन मुख्य प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में होता है. आयोजन प्रत्येक तीन वर्ष पर होता है. और प्रत्येक जगह पर इसका आयोजन 12 वर्षो के उपरांत होता है.

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कुंभ के आयोजन का एक विशिष्ट महत्व है क्योंकि एक तरफ जहाँ लगभग पूरा विश्व आतंकवाद, अलगाववाद एवं पृथकतावाद के चंगुल में जकड़ा हुआ है और बंटा-बंटा सा नजर आ रहा है, उसी तरफ एक देश में करोड़ों लोग एक साथ मिलकर आस्था की डुबकी लगा रहे हैं जो इस बात का परिचायक है कि मनुष्यों में अभी भी अपने आराध्य, ईश्वर के प्रति प्रेम भाव व्याप्त है और मनुष्यों के बीच मतभेद के बावजूद एक दूसरे के लिए प्रेम खत्म नहीं हुआ है.

जब लोग गाँव-गाँव से टोलियों में आकर संगठित होकर एक साथ कुंभ की यात्रा प्रारम्भ करते हैं तो भारत की "वसुधैव कुटुंबकम की छवि पूरे विश्व पटल पर प्रेरणा की स्त्रोत बनती है. लाखों हिंदुओं के लिया गंगा सिर्फ एक जीविका जीवन समर्थित नदी नहीं है यह देवी अवतार है नदी में स्नान करने के लिए, अपने पवित्र जल पीने के लिए, ये सभी धर्माभिमानी हिंदुओं की महान इच्छाएं है एक प्राचीन संस्कृत कविता के अनुसार, जो लोग कुंभ मेले में भाग लेते हैं और स्नान करते हैं अस्थायी बंधन से मुक्त हो जाते हैं और आध्यात्मिक बंधन से मुक्त हो जाते हैं और आध्यात्मिक मोक्ष प्राप्त करते हैं.

भारत के राष्ट्रीय सम्मेलन की विशेषता भारतीय कितने धार्मिक हैं इसका सर्वोतम प्रमाण है कुंभ मेला. भारतीयों के अलावा संसार की अन्य कोई जाति क्या इतने विशाल अनुष्ठान की कल्पना कर सकती है?

वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य में कुंभ सिर्फ एक धर्म विशेष का न रहकर वरन सर्व-संभव का प्रतीक बन गयी है. क्या हिन्दू क्या मुस्लिम, क्या सिक्ख क्या ईसाई हर भारतीय इस महापर्व में अपना अपना सहयोग देता है और पूरे विश्व को यह संदेश देता है कि "हम एक हैं" और अनेकानेक विषयों के बावजूद हमारे बीच मतभेद हो सकता है पर मनभेद नहीं है. भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति की अमिट छाप हर भारतीय के मन में है वह इस कुंभ के आयोजन से पूरे विश्व को जगजाहिर हो रही है.

इस समय जब भारत की 130 अरब जनता को विश्व में सिर्फ व्यापार हेतु भिन्न-भिन्न संदेशों के माध्यम से साधने का प्रयास कर रहे हैं और गंगा-जामुनी तहजीब जो सदियों से चली आ रही है उसे विखंडित करने का प्रयास कर रहे हैं, कुंभ "एकता के प्रतीक" के रूप में भारत की "सर्वधर्म समभाव" एवं भारतीय मूल्यों की परिवाहक के रूप में पूरे विश्व को यह संदेश दे रही है कि हम एक हैं, हम एक हैं"

अजीत कुमार

क्षे. का., सिलीगुड़ी

सनातन संस्कृति के उद्देश्य एवं कुंभ

यह लेख उस युवती की लेखनी का स्वरूप है, जो कि आधुनिकता एवं सशक्तिकरण में विश्वास रखती है, किन्तु कुंभ-नगरी प्रयागराज में प्रवेश करते ही यह आधुनिकता गंगा माँ की रेती में समाहित हो जाती है और **'अभिमान'** जिसे **'सशक्तिकरण'** का रूप मान सकते हैं, वहाँ की अलौकिक आध्यात्मिक हवा में खो जाती है और रह जाती है बस शांति, विश्वास, तथा 'अहम ब्रम्हास्मि एवं तत्वमसि' का भाव. **'ब्रह्म'** अर्थात प्राण की पूर्णता ही कुंभ का **'प्राण'** है.

यदि हम कुंभ की बात करें और सनातन धर्म को आत्मसात ना किया जाए तो कुंभ कदाचित अपूर्ण ही रह जाएगा. **'कुंभ'** अर्थात 'मनुष्य नैसर्गिक प्रकृति के बीच श्रद्धा व सत्य बोध का दिव्य वार्तालाप".

'सत्य बोध' का साक्षात उदाहरण है साधु एवं साध्वियों का वह समूह जो अपने ही पिंड का दान करके नव जीवन में प्रवेश करते हैं. वह जीवन जो सनातन धर्म के उद्देश्यों का मूलभूत स्वरूप है, सनातन धर्म का मूलभूत उद्देश्य मानव जीवन का **'मनुष्यत्व'** ही है. सनातन संस्कृति कोई कृति या काल्पनिक पदार्थ नहीं किंतु अखंड और आदत सत्य है तथा मानव समाज का कल्याण ही उसका अवलंबित है. **'मनुष्यत्व'** अर्थात सहिष्णुता, त्याग, शांति, श्रद्धा, विश्वास, योग एवं भक्ति के भावों का संग्रह! सनातन धर्म के उद्देश्यों को मनुष्य के विविध भावों से अभिव्यक्त किया जा सकता है. यह भाव किसी व्यक्ति विशेष को प्रभावित नहीं करता, यह भाव सर्वस्व के विकास का मूल है.

इन विविध भावों में मुख्य है 'सहिष्णुता'. सहिष्णुता अर्थात् विविध विचारधाराओं के व्यक्तियों, विचारों एवं परिस्थितियों के मध्य भक्ति रूपी मानसिक शांति और श्रद्धा के भाव के साथ सामंजस्य बैठाते हुए, त्रिवेणी के घाट पर पहुंचकर अपने विभिन्न वर्ण, जाति, धर्म और संप्रदायों को विस्मरित करके प्रकृति-वंदन के लिये एक साथ उन्मुख होना. इस जनसमुदाय को कुंभ के अवसर पर एकत्र कर एक दूसरे से जोड़ने के कार्य में हमारे मनीषियों का अकल्पनीय योगदान है. कुंभ मेले के मूल प्रवर्तक आदि शंकराचार्य हुए, जिन्होंने धर्म का निरंतर प्रचार और धार्मिक लोगों एवं संगठनों के संगठित बने रहने के औचित्य से प्रत्येक बारह वर्ष में एक जगह एकत्र होने के लिए कुंभ की विचारधारा का सूत्रपात किया. आदि शंकराचार्य जी की दूरदर्शी विचारधारा का परिणाम भारत के चार कुंभ क्षेत्र और मेले हैं. उत्तर भारत को **'हरिद्वार'**, पूर्व भारत को 'प्रयागराज', पश्चिम भारत को 'उज्जयिनी' व दक्षिण भारत को **'नासिक'** से जोड़कर एक ऐसे कुंभ की अविकल्पना की गई, जिसमें अपार जन-राशि **'जल'** की तरह एकत्र होती है और फिर पुन: बिखर जाने पर भी अपनी मूल चेतना से खंडित नहीं होती. यह चेतना ही सनातन धर्म के उद्देश्य पूर्ण करती है.

प्रकृति में विशिष्ट ग्रहों के योग से ऐसा वातावरण बन जाता है जिसका प्रभाव शिक्षा, मानसिक संस्कारों पर आसानी से पड़ता है. इसलिए संत, महात्मा, हठयोगी और गृहस्थ कुंभ पर्व के समय उक्त स्थानों पर जाकर स्नान-ध्यान, जप-तप, पूजा-पाठ और योग, यज्ञ, दान आदि शुभ कर्म करते हैं. 'योग' के रूप में भक्ति के भाव को चरितार्थ

करते हुए 'हठयोगी' कुंभ का मुख्य आकर्षण होते हैं, जो कि विविध प्रकार की साधनाओं में वर्षों से संलिप्त हैं. आध्यात्मिक संस्कारों की प्रबलता और जीवन की सफलता के लिए चुना हुआ यह योग रूपी वैज्ञानिक मार्ग हमारे पूर्वजों व सनातन संस्कृति की पवित्र देन है.

सनातन संस्कृति के उद्देश्यों में 'त्याग व शांति' के साक्षात स्वरूप को भी कुंभ में प्रतिबिम्बित होते देखा जा सकता है. **'त्याग'** का साक्षात स्वरूप हैं, वे नागा साधु एवं साध्वियाँ जो वस्त्रों एवं समस्त सांसारिक जीवन की लिप्साओं को त्याग कर हृदयिक शांति को प्राप्त करने को अग्रसर हैं. कुंभ में विविध पंथों के गुरु व आचार्य **द्वारा** भक्तों को जीवन के शाश्वत मूल्यों की जानकारी देने वाले विविध धर्मस्थल प्रदीप्त हो उठते हैं. जहां किसी भी जाति का गुरु है, उनके शिष्य किसी भी जाति या वर्ण के मिलेंगे. शिवभक्त हों या वैष्णव, उदासीन हों या निर्वाणी, रविदास पंथी हों या कबीर पंथी, उनके पीठों पर सबके मस्तक नत हो जाते हैं.

कुंभ वास्तव में सर्वधर्म समभाव का अमृत पर्व है. इस पर्व पर कुल, गोत्र, जाति विलीन हो जाते हैं और केवल गुणों की चर्चा सर्वत्र होती है. हम एक हैं, एक ही सनातन धर्म की सत्ता है, यह बोध वहां जाकर और प्रखर हो जाता है. एक साथ स्नान, एक साथ भोजन, एक साथ घास की शैया पर सोना, हृदय में आनंद भर देता है.

सृष्टि के आरंभ से अब तक सम्पूर्ण मानवता के समस्त उपलब्ध ज्ञान एवं अनुभव में आज तक भारत के अलावा अन्यत्र कहीं भी कुंभ जैसा आयोजन नहीं होता है, जहां सर्वधर्म-समभाव, प्रकृति-संरक्षण, मानवता-रक्षा, जैव संसाधन व संवर्धन तथा पर्यावरण संवेदनशीलता के साथ सांप्रदायिकता, लालच, अपराध और हिंसा मुक्त विश्व के निर्माण, भाईचारे एवं सभी की उन्नति का संदेश दिया जाता है. इस तरह कुंभ सनातन संस्कृति की सत्ता को प्रबल करते हुए, सनातन संस्कृति के उद्देश्यों को पूर्ण करने का मूलभूत रूप बन जाता है. इसी भाव की महत्ता को विविध भावों से व्यक्त किया जा सकता है:

'अश्वमेध सहस्त्राणी वाजपेय शतानी च.

लक्षम प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ्स्नाने हि तत्फलम..'

अर्थात कुंभ में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं को वही फल प्राप्त होता है जो एक हज़ार अश्वमेध यज्ञ, सौ वाजपेय यज्ञ तथा एक लाख बार पृथ्वी-प्रदक्षिणा करने वाले व्यक्ति को प्राप्त होता है.

कुंभ मेला ऐसा मेला है, जिसका संबंध किसी तांत्रिक मान्यता से नहीं है. यह मेला विराट ब्रह्मांड में सूर्य, पृथ्वी, वृहस्पति की स्थिति से संबंधित होकर ब्रह्मांड की एक घटना बन जाता है. आधुनिक विज्ञान भी इस भारत के प्राचीन विषयों **द्वारा** स्थापित इस सिद्धांत की पुष्टि करता है कि पृथ्वी पर ब्रह्मांड में अवस्थित सूर्य का प्रभाव सर्वाधिक होता है. सूर्य के बाद चंद्रमा और उसके बाद वृहस्पति एवं शुक्र का प्रभाव होता है. कुंभ मेला वृहस्पति और सूर्य की विभिन्न राशियों में अवस्थित पर आधारित होने के कारण ब्रह्मांडीय है.

सनातन धर्म में मनुष्य व नैसर्गिक प्रकृति के बीच श्रद्धा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है. प्रकृति अर्थात पर्वत, नदी, सूर्य, चंद्रमा, अग्नि आदि का वंदन! कुंभ द्वारा **'नदी'** एवं **'जल'** की प्रधानता को मुखरित किया जाता है. जल सृष्टि का आदिम आधार है. जल से ही सृष्टि के सभी चराचर पदार्थ, वनस्पतियाँ व जीव जन्तु उत्पन्न एवं विकसित होते हैं तथा इसी जल के कारण संसार के सभी तीर्थ महिमा मंडित होते रहे हैं.

प्रकृति वंदन के साथ ही सांस्कृतिक एकता का यह महापर्व, मानव की उस अमर कामना का परिचायक है, जहां कि मृत्यु लोक में होते हुए भी हम अमृत्व की साधना करते हैं. अमृत मंथन में सूर्य, चंद्रमा और वृहस्पति ने अमृत कलश की रक्षा में सहयोग किया था, यह सहयोग हमें राष्ट्रीय साधनों के अनुसंधान और उनकी परोपकारी उपलब्धियों की प्रेरणा देता है. प्रकृति ने हमें अपना वरदान दिया है, उस वरदान का नाम 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' हो सके तभी उसकी सार्थकता है. कुंभ हमें प्राचीन और नवीन के संबंध में भी प्रेरणा देता है. हमारा राष्ट्र समूहवादी एवं साहचर्यवादी सनातनी संस्कृति का राष्ट्र है. साहचर्य ही इसका जीवन-सूत्र है-सह नाववतु, सहनौ भुनक्तु, सहवीर्यम करवावहे! कुंभ मेला सामाजिक सनातनी संस्कृति की अभिव्यक्ति का अभूतपूर्व उदाहरण है. जिस तीर्थ में यह मेला आयोजित होता है, उसी ओर सभी रास्तों का रुख हो जाता है.

ऋग्वेद में प्रयाग को सित श्वेत धारा **'गंगा'** एवं असित श्याम धारा **'यमुना'** का संधि स्थल कहा जाता है यहां जो भी स्नान करता है वह आज आवागमन के बंधन से मुक्त हो जाता है. सनातन संस्कृति, पर्वत, वन और नदी की संस्कृति है अर्थात प्रकृति का स्वरूप है. जिस प्रकार गंगा-यमुना के संगम पर सरस्वती अंतः सलिला होकर के मिलती हैं, उसी प्रकार विविध विचार धारा के व्यक्ति इन नदियों के घाटों पे मिलकर एक ही भाव के सूत्र में बंध जाते हैं. पतित पावनी गंगा की गोद में बैठकर कल-कल करती उर्मियों की उँगलियों का स्पर्श पाते ही सभी जन गंगापुत्र बन जाते हैं. एक धारा में स्नान करके सभी कदाचित एक ही कुल के सदस्य बन जाते हैं. यही हमारी सनातन संस्कृति का 'मनुष्यत्व' है.

दिव्या दीक्षित

क्षे. का., प्रयागराज

कुंभ-धार्मिकता और मानवता

कुंभ महोत्सव विश्व में सबसे बड़ा धर्मिक आयोजन, जहाँ स्वागत होता है हर समुदाय का, हर धर्म का, हर रीति रिवाज़ और हर पूजा पद्धति का.........

कुंभ मेला, नदी में स्नान कर जल अर्पण तक ही सीमित न होकर यह अपने भौतिक शरीर को स्वच्छ कर अपनी आंतरिक उर्जा को स्वयं व दूसरों की सेवा में लगाने की भावना है. मानवता ही वास्तविक असली धर्म होता है, इसका जीवंत उदाहरण है कुंभ मेला. कुंभ के धार्मिक और मानवतावादी स्वरूप को समझने के लिये यह जानना अनिवार्य है कि सनातन धर्म क्या है और क्यों कुंभ धार्मिक अनुष्ठानों से आगे बढ़कर मानवता का पाठ पढ़ाता है. बड़ी मछली छोटी मछली का भोग करती है, यही सांसारिक नियम है. परंतु जब बड़ी मछली, छोटी मछली की सुरक्षा की सोचें तो यह विचार धर्म संगत होता है. विष्णु पुराण में सर्वप्रथम भगवान विष्णु के मत्स्य रूप का वर्णन केवल संयोग मात्र नहीं है. धर्म का मूल भाव ही बलवान द्वारा कमजोरों की रक्षा करना है. कुंभ भी इसी धारणा से आयोजित होता आया है. छठी शताब्दी में राजा हर्षवर्धन द्वारा कुंभ स्नान करके अपना सर्वस्व गरीबों में दान देने का उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक में किया है. यह दर्शाता है कि यदि कोई मानुष धर्म संगत है तो वह सदा दान और मानव सेवा में लीन रहेगा.

कुंभ मेला और ग्रहों का आपस में गहरा संबंध है. दरअसल, कुंभ मेला तभी आयोजित होता है जब ग्रहों की स्थिति वैसी ही निर्मित होती है जैसी अमृत छलकने के दौरान हुई थी. मान्यता है कि अमृत की बूँद गिरने के दौरान अमृत और अमृत कलश की रक्षा करने में सूर्य, चंद्र, गुरु और शनि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. चंद्र ने कलश की प्रसवण होने से, गुरु ने अपहरण होने और शनि ने देवेंद्र के भय से रक्षा की. सूर्य ने अमृत कलश को फूटने से बचाया. इसीलिए पुराणिकों और ज्योतिषियों के अनुसार जिस वर्ष जिस राशि में सूर्य, चंद्र और वृहस्पति और शनि का संयोग होता है उसी वर्ष उसी राशि के योग में जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी वहाँ-वहाँ कुंभ पर्व का आयोजन होता है.

कुंभ का आयोजन दैवीय आयोजन कहा जाता है, क्योंकि यह उन निश्चित काल अवधियों में आयोजित होता है जब खगोलीय घटनाओं के कारण कुछ स्थानों पर सकारात्मक उर्जा केन्द्रित होती है. सनातन धर्म में सूर्य को आत्मा, चंद्रमा को मन और वृहस्पति को धर्म का देवता माना गया है. जब धर्म का आचरण होता है तो मन की शुद्धि होती है और मन की शुद्धि से आत्म दर्शन का मार्ग खुलता है. कुंभ मेले से संबंधित ज्ञान और कौशल संत-शिष्यों के माध्यम से गुरु-शिष्य परंपरा (शिक्षक-छात्र संबंध) के माध्यम से प्रसारित हुआ था. गुरुओं ने अपने शिष्यों को पारंपरिक अनुष्ठानों और मंत्रों के बारे में पढ़ाया व आगे बढ़ाया. कुंभ मेला भारतीय सनातन धर्म में झाँकने का झरोखा और इसके मर्म को जानने का एक अद्भुत मौका है. जिनको भी विश्व धर्म को जानने की इच्छा है वे कुंभ से अपनी यात्रा शुभारंभ कर सकते हैं.

सही अर्थों में कुंभ और धर्म एक दूसरे के पर्यायवाची व पूरक हैं. यह तथ्य अत्यंत प्रेरणादायक है कि कुंभ मूलतः साधु संतों द्वारा आयोजित किया जाता रहा है. अनेकों संत यहाँ अपने अनुयायियों

को प्रवचन देते हैं. सबकी पूजा पद्धति भिन्न, सबका मार्ग अलग, परंतु सबका मूल लक्ष्य एक, और वह है भारतीय सनातन धर्म की सुरक्षा और अजर, अमर धर्म की बारीकियों को आम बोल-चाल की भाषा में जन साधारण तक पहुंचाना.

इतनी विविधता होते हुए भी एक सूक्ष्म विचार पूरे कुंभ को एक माला के मोतियों की तरह साथ रखता है और वह है धर्म, कर्म और नर रूपी नारायण की निस्वार्थ सेवा का विचार! इस विचार की अद्भुत सजीव उर्जा का प्रवाह ही तो है जो न केवल भक्तों को संगम स्नान के लिए अपनी ओर खींचता है बल्कि संसार त्याग चुके उन संतों को गृहस्थ जीवन जी रहे भक्तों के बीच आने पर विवश कर देता है. अन्यथा संतों से ज्ञान प्राप्ति हेतु भक्तों को ही उनके पास जाना पड़ता है. कुंभ इस बिंदु से भी भिन्न है. यह केवल एक मात्र ऐसा अवसर है जब स्वयं तक का पिंडदान कर चुके पुण्य आत्मा अपना बैरागी जीवन छोड़कर जन मानस के बीच स्वयं ही चल कर आते हैं. कुंभ अपने आयोजन मात्र से धार्मिक और मानव सेवा का वातावरण पैदा करता है जो सहस्त्र योगियों के हृदय स्पंदन से सतत पवित्र होता रहता है. कुंभ जन मानस के सामूहिक रूप से धार्मिक चेतना की जागृति का प्रतीक भी है. यह मानवता का अविरल प्रवाह व मानव चेतना के विस्तार का एक उत्सव है. कुंभ वस्तुत: एक मार्ग है जीव एवं जगत के कल्याण का, नर नारायण की सेवा का! आज विश्व में इससे सजीव उदाहरण मिलना मुमकिन नहीं है.

कुंभ मेला पूरे पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम भी है. प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित होने वाला यह उत्सव भारत में पूजा से संबंधित अनुष्ठानों के एक समन्वित समूह का प्रतिनिधित्व करता है. यह ऐसा सामाजिक अनुष्ठान व उल्लासमय समारोह है जो विभिन्न समुदायों को अपने इतिहास और स्मृति तथा धार्मिक विचारों की धारणा से जोड़े रखता है. यह तत्व मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार उपकरणों के साथ संगत है, क्योंकि इसमें समाज के सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के समान उत्साह से भाग लेते हैं. एक धार्मिक उत्सव के रूप में कुंभ मेला यह दर्शाता है कि समकालीन दुनिया के लिए सहिष्णुता आज भी महत्वपूर्ण है. इस प्रकार यह सांस्कृतिक विविधता और मानव रचनात्मकता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है. इसका महत्व अद्वितीय इसलिए है कि समाज के विभिन्न समुदायों द्वारा इसका अनुसरण किया जाता है. इसके अतिरिक्त इसका महत्व सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में भी है जो ज्ञान, क्रिया विधि और कौशल समृद्धि को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपने का कार्य भी करता है.

सनातन धर्म में नदियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है. भारत में समस्त तीर्थ प्राय: नदियों के किनारे होते हैं. तीर्थ का शब्दिक अर्थ ही है कि वह स्थान जो पार लगा दे. कुंभ भी नदियों के तीर पर ही आयोजित होते हैं. उत्तर में गंगा, पश्चिम में क्षिप्रा व दक्षिण में गोदावरी नदी के घाट पर. इस दृष्टि से कुंभ सांसारिक लोगों को काल के चक्र से मुक्त होने का एक दिव्य अवसर प्रदान करता है. प्रयागराज का कुंभ एक ऐसा अनुपम अवसर है जो न केवल मनुष्यों के पापों का नाश करता है वरन माँ गंगा को भी पाप मुक्त करता है. भगवान शिव की इच्छा से गंगा नदी को यह आशिर्वाद है कि कुंभ मेले में आये साधु संत जब सन्यास ग्रहण करेंगे तो उनके प्रताप से गंगा नदी जन मानस के पाप से स्वयं ही मुक्त हो जाएगी. इस प्रकार कुंभ एक ऐसा धार्मिक अनुष्ठान है जो नर और नारायण दोनों के पापों की आहुति स्वीकार कर उन्हें मुक्ति प्रदान करता है.

कुंभ के समय महात्माओं की ज्ञान चर्चा व साधना तथा सत्संग का अविरल अमृत छलकता रहता है. इसी अमृत का पान करने हेतु असंख्य भक्त यहाँ खिंचे चले आते हैं. सनातन धर्म में साधु-संतों पर ही धर्म रक्षा, उसके प्रचार-प्रसार और जन कल्याण का दायित्व होता है. ये साधु, ज्ञान धरोहर को जन साधारण तक पहुंचा कर मानव कल्याण का कार्य वर्षों से करते आ रहे हैं. आश्चर्यजनक बात यह है कि कुंभ विभिन्न जाति, समुदाय, पूजा पद्धति का पालन करने वालों का समागम है और इतनी बड़ी मात्रा में लोगों के एकत्र होने के बावजूद सारा कुंभ मेला बहुत ही शांति से संपन्न हो जाता है. कुंभ में राजसत्ता, धर्मसत्ता और समाजसत्ता तीनों का आगमन होता है परंतु ये तीनों कभी एक दूसरे पर हावी नहीं होते वरन एक दूसरे के सहायक बनते हैं, क्योंकि तीनों का उद्देश्य धर्म स्थापना और मानव कल्याण ही होता है.

सनातन धर्म में हर व्यक्ति को अपना मार्ग, अपना गुरु और अपना अध्यात्म जानने व चुनने का अधिकार है. इस कारण कुंभ लोकतान्त्रिक भी है. यहाँ आने वाले भक्त अपनी श्रद्धा के अनुसार अपने इष्ट देवता की पूजा अर्चना करते हैं. कोई जल की पूजा करता है तो कोई पशु पक्षियों की! कोई मूर्ति पूजा करता है तो कोई शास्त्रों की! कोई पेड़ की पूजा करता है तो कोई नर को ही नारायण मान कर उसकी आराधना करता है. ऐसे समय में जब धर्म और विचारों के नाम पर समाज में तनाव उत्पन्न हो जाता है तब अपने चुने हुए मार्ग पर चलने का अवसर प्रदान कर कुंभ शायद सबसे बड़ी मानव सेवा का उदाहरण प्रस्तुत करता है. इसी कारण यूनेस्को के अंतर्गत सांस्कृतिक विरासत सुरक्षा समिति ने वर्ष 2017 में दक्षिण कोरिया के जूजू में आयोजित अपने बारहवें सम्मेलन में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में कुंभ मेला को शामिल किया.

सुनील प्रकाश पाल,
नो. क्षे. का., बेंगलूरु

कुंभ की तैयारियां - चुनौती

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है 'कुंभ' महापर्व. यह पर्व उतना ही प्राचीन है जितनी हिन्दू संस्कृति. यह विश्व का महानतम मेला है और यूनेस्को ने इसे 'भारत की महान अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में स्वीकार किया है. यह महापर्व चार स्थानों पर 12 वर्ष की अवधि के उपरांत मनाया जाता है. गंगा-यमुना के संगम प्रयाग में, गंगा के तट पर हरिद्वार में, गोदावरी के तट पर नासिक-त्र्यम्बकेश्वर में और क्षिप्रा के तट पर उज्जैन में यह महापर्व आयोजित होता है. यह महापर्व वृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा की विशिष्ट राशि/नक्षत्र की स्थिति के अनुसार होता है. 144 वर्षों के अंतराल के पश्चात महाकुंभ का आयोजन होता है. 2013 में प्रयागराज में महाकुंभ था. हरिद्वार तथा प्रयागराज में कुंभ के 6 वर्षों के अंतराल में अर्द्धकुंभ भी होता है.

कुंभ पर्व का विशेष आकर्षण संत एवं साधू समाज का आगमन एवं स्नान है, जिसे पेशवाई कहा जाता है. मुख्य पर्व से कई माह पूर्व ही साधू-सन्यासियों का इन तीर्थ स्थलों में आगमन शुरू हो जाता है. शैव, वैष्णव तथा उदासीन मत को मानने वाले लाखों नागा संत तथा साधू अपने अखाड़ों के साथ इसमें शामिल होते हैं. प्राचीन समय से ही प्रवचन, कीर्तन, महाप्रसाद तथा शास्त्रार्थ संत समाज के महासंगम का भाग रहे हैं. इन चार कुंभ पर्वों के अतिरिक्त प्रयागराज अर्ध कुंभ में ही अखाड़ों का स्नान होता है. साधू - संत समाज ही आयोजनों के मुख्य पर्वों में सर्वप्रथम नदी स्नान करते हैं. प्रमुख 13 अखाड़ों में 7 अखाड़े सन्यासियों (शैव मत), 3 अखाड़े बैरागियों (वैष्णव मत) तथा 3 अखाड़े उदासीन मत (सिक्ख) के हैं. सन्यासियों के प्रमुख 7 अखाड़ों में श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा, श्री पंच दशनाम आह्वान अखाड़ा तथा श्री पंच अग्नि अखाड़ा के साथ स्नान करता है. श्री पंचायती महा निर्वाणी अखाड़ा, श्री पंचायती अटल अखाड़ा के साथ स्नान करता है. श्री तपोनिधि निरंजनी अखाड़ा, श्री तपोनिधि आनंद अखाड़ा के साथ स्नान करता है. इसके अतिरिक्त बैरागियों के 3 अखाड़े, श्री पंच दिगंबर अखाड़ा, श्री रामानंदीय निर्मोही अखाड़ा तथा श्री पंच निर्वाणी अखाड़ा तथा उदासीनों के 3 अखाड़े, श्री पंचायती बड़ा उदासीन अखाड़ा, श्री पंचायती नया उदासीन अखाड़ा तथा श्री पंचायती निर्मल अखाड़ा स्नान करते हैं.

इतने बड़े स्तर पर मेले का आयोजन प्रशासन के लिए हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है. इस पौराणिक मेले की पुष्टि, चीनी यात्री हवेनसांग की, सम्राट हर्षवर्द्धन के शासन काल में सन् 644 ई. में प्रयागराज कुंभ की यात्रा से होती है. सन् 1398 में तैमूर ने हरिद्वार में हजारों साधू-संतों की हत्या की थी. पुराने समय में मुख्य पर्वों में प्रथम स्नान तथा स्नान के क्रम में साधुओं के अखाड़ों के मध्य हिंसक विवाद हुए हैं. सन् 1690 में नासिक- त्र्यम्बकेश्वर में, सन् 1760 में हरिद्वार में तथा सन् 1789 में उज्जैन तथा सन् 1826 में नासिक में सन्यासियों (शैव) तथा बैरागियों (वैष्णव) के मध्य हिंसक झगड़े हुए. सन् 1796 में हरिद्वार में सन्यासियों (शैव) तथा उदासीन (सिक्ख) साधुओं के मध्य हिंसक झगड़े हुए हैं. कालांतर में सन् 1780 में अखाड़ों के स्नान का क्रम निर्धारित किया गया.

कुंभ पर्व पर कई दुर्घटनाएँ भी हुई हैं. सन् 1783 में हरिद्वार कुंभ में हैजा महामारी हुई थी. 1879 से 1945 के मध्य लगभग हर कुंभ/अर्द्धकुंभ में पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में हजारों तीर्थयात्रियों की मृत्यु हुई है. सन् 1915 में हरिद्वार कुंभ मेले में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी उपस्थित थे. उन्होंने भी पर्व पर अव्यवस्था तथा विशेष रूप से स्वच्छता की पर्याप्त सुविधा न होने पर दुख व्यक्त किया था. इन मेले में असमय मृत्यु का कारण भगदड़ या हैजा ही रहा है. हरिद्वार में सन् 1820 तथा 1986 में भगदड़ से कई लोगों की मृत्यु हुई. नासिक में सन् 2003 में और प्रयाग में सन् 1840, 1906, 1954 तथा 2013 में भगदड़ से कई लोगों की मृत्यु हुई. सन् 1820 की भगदड़ में लगभग 500 तथा 1954 की भगदड़ में लगभग 800 लोगों की मृत्यु हुई.

इस पर्व की मान्यता तथा तीर्थ यात्रियों की भीड़ में लगातार वृद्धि हुई है. 2013 प्रयाग कुंभ में मौनी अमावस्या के अवसर पर 10/02/2013 को 3 करोड़ लोगों ने स्नान किया और पूरे कुंभ पर्व पर 12 करोड़ लोगों ने स्नान किया. इसी प्रकार 1998 में हरिद्वार कुंभ में 14/04/1998 को 1 करोड़ लोगों ने स्नान किया. 2016 में उज्जैन कुंभ पर्व में 7.50 करोड़ श्रद्धालुओ ने स्नान किया. यह एक मात्र ऐसा पर्व जिसकी भव्यता तथा विशालता अंतरिक्ष से भी दृष्टिगोचर होती है.

इन सभी विलक्षणताओं को तथा पूर्व में घटित दुर्घटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए कई महीनों तक चलने वाले विशाल पर्व का आयोजन सभी के लिए चुनौतीपूर्ण है. इतने विशाल जनसमूह के लिए अस्थायी आवास की व्यवस्था, यात्रियों के लिए पर्याप्त संख्या में यातायात के साधनों यथा ट्रेन तथा बसों की उपलब्धता, रहने के लिए होटल तथा धर्मशाला इत्यादि की व्यवस्था, पेय जल की व्यवस्था, चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था, कूड़ा कचरा निस्तारण की व्यवस्था, स्नान हेतु नदी तटों पर घाटों की व्यवस्था, यातायात नियंत्रण, स्नान के पश्चात तीर्थ यात्रियों की सुरक्षित वापसी तथा आपराधिक, उपद्रवी तत्वों पर नियंत्रण आदि बातें प्रशासन के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण हैं. प्रशासन की कुशल व्यवस्था तथा सजगता और तीर्थ यात्रियों की श्रद्धा के कारण ही इतने बड़े स्तर पर आयोजन सफलतापूर्वक होता आया है. मेले के संचालन हेतु इसरो की सेवाएं ली जा रही हैं.

सन् 2013 में प्रयागराज महाकुंभ हेतु 14 अस्थायी चिकित्सालयों, 243 डाक्टर, 30,000 पुलिस एवं सुरक्षा कर्मी, 40,000 अस्थायी शौचालयों की व्यवस्था की गई थी. इस आयोजन हेतु इस मेले को 'सर्वश्रेष्ठ प्रबंधित घटना' के रूप में गिनीज़ बुक में स्थान मिला.

इस वर्ष में प्रयागराज में अर्द्धकुंभ आयोजित किया जा रहा है. 2019 अर्द्धकुंभ के आयोजन हेतु ₹4200 करोड़ का प्रावधान है. इसके सफल आयोजन हेतु 2500 हेक्टेयर भूमि पर अस्थायी आवासीय व्यवस्था की गई है जिसमें एक ओर आम जनता के लिए सस्ती दरों पर आवास की तो दूसरी और पाँच सितारा स्तर (लक्जरी टैंट) तक के आवास की व्यवस्था है. पर्व हेतु 1,22,000 अस्थायी शौचालयों का निर्माण किया गया है. हेलीकॉप्टर व्यू की सुविधा भी तीर्थ यात्रियों को प्रदान की गई है.

जब तक पत्रिका का अंक हमारे पास होगा तब तक प्रयागराज अर्धकुंभ 2019 का सफलतापूर्वक आयोजन हो चुका होगा. अगला कुंभ मेला 2022 में गंगा तट पर हरिद्वार में आयोजित होगा.

गिरीश जोशी
क्षे. म. प्र. का., कोलकाता

कुंभ- ऐतिहासिकता व पौराणिकता

'कुंभ' शब्द पवित्र अमृत कलश से व्युत्पन्न हुआ है. आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं मिलनसारिता का पर्व है कुंभ. हिन्दू धार्मिक तीर्थ यात्रियों के बीच कुंभ एक सर्वाधिक पवित्र पर्व है. करोड़ों लोग और पर्यटक, आस्था एवं विश्वास की दृष्टि से कुंभ में शामिल होते हैं. प्रयाग कुंभ का केंद्र बिन्दु रहा है. वह विद्वानों के लिए शोध का विषय है कि कब कुंभ के बारे में जनश्रुति आरम्भ हुई थी और कब इसने तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करना आरम्भ किया. कुंभ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से शुरू नहीं हुआ था अपितु इसका इतिहास समय द्वारा स्वयं ही बना दिया गया है. वैसे भी धार्मिक परम्पराएं हमेशा आस्था एवं विश्वास के आधार पर टिकती हैं न कि इतिहास पर! कुंभ जैसा विशाल पर्व संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है.

ऐतिहासिकता:

धर्म और आस्था का अद्भुत समागम हर कुंभ में देखने को मिलता है. इतिहास इसका साक्षी रहा है. गुप्त साम्राज्य (320 - 600 ई.) के समय पुराण आदि साहित्य के आधार पर कुंभ पर्व के स्थान व काल स्थायी रूप से निर्मित होकर वर्तमान में विकसित हुए हैं. विभिन्न मतानुयायियों का यह भी मत है कि सम्राट हर्षवर्धन के 'शिलादित्य' 612 - 647 द्वारा कुंभ मेले का सूत्रपात हुआ. प्रसिद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृत्तांत में कुंभ मेले की महानता का उल्लेख किया है. चीनी यात्री ह्वेनसांग के लिखित विवरण से यह विदित होता है कि हर्षवर्धन स्वयं बौद्ध होते हुए भी अपनी परधर्म सहिष्णुता एवं उदारता के कारण प्रत्येक पांचवें व छठे वर्ष, प्रयाग में त्रिवेणी तट पर बौद्धिक सनातनधर्मी तथा बौद्ध विद्वानों का विशाल सम्मेलन बुलाकर धर्मावलोचन की व्यवस्था करते थे. इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि झांसी गजेटियर हमें बताता है कि 1751 ई. में अहमद खां बंगश ने दिल्ली के वजीर अवध के नवाज सफदरजंग को परास्त करके इलाहाबाद के किले को घेर लिया था. वह नगर पर अधिकार करने वाला ही था कि उसी समय प्रयागराज का कुंभ आ गया. जिसमें देश- विदेश से विभिन्न धर्मानुरागियों का समागम हुआ. उसमें नागा संन्यासियों का एक विशाल समूह भी श्री राजेन्द्र गिरि जी के नेतृत्व में आया. उन्होंने कुंभ पर्व में किये जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों को पूर्ण किया. तत्पश्चात शस्त्र धारण कर फरवरी से अप्रैल तक अहमद खां बंगश की सेना के साथ युद्ध किया और उसे परास्त कर प्रयाग की रक्षा की. इसी प्रकार प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व गोदावरी (नासिक) चारो कुंभों में कुंभ के समय दशनामी संन्यासियों के नेतृत्व में धार्मिक अनुष्ठान होते रहते हैं.

पौराणिकता:

कुंभ का आधुनिक इतिहास 850 साल पुराना है. इसके आधुनिक आयोजन की शुरुआत आदि शंकराचार्य द्वारा की गई थी. कुंभ की उत्पत्ति के विषय में मान्यता है कि जब दैवीय व आसुरी शक्तियों का युद्ध हो रहा था, तब दोनों का समन्वय कराने के लिए समुद्र मंथन का आयोजन किया गया. 'विष्णु प्रयाग' के अनुसार हिमालय के उत्तर में लाखों वर्ष पहले क्षिरोद नामक मीठे पानी का समुद्र था. यहां मंदराचल को मथानी और वासुकि नाग को रस्सी बनाकर देवताओं तथा दानवों ने क्षिरोद सागर का मंथन शुरू किया. मंदराचल का आधार बनने के लिए भगवान विष्णु ने कूर्मावतार धारण किया. मंथन करने पर सबसे पहले विष उत्पन्न हुआ. इससे तीनों लोकों को बचाने के लिए भगवान शिव ने इसे अपने गले में धारण कर लिया. इस मंथन में चौदह प्रकार के अद्भुत रत्न निकले जिसमें से एक अमृत कलश भी था. इसको लेकर देवों और असुरों के बीच विवाद हो गया. इस विवाद में पृथ्वी पर जहां-जहां अमृत कलश रखा गया था, उन स्थानों पर कुंभ का आयोजन होता है. स्कन्द पुराण के अनुसार समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ चार स्थानों पर गिरा, इसलिए भारत में कुंभ पर्व के चार भेद हो गये. प्रथम गंगाद्वार (हरिद्वार), द्वितीय तीर्थराज (प्रयागराज), तृतीय धारा (उज्जैन) और चतुर्थ गोदावरी तट (नासिक) में घटने वाले इस योग को कुंभ योग के नाम से पुकारते हैं.

धार्मिक आस्था व सनातन अध्यात्म की समरसता प्रयाग के कुंभ पर्व में देखने को मिलती है. कहते हैं कि जो मनुष्य कुंभ पर्व के समागम में स्नान करते हैं, वे सांसारिक बंधन से मुक्त हो अमरत्व को प्राप्त करते हैं. कार्तिक मास में एक हजार बार, माघ मास में एक सौ बार गंगा स्नान करने और वैशाख मास में एक करोड़ बार नर्मदा स्नान करने का जो फल है, वही फल एक बार कुंभ पर्व का स्नान करने का होता है. प्रयाग में स्नान करने का अपार महत्व है जो माघ मास में और अधिक हो जाता है. कूर्म पुराण के अनुसार यहां स्नान करने से सभी पापों का विनाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है. भविष्य पुराण के अनुसार स्नान के पुण्य स्वरूप स्वर्ग मिलता है. स्कन्द पुराण के अनुसार भक्ति भावपूर्ण स्नान करने से जिनकी जो कामना होती है वह निश्चित रूप से पूर्ण होती है. अग्निपुराण में कहा गया है कि इससे वही फल मिलता है जो करोड़ों गायों का दान से होता है और मनुष्य सर्वथा पवित्र हो जाता है. जब तक पृथ्वी पर पर्वत तथा समुद्र रहेंगे तब तक गंगाजी में कुंभ से उत्पन्न अमृत विद्यमान रहेगा.

-जॉर्ज विल्सन टोप्पो

क्षे. का., रायपुर

नागा साधु

नागा साधु हिंदू धर्मावलंबी होते हैं. जो कि नग्न रहने तथा युद्ध कला में माहिर होने के लिए प्रसिद्ध हैं नागा साधु विभिन्न अखाड़ों में रहते हैं जिनकी परंपरा जगतगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा की गई थी.

नागा साधुओं का इतिहास

भारतीय सनातन धर्म के वर्तमान स्वरूप की नींव आदिगुरु शंकराचार्य ने रखी थी. शंकराचार्य का जन्म आठवीं शताब्दी के मध्य हुआ था जब भारतीय जनमानस की दशा और दिशा बहुत बेहतर नहीं थी. भारत की धन संपदा के आकर्षण से खिंचे तमाम आक्रमणकारी यहां आ रहे थे. कुछ उस खजाने को अपने साथ वापस ले गए तो कुछ भारत की दिव्य आभा से ऐसे मोहित हुए कि यहीं बस गए. लेकिन कुल मिलाकर सामान्य शांति व्यवस्था बाधित हो गई थी. ईश्वर, धर्म, धर्मशास्त्रों को तर्क, शस्त्र और शास्त्र सभी तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था. ऐसे में शंकराचार्य ने सनातन धर्म की स्थापना के लिए कई कदम उठाए इनमें से एक था देश के चारो कोनों पर चार पीठों का निर्माण करना. यह थी - गोवर्धन पीठ, शारदा पीठ, द्वारिका पीठ और ज्योतिर्मठ पीठ. इसके अलावा आदिगुरु ने मठों-मंदिरों की संपत्ति को लूटने वालों और श्रद्धालुओं को सताने वालों का मुकाबला करने के लिए सनातन धर्म के विभिन्न संप्रदायों की सशस्त्र शाखाओं के रूप में अखाड़ों की स्थापना की शुरुआत की.

आदिगुरु शंकराचार्य को लगने लगा था कि सामाजिक उथल-पुथल के उस युग में केवल आध्यात्मिक शक्ति से ही इन चुनौतियों का मुकाबला करना काफी नहीं है. उन्होंने जोर दिया कि युवा साधु व्यायाम करके अपने शरीर को सुदृढ़ बनाएँ और हथियार चलाने में भी कुशलता हासिल करें. इसलिए ऐसे मठ जहां इस तरह के व्यायाम या शस्त्र संचालन का अभ्यास कराया जाता था, उन मठों को अखाड़ा कहा जाने लगा. आम बोलचाल की भाषा में भी अखाड़े उन जगहों को कहा जाता है, जहां पहलवान कसरत करते हैं. कालांतर में कई और अखाड़े अस्तित्व में आए. शंकराचार्य ने अखाड़ों को सुझाव दिया की मठ, मंदिरों और श्रद्धालुओं की रक्षा के लिए जरूरत पड़ने पर शक्ति का प्रयोग करें. इस तरह बाह्य आक्रमणों के उस दौर में इन

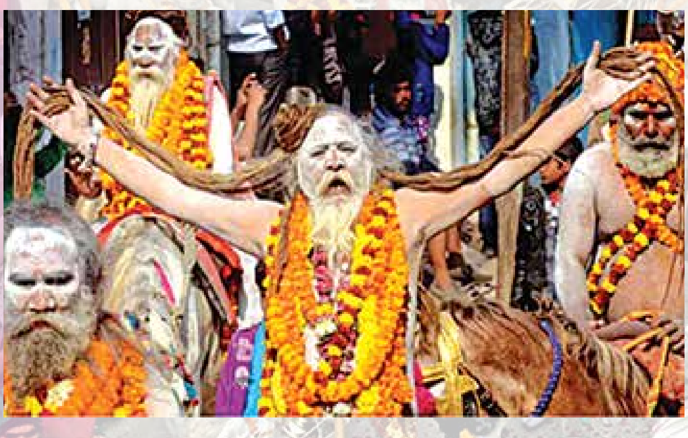

अखाड़ों ने एक सुरक्षा कवच का काम किया. कई बार स्थानीय राजा, महाराजा विदेशी आक्रमण की स्थिति में नागा साधुओं का सहयोग लिया करते थे. इतिहास में ऐसे कई गौरवपूर्ण युद्धों का वर्णन मिलता है जिनमें 40 हजार से ज्यादा नागा साधुओं ने हिस्सा लिया.

नागा साधुओं की वर्तमान स्थिति

भारत की आजादी के बाद इन अखाड़ों ने अपना सैन्य चरित्र त्याग दिया. इन अखाड़ों के प्रमुख ने जोर दिया कि उनके अनुयायी भारतीय संस्कृति और दर्शन के सनातनी मूल्यों का अध्ययन और अनुपालन करते हुए संयमित जीवन व्यतीत करें. इस समय 13 प्रमुख अखाड़े हैं जिनमें प्रत्येक के शीर्ष पर महंत आसीन होते हैं. इन प्रमुख अखाड़ों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

1 श्री निरंजनी अखाड़ा

यह अखाड़ा 826 ईसवी में गुजरात के मांडवी में स्थापित हुआ था. इनके इष्टदेव भगवान शंकर के पुत्र कार्तिक स्वामी हैं. इनमें दिगंबर, साधु, महंत और महामंडलेश्वर होते हैं. इनकी शाखाएँ इलाहाबाद, उज्जैन, हरिद्वार, त्र्यंबकेश्वर व उदयपुर में हैं.

2. श्री जूना दत्त अखाड़ा

यह अखाड़ा 1145 में उत्तराखंड के कर्णप्रयाग में स्थापित हुआ. इसे भैरव अखाड़ा भी कहते हैं. इनके ईष्ट देव रुद्रावतार दत्तात्रेय हैं. इसका केंद्र वाराणसी के हनुमान घाट पर माना जाता है. हरिद्वार में माया देवी मंदिर के पास इनका आश्रम है. इस अखाड़े के नागा साधु जब शाही स्नान के लिए संगम की ओर बढ़ते हैं तो मेले में आए श्रद्धालुओं समेत पूरी दुनिया की साँसे उस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए रुक जाती हैं.

3. श्री महानिर्वाण अखाड़ा

यह अखाड़ा 671 ईसवी में स्थापित हुआ था, कुछ लोगों का मत है कि इसका जन्म बिहार झारखंड के बैजनाथ धाम में हुआ था, जबकि कुछ इसका जन्म हरिद्वार में नीलधारा के पास मानते हैं. इनके ईष्ट देव कपिल महामुनि हैं. इनकी शाखायें इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन, त्र्यंबकेश्वर और कनखल में हैं. इतिहास के पन्ने बताते हैं कि 1260 में महंत भगवानन्द गिरी के नेतृत्व में 22000 नागा साधुओं ने कनखल स्थित मंदिर को आक्रमणकारी सेना के कब्जे से छुड़ाया था.

4. श्री अटल अखाड़ा

यह अखाड़ा 569 में गोंडवाना क्षेत्र में स्थापित किया गया था. इनके ईष्ट देव भगवान गणेश हैं. यह सबसे प्राचीन अखाड़ों में से एक

माना जाता है. इसकी मुख्य पीठ पाटन में है लेकिन आश्रम कनखल, हरिद्वार, इलाहाबाद, त्र्यंबकेश्वर में भी है.

5. श्री आवाहन अखाड़ा

यह अखाड़ा 646 में स्थापित हुआ और 1603 में पुन: संयोजित किया गया. इसके ईष्ट देव श्री दत्तात्रेय हैं. इस अखाड़े का केंद्र स्थान काशी है. इसका आश्रम ऋषिकेश में भी है. स्वामी अनूपगिरी और उमराव गिरी इस अखाड़े के प्रमुख संतों में से हैं.

6. आनंद अखाड़ा

यह अखाड़ा 855 में मध्य प्रदेश के बेरार में स्थापित हुआ था. इसका केंद्र वाराणसी में है. इसकी शाखायें इलाहाबाद, हरिद्वार में भी हैं.

7. श्री पंचअग्नि अखाड़ा

इस अखाड़े की स्थापना 1136 में हुई थी. इनकी ईष्ट देव गायत्री हैं और इनका प्रधान केंद्र काशी है. इनके सदस्यों में चारो पीठ के शंकराचार्य, ब्रह्मचारी, साधू व महामंडलेश्वर शामिल हैं. इनकी शाखाएँ इलाहाबाद, उज्जैन व त्र्यंबकेश्वर में हैं.

8. श्री नाथपंथी गोरखनाथ अखाड़ा

यह अखाड़ा ईस्वी 866 में अहिल्या गोदावरी संगम पर स्थापित हुआ. इनके संस्थापक पीर शिवनाथजी हैं. इनको मुख्य देव गोरखनाथ हैं और इनमें 12 पंथ हैं. यह संप्रदाय योगिनी कौल नाम से प्रसिद्ध है और इनकी त्र्यंबकेश्वर शाखा त्रयंबकंममठिका नाम से प्रसिद्ध है.

9. श्री वैष्णव अखाड़ा

यह बालनंद अखाड़ा 1595 में दारागंज में श्री मध्य मुरारी में स्थापित हुआ. समय के साथ इनमें निर्मोही, निर्वाणी, खाकी आदि 3 संप्रदाय बने. इनका अखाड़ा त्र्यंबकेश्वर में मारुति मंदिर के पास था. 1848 तक शाही स्नान त्र्यंबकेश्वर में ही हुआ करता था परंतु 1848 में शैव व वैष्णव साधुओं में पहले स्नान कौन करे इस मुद्दे पर झगड़े हुए. श्रीमंत पेशवा जी ने यह झगड़ा खत्म किया. 1932 से ये नासिक में स्नान करने लगे. आज भी यह स्नान नासिक में ही होता है.

10. उदासीन पंचायती अखाड़ा

यह अखाड़ा 1910 में स्थापित हुआ. संप्रदाय के संस्थापक श्री चंद्रआचार्य उदासीन हैं. इनमें सांप्रदायिक भेद है. इनमें उदासीन साधु, महंत व महामण्ड्लेश्वरों की संख्या ज्यादा है. उनकी शाखाएँ प्रयाग,हरिद्वार,उज्जैन,कनखल,मुलतान व मद्रास में हैं.

11. श्री उदासीन नया अखाड़ा

यह अखाड़ा 1710 में स्थापित हुआ था. इसे बड़ा उदासीन अखाड़ा के कुछ साधुओं ने विभक्त होकर स्थापित किया. इसके प्रवर्तक महंत सुधीरदासजी थे. इनकी शाखाएं प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, त्र्यंबकेश्वर में हैं.

12.श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा

यह अखाड़ा 1784 में स्थापित हुआ. 1784 में हरिद्वार कुंभ मेले के समय एक बड़ी सभा में विचार विनिमय करके श्री दुर्गा सिंह महाराज ने इसकी स्थापना की. इनकी ईष्ट पुस्तक श्री गुरुग्रंथ साहिब है. इनमें सांप्रदायिक साधु, महंत, महामंडलेश्वरों की संख्या बहुत है. इनकी शाखाएं प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और त्रंबकेश्वर में हैं.

13. निर्मोही अखाड़ा

निर्मोही अखाड़े की स्थापना 1720 में रामानंदाचार्य ने की. इस अखाड़े के मठ और मंदिर उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और बिहार में है. पुराने समय में इसके अनुयायियों को तीरंदाजी और तलवारबाजी की शिक्षा भी दिलाई जाती थी. आगम अखाड़े के साधु बहुत ही रहस्यमयी होते हैं, पूजा ध्यान करते हुए वह भूमि का त्याग कर अधर में होते हैं.

नागा साधु बनने की प्रक्रिया

नागा साधु बनने की प्रक्रिया कठिन तथा लंबी होती है. नागा साधुओं के पंथ में शामिल होने की प्रक्रिया में लगभग 6 साल लगते हैं. इस दौरान नए सदस्य एक लंगोट के अलावा कुछ नहीं पहनते. कुंभ मेले में अंतिम प्रण लेने के बाद लंगोट भी त्याग देते हैं और जीवन भर यूं ही रहते हैं. कोई भी अखाड़ा अच्छी तरह जांच पड़ताल कर योग्य व्यक्ति को ही प्रवेश देता है. पहले उसे लंबे समय तक ब्रह्मचारी के रूप में रहना होता है, फिर उसे महापुरुष तथा फिर अवधूत बनाया जाता है. अंतिम प्रक्रिया महाकुंभ के दौरान होती है, जिसमें उसका स्वयं का पिंडदान तथा दंडी संस्कार आदि शामिल होते हैं.

- राधा रमण शर्मा
क्षे. का., कोल्हापुर

महिला नागा साधु

कुंभ हिन्दू धर्म के अनुयायियों की आस्था से जुड़ा पर्व है. 12 साल के अंतराल में कुंभ मेले का आयोजन होता है. इस वर्ष प्रयागराज में अर्ध कुंभ आयोजित हुआ अर्थात पूर्ण कुंभ के छह वर्ष बाद अर्ध कुंभ आयोजित होता है. कुंभ मेले में स्नान के लिए पूरे देश से श्रद्धालु आते हैं. कुंभ मेले में नागा साधु सबके आकर्षण का केंद्र होते हैं. नागा साधुओं का इतिहास सनातन काल से है. महर्षि वेद व्यास ने वनवासी सन्यास परंपरा की शुरुआत की थी. सनातन काल में 13 अखाड़ों में से सबसे पहले आवाहन अखाड़े का गठन हुआ. देश में आज 15 लाख से ज़्यादा नागा सन्यासी विभिन्न स्थानों पर हैं. आस्था के इस महाकुंभ में नागा साधु जब स्नान के लिए मेले में आते हैं तो श्रद्धालु घाट खाली कर देते हैं. नागा साधु ही सबसे पहले स्नान करते हैं, क्योंकि उन्हें धर्म रक्षक योद्धा माना जाता है. नागा साधुओं का संबंध शैव संप्रदाय से है. अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण के समय हजारों नागा साधुओं ने धर्म की रक्षा के लिए अब्दाली की सेना का सामना किया और गोकुल की रक्षा की. यही कारण है कि हिन्दू धर्म में इन्हें श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है. धर्म के सिपाही होने के नाते नागा साधु आम जीवन से दूर कठोर अनुशासनपूर्ण जीवन जीते हैं.

साधु महात्माओं में नागा साधु को हैरत भरी नजरों से देखा जाता है. ख़ासकर कुंभ में महिला नागा साधुओं को लेकर हमेशा से उत्सुकता बनी रही है. लोग उनका जीवन जानने को बेचैन रहते हैं. आमतौर पर कुंभ या महाकुंभ में महिला नागा साधु नज़र नहीं आती थीं लेकिन प्रयागराज में हाल में संपन्न हुए कुंभ मेले में सार्वजनिक रूप से उनका आगमन खास था. पहली बार नागा साधुओं के अखाड़े के बाद महिलाओं के अखाड़े भी धूमधाम से निकले और महिला साधुओं ने शाही स्नान कर सभी विधान पूर्ण किए. महिला नागा साधु का जीवन सबसे अलग और निराला होता है. इन्हें गृहस्थ जीवन से कोई मतलब नहीं होता है. इनका जीवन कई कठिनाइयों से भरा होता है. इनकी ज़िंदगी इतनी आसान नहीं है, क्योंकि नागा साधु बनने के लिए इन्हें बहुत कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ता है. इनकी परीक्षा कोई एक या दो दिन की नहीं होती है. इन्हें नागा साधु या सन्यासिन बनने के लिए दस से पंद्रह साल तक कठिन ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता है. जो भी महिला साधु या सन्यासिन बनना चाहती हैं, इन्हें अपने गुरु को इस बात का विश्वास दिलाना पड़ता है कि वे साधु बनने के लायक हैं.

महिला नागा साधु बनने से पहले अखाड़े के साधु संत उस महिला के घर परिवार और उसके पूर्व जन्म की जांच पड़ताल करते हैं. सबसे चौकाने वाली बात तो ये है कि महिला नागा साधु बनने से पहले महिला को जीवित रहते हुए अपना पिंडदान करना पड़ता है और अपना मुंडन कराना पड़ता है और फिर उस महिला को नदी में स्नान के लिए भेजा जाता है. महिला नागा सन्यासिन पूरा दिन भगवान का जाप करती है और शुभ ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शिवजी का जाप करती है. शाम को दत्तात्रेय भगवान की पूजा करती है. सिंघस्थ और कुंभ में नागा साधुओं के साथ ही महिला सन्यासिन भी शाही स्नान करती हैं. इसके बाद दोपहर में भी भोजन करने के बाद फिर से शिवजी का जाप करती हैं और शाम को अखाड़ों में महिला सन्यासिन को पूरा सम्मान दिया जाता है. साथ ही महिला सन्यासिन बनने से पहले महिला को साबित करना होता है कि उसका अपने परिवार और समाज से कोई मोह नहीं है. इस बात की संतुष्टि करने के बाद ही आचार्य महिला को दीक्षा देते हैं. इतना ही नहीं उन्हें नागा साधुओं के साथ रहना भी पड़ता है. हालांकि महिला साधुओं या सन्यासिन पर इस तरह की पाबंदी नहीं है. वह अपने शरीर पर पीला वस्त्र धारण कर सकती है.

जब कोई महिला इन सब परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर लेती है अर्थात जब उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति की परख हो जाती है, तब उन्हें माता की उपाधि दी जाती है. जब महिला नागा पूरी तरह से सन्यासिन बन जाती है तो अखाड़े के सभी छोटे-बड़े साधु संत उस महिला को माता कहकर बुलाते हैं. पुरुष नागा साधु और महिला नागा साधु में फर्क केवल इतना ही है कि महिला नागा साधु को एक पीला वस्त्र

लपेटकर रखना पड़ता है. नग्नस्नान की अनुमति नहीं है, यहाँ तक कि कुंभ मेले में भी नहीं. हालांकि जूना अखाड़े की महिलाओं को यह इजाजत मिली हुई है.

आमतौर पर अब तक नेपाल से साधु बनने वाली महिलाएं ही नागा बनती हैं. इसका कारण यह है कि नेपाल में विधवाओं के फिर से विवाह को अच्छा नहीं माना जाता है. ऐसा करने वालों को वहां का समाज भी अच्छी नजरों से नहीं देखता है, लिहाजा विधवा होने वाली नेपाली महिलाएं पहले तो साधु बनती हैं बाद में महिला नागा साधु बनने की कठिन प्रक्रिया से जुड़ जाती हैं. जूना सन्यासिन अखाड़ा में तीन चौथाई महिलाएं नेपाल से आई हुई हैं.

इस बार प्रयागराज कुंभ मेले में 60 नागा सन्यासिनियों को दीक्षा दी गई है. कुंभ मेले में दूसरे शाही स्नान से 05 दिन पहले श्री पाँच दशनाए जूना अखाड़ा ने 60 महिला नागा सन्यासिनों को दीक्षा दी. खासकर यूरोप की महिलाओं के बीच नागा साधु बनने का आकर्षण बढ़ा है. पिछले 2013 के कुंभ में फ्रांस की कोरिने लियरे नागा साधु बनी थीं. उन्हें नया नाम दिव्या गिरि दिया गया. वैसे दिव्या ने 2004 में साधु की दीक्षा ली, लेकिन कठिन तप करने के बाद उन्हें नागा पद मिला. उनका कहना है कि महिलाएं कुछ चीज़ें अलग से करना चाहती हैं. वे कहती हैं कि अब हमारी नई पहचान है.

देश में पाँच हज़ार से ज़्यादा अधिक महिला नागा साधु इस समय मौजूद हैं. एक हज़ार से ज़्यादा महिला साधु कुंभ स्नान के लिए आयीं थीं. धर्म की रक्षा के लिए पुरुषों के साथ धर्म का पालन करते हुए कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए महिला साधकों की संख्या पिछले एक दशक में बढ़ी है. घर परिवार से वैराग्य होकर साध्वी बनने के बाद महिला नागा साधु भी मल्ल युद्ध की कला में माहिर होने के बाद ही आती हैं. महिलाओं की सामाजिक व सांसारिक अत्याचार की घटनाओं में बढ़ोत्तरी के बाद महिलाओं का रुझान इधर तेज़ी से बढ़ा है. चेहरे पर सहजता, गंभीरता, मुस्कुराहट, अपनापन और छलकता ममत्व साध्वियों की पहचान है. न उनके लिए कोई अपना है न पराया. समदर्शी नजरें ही उन्हें सभी की नज़र में पूज्य बनाती हैं.

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि "उठो **और संकल्प लेकर कार्य में जुट जाओ, ये जीवन भला है कितने दिन का? जब तुम इस संसार में आए हो तो कुछ चिन्ह छोड़ जाओ अन्यथा तुममें और वृक्ष आदि में अंतर ही क्या रह जाएगा, वे भी पैदा होते हैं, परिणाम को प्राप्त होते हैं और मर जाते हैं.**

आकांक्षा पाण्डेय
सरल(लाइट), प्रयागराज

कुंभ और विदेशी सैलानी

भारतवर्ष तत्वज्ञान एवं आध्यात्मिक ज्ञान का महासागर है जहाँ आस्था के किनारे पर डुबकी लगा कर व्यक्ति परम ज्ञान के मोती को पाने की कोशिश करता है. इस आस्था का केंद्रबिन्दु है - कुंभ महापर्व. कुंभ महापर्व, भारत के हर कोने- कोने से ज्ञानपिपासु मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करता है. लेकिन इसके आकर्षण की सीमा भारत वर्ष की सीमाओं तक सीमित नहीं है, समस्त विश्व के विभिन्न देशों से लोग इस महापर्व में सम्मिलित होते हैं. इन यात्रियों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं. कुछ सैलानी बनकर आते हैं, कुछ भक्त बनकर, कुछ स्वयं को खोजने आते हैं तो कुछ भारत को खोजने आते हैं. कुछ अपनी पुरातन जड़ें जो पीछे भारत में पुरखों ने कहीं छोड़ी थीं उन्हें खँगालने आते हैं. कुछ व्यापारी बनकर आते हैं तो कुछ खरीदार बनकर, कुछ देखने आते हैं तो कुछ सीखने. हर किसी के लिए यहाँ कुछ है, यूंही नहीं इसे महापर्व कहते हैं. व्यक्ति विशेष के अलावा यहाँ विश्व की विभिन्न संस्थाएँ भी सम्मिलित होती हैं जैसे कि विश्व के विभिन्न देशों के महाविद्यालय अपने अनुसंधान केन्द्रों से अधिकारियों को भेजते हैं. विश्व के 12 नामचीन विश्वविद्यालय को 2019 के कुंभ मेले में अनुसंधान के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से आमंत्रण भेजा गया है. इन बड़े नामों में शुमार है- कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, कोलम्बिया विश्वविद्यालय, हावर्ड विश्वविद्यालय, कोरनेल विश्वविद्यालय, एम आई टी, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, प्रिंसटन विश्वविद्यालय, स्टेंफोर्ड विश्वविद्यालय, पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय, येल विश्वविद्यालय. यह अनुसंधान कुंभ के विविध आयाम जैसे कि भीड़ और उसका प्रबंधन, आर्थिक प्रभाव, अपराध निषेध एवं व्यवस्थापन, ट्रैफिक व्यवस्था, स्वच्छता प्रबंधन, वगैरह के बारे में भी अभ्यास करते हैं. इसके अलावा विविध

वैश्विक संस्थाओं के प्रतिनिधि भी इसमें सम्मिलित होते हैं. इस वर्ष प्रयागराज कुंभ में विश्व के 32 देशों के संशोदक एवं पेशेवर आ रहे हैं. इस बार प्रयागराज कुंभ नगरी में भारत सरकार द्वारा 192 देशों को आमंत्रण भेजा गया है. इन देशों के प्रतिनिधियों के लिए विशेष प्रबंधन किए गए हैं. इन प्रतिनिधियों को गंगा दर्शन एवं पूजन कराया जाएगा उसके बाद जूना अखाड़े में भोजन कराया जाएगा. प्रयाग राज के कुंभ मेले की वजह से भारत आने वाले विदेशी सैलानियों की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है. कुंभ इन सैलानियों को आध्यात्मिक शांति के अलावा सांस्कृतिक रोमांच प्रदान करता है. साल 2017 में यूनेस्को के द्वारा कुंभ महापर्व को वैश्विक विरासत घोषित किया गया. कुंभ भारत की प्राचीन गुरुशिष्य परंपरा को आज भी जीवंत रखे हुए है. विभिन्न अखाड़ों के गुरु इन विदेशी शिष्यों को बिना किसी भेदभाव के स्वीकार करते हैं जो वसुधैवकुटुंबकम की भावना को चरितार्थ करते हैं. कुंभ मेले के दौरान विभिन्न देशों में से सबसे ज्यादा सैलानी अमेरिका, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, रूस, अर्जेंटीना, वेनेजुवेला, क्यूबा, साउथ अफ्रीका, अफ़ग़ानिस्तान, बेल्जियम, मलेशिया, कनाडा, सिंगापुर, इंग्लैंड एवं शेष यूरोप से रहते हैं. 15 जनवरी से शुरू हुए और 4 मार्च तक चलने वाले इस महापर्व के शुभारंभ से पहले भी 71 देशों के राजदूत यहाँ आए थे. कुंभ का बहुत ही सकारात्मक प्रभाव भारत के पर्यटन पर होता है. इससे विदेशी मुद्रा की बढ़ोत्तरी भारतीय विदेशी मुद्रा कोष में होती है. इस वक्त डॉलर के मुक़ाबले रुपया कमजोर हुआ है. जिससे विदेशी सैलानी भारत में पहले से कम दाम में पर्यटन का लुत्फ उठा सकते हैं. इसके अलावा ई-वीजा ने विदेशी सैलानियों की पहुँच और भी आसान कर दी है. ज़्यादातर विदेशी सैलानी ई-वीजा पसंद कर रहे हैं. कोई भी राष्ट्र सिर्फ अपनी सामरिक शक्ति के आधार पर विश्व पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकता. राष्ट्र की संस्कृति उसे सौम्य-शक्ति प्रदान करती है, जिसके बलबूते पर राष्ट्र विश्व समुदाय में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करता है. इसी सौम्य-शक्ति के द्वारा राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्राप्त कर मनवांछित परिणाम विश्व राजनीति में प्राप्त कर सकता है. भारत की मृदु-शक्ति है हमारा योग, धर्म, दर्शन, अहिंसा, संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य, आयुर्वेद इत्यादि. कुंभ महापर्व में आने वाले विदेशी सैलानियों के माध्यम से भारत अपनी सौम्य शक्ति की छाप विश्व पटल पर छोड़ता है. आम दिनों में सैलानी भारत की संस्कृति को देखते हैं पर कुंभ के दौरान विदेशी सैलानी भारतीय संस्कृति को जीते हैं, महसूस करते हैं, आत्मसात करते हैं. वे आध्यात्मिकता के रंग में डूब कर सराबोर हो जाते हैं. वे सिर्फ पर्यटक बनकर लुत्फ नहीं उठाते बल्कि अपने आपको विविध रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ देते हैं. अखाड़े की कुटिया या तम्बू में रहते हैं. माँ गंगा की पूजा-अर्चना करते हैं, गंगा के निर्मल जल में डुबकी लगाते हैं, हवन कराते हैं, ध्यान में डूबते हैं, सत्संग सुनते हैं, योग करते हैं, भारतीय परिधान पहनकर हर-हर महादेव के नारे लगाते हैं. एक अनूठा चमत्कारिक अनुभव जो कभी नहीं भुलाया जा सकता क्योंकि भीड़ में भी वे शांति को प्राप्त करते हैं. इस बार प्रयागराज के कुंभ में एक नया ही स्वरूप विदेशी पर्यटकों का न. जर आया. कई विदेशी सैलानी गंगा एक्शन कमेटी से जुड़ कर माँ गंगा की साफ-सफाई के पावन कार्य में सहयोग करते हुए दिखाई दिए. बीते हुए वर्षों के साथ आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि ही पायी गई है. यह हकीकत दर्शाती है कि हजारों वर्ष पुरानी हमारी कुंभ की परंपरा आज भी कितनी समृद्ध है. भारत एक विशाल देश है जो सांस्कृतिक विविधताओं से भरा हुआ है. इसकी सम्पूर्ण झलक पाने के लिए एक जीवन काफी नहीं है. लेकिन कुंभ पर्व पूरे भारत की तस्वीर अपने आप में समेटे हुए रहता है. विदेशी सैलानी जब कुंभ से अपने देश वापस लौटते हैं तो अपने साथ एक अद्वितीय अनुभव लेकर जाते हैं और मन में एक चाह कि अगले फिर किसी कुंभ में वापस इस पावन धरती पर लौटकर आएंगे ताकि इन बीते हुए पलों को वापस जी सकें.

प्रियकान्त हिरालाल रावल

क्षे.का., राजकोट.

सशस्त्र साधु

'साधु' संस्कृत शब्द है जिसका सामान्य अर्थ 'सज्जन व्यक्ति' से है. वर्तमान समय में साधु उनको कहते हैं जो सन्यास दीक्षा लेकर गेरुवा वस्त्र धारण करते हैं. साधु का मूल, धर्म के मार्ग पर चलकर मोक्ष प्राप्त करना है. सशस्त्र साधुओं को सिर्फ साधु नहीं, बल्कि योद्धा भी माना जाता है. उन्हें शास्त्र के साथ-साथ शस्त्र की भी दीक्षा लेनी होती है. वे युद्ध कला में माहिर होते हैं. अक्सर नागा साधु अपने साथ तलवार, फरसा या त्रिशूल लेकर चलते हैं. ये हथियार इसके योद्धा होने का प्रमाण हैं. नागा साधुओं में चिमटा रखना अनिवार्य होता है. धूनी रमाने में सबसे ज्यादा चिमटे ही काम में आते हैं. चिमटा हथियार भी है और औजार भी है. ये नागा साधुओं के व्यक्तित्व का अहम हिस्सा है. नागा साधु एक सैन्य पंथ है और वे एक सैन्य रेजीमेंट की तरह बंटे हैं. त्रिशूल, तलवार, शंख और चिलम से वे अपने सैन्य दर्जे को दर्शाते हैं.

सशस्त्र साधुओं को इतनी कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है कि कोई आम आदमी इसे पार नहीं कर सकता. नागा साधुओं को सेना की तरह तैयार किया जाता है. जब भी व्यक्ति साधु बनने के लिए अखाड़े में जाता है, तो उसे सीधे-सीधे अखाड़े में शामिल नहीं किया जाता. उन्हें दीक्षा लेने से पहले खुद का पिंड दान और श्राद्ध करना पड़ता है. पुराने समय में अखाड़ों में नागा साधुओं को मठों की रक्षा के लिए एक योद्धा की तरह तैयार किया जाता था. ऐसे मठ बनाये गए थे जहां साधुओं को शस्त्र संचालन का अभ्यास कराया जाता था. निर्मोही अखाड़े के मठ और मंदिर उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और बिहार में मौजूद हैं. इन मठों में साधुओं को तीरंदाजी और तलवारबाजी की शिक्षा भी दिलाई जाती थी. इतिहास के पन्ने बताते हैं कि 1260 में महंत भगवानंद गिरि के नेतृत्व में 22 हजार नागा साधुओं ने कनखल स्थित मंदिर को आक्रमणकारी सेना के कब्जे से छुड़ाया था.

भारतीय सनातन धर्म के वर्तमान स्वरूप की नींव आदिगुरु शंकराचार्य ने रखी थी. इनका जन्म 8वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था जब भारतीय जनमानस की दशा और दिशा बहुत बेहतर नहीं थी. सामाजिक उथल-पुथल के उस युग में केवल आध्यात्मिक शक्ति से ही इन चुनौतियों का मुकाबला करना काफी नहीं था. उन्होंने जोर दिया कि युवा साधु व्यायाम करके अपने शरीर को सुदृढ़ बनायें और हथियार चलाने में भी कुशलता हासिल करें. इसलिए ऐसे मठ बने, जहां साधुओं को शस्त्र संचालन का अभ्यास कराया जाता था, ऐसे मठों को अखाड़ा कहा जाने लगा. भारत की धन संपदा से खिंचे तमाम आक्रमणकारी यहां आ रहे थे जिससे शांति-व्यवस्था बाधित हो रही थी. साधुओं ने मठों-मंदिरों की संपत्ति को लूटने वालों से मुकाबला करने के लिए शस्त्र उठा लिया एवं सशस्त्र शाखाओं के रूप में अखाड़ों के स्थापना की शुरुआत की. कई बार स्थानीय राजा-महाराजा विदेशी आक्रमण की स्थिति में सशस्त्र साधुओं का सहयोग लिया करते थे. नागा साधुओं की एक बड़ी पहचान है, उनका शस्त्रधारी होना. किसी के हाथ में त्रिशूल, किसी के हाथ में तलवार, कोई गदाधारी! कहते हैं नागा साधुओं के लिए शस्त्र की पूजा करना और उसे धारण करना भी उनके सन्यास जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है. इसकी कई वजहें हैं. दरअसल नागा साधुओं का मानना है कि समाज और धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र धारण करना जरूरी है. अब्दाली की सेना मथुरा से यमुना नदी पार कर गोकुल को लूटने के इरादे से आयी. वहां पर सशस्त्र नागा साधुओं के एक बड़े दल ने अब्दाली सेना का जमकर सामना किया. नागा साधुओं की वीरता से गोकुल लूट-पाट से बच गया. इनके गुस्से के बारे में प्रचलित किस्से-कहानियां भी भीड़ को इनसे दूर रखती हैं. लेकिन वास्तविकता यह है कि यह शायद ही किसी को नुकसान पहुंचाते हैं. हां, लेकिन अगर बिना कारण कोई इन्हें उकसाए या तंग करे तो इनका क्रोध भयानक हो उठता है. कहा जाता है कि भले ही दुनिया अपना रूप बदलती रहे लेकिन शिव और अग्नि के ये भक्त इसी रूप में रहेंगे.

-संतोष कुमार राम,
क्षे. का. रायपुर,

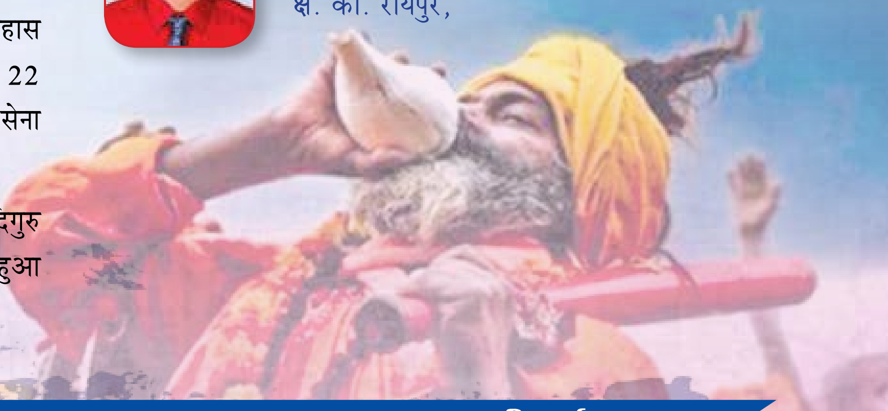

कुंभ तथ्य और मिथक

आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है 'कुंभ'. ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुंभ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमंत्रण के खींच कर ले आता है. कुंभ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था परंतु इसका इतिहास समय द्वारा स्वयं ही बना दिया गया. वैसे भी धार्मिक परम्पराएं हमेशा आस्था एवं विश्वास के आधार पर टिकती हैं न कि इतिहास पर. यह कहा जा सकता है कि कुंभ जैसा विशालतम् मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है.

कुंभ का शाब्दिक अर्थ है कलश और यहाँ 'कलश' का संबंध अमृत कलश से है. बात उस समय की है जब देवासुर संग्राम के बाद दोनों पक्ष समुद्र मंथन को राजी हुए थे. मथना था समुद्र तो मथनी और नेति भी उसी हिसाब की चाहिए थी. ऐसे में मंदराचल पर्वत मथनी बना और नाग वासुकी उसकी नेति. मंथन से चौदह रत्नों की प्रप्ति हुई जिन्हें परस्पर बाँट लिया गया परन्तु जब धन्वन्तरि ने अमृत कलश देवताओं को दे दिया तो फिर युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई. तब भगवान विष्णु ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात कही और अमृत कलश का दायित्व इंद्र-पुत्र जयंत को सौंपा. अमृत-कलश को प्राप्त कर जब जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु भाग रहा था तभी इसी क्रम में अमृत की बूंदे पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरीं-हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज. चूँकि विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं वृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुंभ एवं मेष) में विचरण के कारण ये सभी कुंभ पर्व के द्योतक बन गये. इस प्रकार ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण कुंभ पर्व ज्योतिष का पर्व भी बन गया. जयंत को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है. यही कारण है कि कालान्तर में वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुंभ मेले का आयोजन होता है.

ज्योतिष गणना के क्रम में कुंभ का आयोजन चार प्रकार से माना गया है

- वृहस्पति के कुंभ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा-तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है.
- वृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है.
- वृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में गोदावरी तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है.
- वृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में शिप्रा तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है.

धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुंभ पर्व को पुन: तत्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, जिससे कुंभ की उपयोगिता सिद्ध होती है. कुंभ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है. प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है. कहा भी गया है "यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" अर्थात जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इसलिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुंभ. विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है कुंभ, और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुंभ-पर्व का प्रसाद है.

किसी उत्सव के आयोजन में भारी जनसम्पर्क अभियान, प्रोन्नयन गतिविधियां और अतिथियों को आमंत्रण प्रेषित किये जाने की आवश्यकता होती है, जबकि कुंभ विश्व में एक ऐसा पर्व है जहाँ कोई आमंत्रण अपेक्षित नहीं होता है तथापि करोड़ों तीर्थयात्री इस पवित्र पर्व को मनाने के लिये एकत्र होते हैं.

प्राथमिक स्नान कर्म के अतिरिक्त पर्व का सामाजिक पक्ष विभिन्न यज्ञों, वेद मंत्रों का उच्चारण, प्रवचन, नृत्य, भक्ति भाव के गीतों, आध्यात्मिक कथानकों पर आधारित कार्यक्रमों, प्रार्थनाओं, धार्मिक सभाओं के चारो ओर घूमती हैं, जहाँ सिद्धांतों पर वाद-विवाद एवं विमर्श प्रसिद्ध संतों एवं साधुओं के द्वारा किया जाता है और मानकस्वरूप प्रदान किया जाता है. पर्व का एक महत्वपूर्ण भाग गरीबों एवं वंचितों को अन्न एवं वस्त्र का दान कर्म है और संतों को आध्यात्मिक भाव के साथ गाय एवं स्वर्ण दान किया जाता है.

मानव मात्र का कल्याण, सम्पूर्ण विश्व में सभी मानव प्रजाति के मध्य वसुधैव कुटुम्बकम के रूप में अच्छा संबंध बनाये रखने के साथ आदर्श विचारों एवं गूढ़ ज्ञान का आदान प्रदान कुंभ का मूल तत्व और संदेश है जो कुंभ पर्व के दौरान प्रचलित है. कुंभ भारत और विश्व के जन सामान्य को अविस्मरणीय काल तक आध्यात्मिक रूप से एकताबद्ध करता रहा है और भविष्य में भी यह कार्य जारी रहेगा.

धर्मेश तन्ना
वेरावल शाखा, राजकोट

कुंभ और महिलाएं

वेदों में नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण और गरिमामयी स्थान प्राप्त है. वहाँ स्त्रियाँ की शिक्षा-दीक्षा, शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का जो सुंदर वर्णन है वो समाज के किसी धर्म ग्रंथ में नहीं है. कुंभ भी इससे अछूता नहीं रह गया है.

किंवदंती है कि समुद्र मंथन के दौरान देवताओं और देवों में अमृत के लिए लड़ाई हुई, उसी लड़ाई के मध्य अमृत की दो-चार बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिर गयीं, उसी वजह से अब इन जगहों पर कुंभ मेला होता है. इस साल यह प्रयागराज में 15 जनवरी से 04 मार्च तक मनाया जा रहा है.

कुंभ के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की बात करें तो सबसे अधिक चिंतनीय विषय उनका अस्तित्व होता है महिलाओं को स्नान करने का अधिकार तो है किन्तु एक सन्यासी बनाने का नहीं, जब महिलाओं के नागा सन्यासी बनाने की बात उठी तो कई नागा साधुओं और अखाड़ों ने इसका विरोध किया. उनका सीधा तर्क यही था कि महिलाओं को सन्यासी बनने और सांसारिक बंधनों से मुक्त होने का कोई अधिकार नहीं है.

परंतु इस बार कुंभ में पहली बार सर्व महिला अखाड़ा की स्थापना हुई. इससे पहले जितने भी अखाड़े हैं सभी आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित हैं और सभी में सिर्फ पुरुष ही भाग लेते हैं. आश्चर्यजनक बात ये है कि महिलाओं के इस कदम की इतनी उपेक्षा हुई और गलत ठहराया गया. पर इस वर्ष 1500 महिलाओं ने सन्यासिनी और नागा के रूप में गेरुआ वस्त्र पहन कर स्नान किया. और पाँच दशनाम जूना अखाड़ा ने इन नागा साध्वियों को दीक्षा दी.

कुंभ के परिप्रेक्ष्य में बात करें तो इस बार महिलाओं की सुरक्षा का भी अत्यधिक ध्यान रखा गया है. महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत करीब 35 घाटों पर 1100 वस्त्र बदलने के कमरे स्थापित किए गए हैं. इसके साथ ही महिलाओं की सुरक्षा का ध्यान रखते हुये करीब 41 घाटों पर जल पुलिस कर्मियों द्वारा 16 कंट्रोल रूम बनाए गए हैं. इन सब के साथ-साथ गौर करने की बात ये भी है कि एक पुरुष प्रधान कुंभ मेले में महिला सशक्तिकरण की रेखा आर्य को महामंडलेश्वर के तर्ज पर सम्मानित किया गया और उन्होंने शाही स्नान में भी भाग लिया.

इन सब बातों से ये ज़रूर साबित होता है कि हमारा देश महिला सशक्तिकरण और उनके सम्मान के हित में जरूर अग्रसर हो रहा है. पुरानी प्रथाओं और रीतियों के मुताबिक महिलाओं को हीन दृष्टि से देखा जाता था. और इस प्रकार के पवित्र स्थलों में उनकी उपस्थिति का कोई महत्व नहीं होता था. हमारे देश में स्त्री शक्ति की पूजा तो होती है परंतु वही स्त्री जब मनुष्य रूप में हो तो उसे सिर्फ उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है. कुंभ के दौरान सभी पुरुष, साधु, नागा, शंकराचार्य, पावन नदियों में स्नान करके असीम शक्तियों की अपेक्षा रखते हैं, मोक्ष की कामना करते हैं और अपने पापों से मुक्त होते हैं. ये सभी पावन नदियां स्त्री शक्ति की प्रतीक हैं. परंतु जब इन्हीं नदियों में स्नान करके महिलाओं के साध्वी बनाने की बात की जाती है तो वे उपहास का पात्र होती हैं.

फिर भी अब बहुत हद तक इस कुरीति और संकीर्ण सोच का ह्रास हुआ है, इस प्रकार की व्यवस्थाएं महिलाओं को और भी सशक्त और स्वच्छन्द बना रही हैं. कुंभ मेले में हुये परिवर्तन सूरज की नयी किरण की तरह हैं और सारी व्यवस्थाएं सराहनीय हैं. सिर्फ हमारे ही देश में नहीं बल्कि विदेशों में भी ऐसी व्यवस्था का बखान हो रहा है. वेदों और ग्रन्थों में भी कहा गया है,

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:'

अर्थात जहां नारी को सम्मान देते हैं उसकी पूजा करते हैं, वहाँ देवता निवास करते हैं और सर्व मनोरथ की सिद्धि होती है. इसीलिए ये अत्यंत महत्वपूर्ण है कि महिलाओं को पुरुषों की भांति सम्मान मिले और उनके अस्तित्व को पहचान मिले.

नूपुर झा
सिलीगड़ी मुख्य शाखा, सिलीगुड़ी.

कुंभ और अध्यात्म

कुंभ महोत्सव का हिंदू धर्म में बड़ा महत्व है. मान्यता है कि जिन स्थानों पर अमृत वर्षा हुई वहाँ कुंभ का आयोजन होता है. अत: कुंभ को अमृत वर्षा के संदर्भ में भी देखा जाता है. कुंभ का प्रतीक सूर्योदय होता है जो हमें प्रकाश की ओर ले जाता है. माना यह भी जाता है कि सूर्य के कुंभ राशि में प्रवेश के समय पवित्र नदी में स्नान करने से समस्त पाप धुल जाते हैं व मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है. कुंभ महोत्सव प्रयागराज में गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती के संगम तट, हरिद्वार में गंगा, नासिक में गोदावरी व उज्जैन में नर्मदा नदी के तट पर बारी-बारी से व अलग-अलग ग्रह राशियों के संयोजन से होने वाले योग के समय मनाया जाता है. कुंभ को कुछ ने अध्यात्म से जोड़ा तो किसी ने भावना से जोड़कर इसकी व्याख्या की. वैसे आध्यात्मिक मान्यता यह है कि कुंभ के समय ग्रह समूह पृथ्वी पर विचरकर यज्ञ आदि का पोषण करते हुए धरती की कल्याण कामना हेतु तेज प्रकाश उत्सर्जित करते हैं. इनके तेज से सभी प्रकार के पापों का नाश होता है और इसी योग को कुंभपर्व योग माना जाता है. आध्यात्मिक दृष्टि से कुंभ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है.

प्रयागराज के कुंभ स्थल को ब्रह्माण्ड का उद्‌गम और पृथ्वी का केंद्र माना जाता है. ऐसी मान्यता है कि ब्रह्माण्ड की रचना से पूर्व ब्रह्माजी ने यहीं पर अश्वमेघ यज्ञ किया था. इस यज्ञ के प्रतीक के तौर पर कुछ मंदिर आज भी यहां मौजूद हैं. कुंभ को लेकर अतीत में हुए अनुसंधानों और नासा को मिले प्रमाणों से यह साफ है कि गंगा यमुना के संगम पर सरस्वती नदी मिथक नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक नदी है. तथापि सरस्वती नदी अब विलुप्त हो गई है और उसी मार्ग से अब यमुना बह रही है. ऋग्वेद में उल्लिखित सरस्वती नदी के तीन स्वरूप यथा भौतिक, आध्यामिक और दैविक बताए गए हैं और कुंभ के समय इस नदी में डुबकी लगाने से आत्मा को सहजता से उच्च लोक की प्राप्ति हो जाती है और इसमें स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है.

कुंभ के बारे में पुराणों में जो कहानी मिलती है वह समुद्र मंथन से जुड़ी हुई है. महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण जब इंद्र और देवता कमजोर पड़ गए, तब राक्षसों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया. ऐसे में सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास पहुंचे, तब भगवान विष्णु ने देवताओं को दैत्यों के साथ मिलकर क्षीर सागर का मंथन करके उसमें से अमृत निकालने की सलाह दी. पवित्र अमृत की प्राप्ति के लिए देवताओं और राक्षसों ने मिलकर समुद्र मंथन किया. इस मंथन के दौरान अनगिनत मूल्यवान वस्तुओं की उत्पत्ति हुई. अमृत निकलते ही देवताओं के इशारे पर इंद्र के पुत्र जयंत अपने पिता की सत्ता को अक्षुण्ण रखने के लिए अमृत कुंभ लेकर आकाश में उड़ गया. दैत्य गुरु शुक्राचार्य के आदेश पर राक्षसों ने अमृत के लिए जयंत का पीछा कर उसे पकड़ लिया. देवता और राक्षस दोनों उस अमृत कुंभ पाने के लिए आपस में लड़ने लगे. लड़ाई के दौरान कलश से अमृत की चार बूंदें धरती पर गिरीं. पहली बूंद प्रयागराज में, दूसरी हरिद्वार में, तीसरी बूंद उज्जैन तथा चौथी बूंद नासिक में गिरी. यही कारण है कि कुंभ मेला इन्हीं चार स्थलों पर लगता है.

अमृत के लिए 12 दिनों तक युद्ध चला. इस दौरान 'चंद्रमा ने घट से प्रस्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से' घट की रक्षा की. कलह शांत करने के लिए विष्णु भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिलाया. पृथ्वी लोक में स्वर्ग लोक का एक दिन एक

साल के बराबर माना जाता है. इसलिए कुंभ भी बारह होते हैं. इसमें से चार कुंभ पृथ्वी पर और शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं. मनुष्य जाति को अन्य आठ कुंभ मनाने का अधिकार नहीं होता है. यह कुंभ वही मना सकता है जिसमें देवताओं के समान शक्ति व यश प्राप्त हो. यही कारण है कि शेष आठ कुंभ केवल देवलोक में ही मनाए जाते हैं. जिस समय में चंद्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र-सूर्यादिक ग्रह जब साथ आते हैं, उस समय कुंभ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चंद्रमा और वृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थीं, वहाँ-वहाँ कुंभ पर्व मनाया जाता है.

कुंभ महोत्सव में आध्यात्मिक चेतना का आलम यह होता है कि समाज की कुरीतियों और आडंबरों से खुद को मुक्त करने का संदेश देने वाले संत से लेकर ग्रहों की दशा बता सचेत करने वाले व तंत्र-मंत्र से सुख-शांति देने का दावा करने वाले भी यहाँ अनेक मिलते हैं. सबका अपना-अपना दर्शन, अपना-अपना सेवा कार्य होता है. यहाँ किसी के पास सुसज्जित टेंट होता है तो किसी के पास पर्णकुटि. कुछ भक्त तो कड़ाके की ठंड में भी नीली छतरी के नीचे रात बिताते हैं. परंतु किसी को किसी से शिकायत नहीं होती है. इसीलिए कहते हैं कि कुंभ पर्व की आत्मा अध्यात्म चिंतन, मनन, सत्संग और मंथन है.

क्योंकि मेरा बचपन प्रयागराज में ही गुजरा, अत: बचपन से ही मुझे कुंभ महोत्सव को देखने व समझने का अवसर प्राप्त हुआ. बचपन में तो सब सामान्य सा लगता था, परंतु जैसे-जैसे समझ बढ़ी कुंभ के मायने भी बदलते चले गए. वहाँ हर तरफ अध्यात्म की बयार बहती सी महसूस होती है. कहीं कथावाचक पंडालों में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की लीलाओं का वर्णन कर रहे हैं तो कहीं भद्गवतगीता में रचित जीवन के सार और सद्मार्ग पर चलने को प्रेरित करते प्रसंगों को श्रद्धालुओं को समझाने का प्रयास किया जाता है. दूर-दूर तक पक्तियों में बने कल्पवासियों के आश्रय स्थलों की शांति जीवन के किसी और दृष्टिकोण को उजागर करती है. अखाड़े, महामंडलेश्वर व महंतों के विशाल पंडाल भी कुछ विशेष संदेश देते प्रतीत होते हैं. हर जगह "अनंत, हरि कथा अनंता.." चरितार्थ होती प्रतीत होती है. जहां भी नजर जाती है तप और जप के माध्यम से परमात्मा को प्राप्त करने की उत्कंठा ही दिखती है. ध्यान, हठ योग, क्रिया योग और सहज योग द्वारा अंत:करण को शुद्ध करने का मार्ग प्रशस्त होता दिखता है. महसूस यह होता है कि जैसे जीवन में अध्यात्म का उद्देश्य सत्य की खोज ही तो है.

अध्यात्म की अनुभूति सभी प्राणियों में समान रूप से व निरंतर होती रहती है. अध्यात्म का अर्थ है अपने भीतर के चेतन तत्व को जानना, मानना और उसका दर्शन करना. कुंभ के इसी तत्व को भगवतगीता में अध्यात्म कहा गया है. 'परमं स्वभावो ध्यात्ममुच्यते' अर्थात आत्मा परमात्मा का अंश है, यह तो सर्वविदित है. परंतु, इस संबंध में जब शंका या संशय की स्थिति अधिक क्रियाशील हो जाती है, तब स्वयं से हमारी दूरी बढ़ने लगती है. जैसे, यदि मिट्टी का बर्तन मिट्टी से अलग पहचान बनाने की कोशिश करने लगे तो उसका क्या हश्र होगा? गीता में यह भी बताया गया है कि यंयंवापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्, तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावित: अर्थात 'हे कुंतीपुत्र अर्जुन! मनुष्य अंत काल में जिस भाव को स्मरण करते हुए शरीर का त्याग करता है, उसे वही प्राप्त होता है; क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहता है.' ऐसी स्थिति का यदि हमें पहले ही ज्ञान हो जाए तो शायद हम अपने जीवन में पूर्ण आनंद की अनुभूति पा सकते हैं. कुंभ में भक्त इसी भाव के साथ एक माह का कल्पवास करते हैं. उन्हें यहाँ जो आनंद मिलता है और जिस भाव के साथ वे वापस लौटते हैं, वही तो अध्यात्म है.

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में काबुल व सरहिंद के व्यवसायियों को भारत में काफी सम्मान की नजरों से देखा जाता था. वे भी कुंभ की महिमा से उसी तरह जुड़े थे, जैसे अन्य राज्यों से आने वाले श्रद्धालु जुड़े होते थे. कुंभ मेला क्षेत्र में विविधता में एकता की भावना भी साकार होती दिखती है. यहाँ की विविधता का यह रूप किसी राजनीतिक विचार से नहीं उपजता, वरन यह हमारी परंपरा के विस्तार को बताने वाला होता है, और यही भावना कुंभ की आध्यात्मिक जड़ों में है.

कुंभ सदियों से अध्यात्म का सशक्त माध्यम रहा है. इसके लिए किसी को निमंत्रण नहीं दिया जाता, किसी को बुलाया नहीं जाता, कुंभ के आयोजन में जाने के लिए न कोई प्रचार होता था और न ही अभियान चलता है. हिन्दू पंचांग में जो तिथि छपती है, श्रद्धालु उसे पढ़कर कुंभ पर्व पर खिंचे चले आते हैं. वे सत्संग की प्रेरणा को विश्व के हर कोने तक पहुंचाते हैं. यह सनातन परंपरा सदियों से चली आ रही है और अनंत काल तक यूं ही चलती रहेगी.

कृष्ण कुमार यादव,
क्षे.म.प्र.का. बेंगलूरु

किन्नर अखाड़ा

जो लैंगिक रूप से न तो नर होते हैं, न मादा उन्हें ही किन्नर यानि हिजड़ा कहा जाता है. हिजड़ों की चार शाखाएँ हैं- बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा. बुचरा पैदाइशी हिजड़े होते हैं, नीलिमा स्वयं बने, मनसा स्वेच्छा से शामिल हुए और हंसा शारीरिक कमी के कारण बने हिजड़े हैं. हिजड़े के रूप में झूठ या स्वांग रचने वाले को अबुआ और जिन्हें जबरन हिजड़ा बनाया जाता है उन्हें छिबरा कहते हैं.

वर्तमान परिदृश्य में हिजड़ा शब्द जैसे ही हमारे जेहन में उभरता है वैसे ही व्यंग्यात्मक और घृणित भाव हमारे चेहरे पे उतर आता है. हालांकि हम अपने इतिहास के झरोखे में देखें तो किन्नर समुदाय भारतीय संस्कृति का मुख्य हिस्सा था. रामायण में इस समुदाय का उल्लेख है- जथा जोगु करि विनय प्रणामा, विदा किए सब सानुज रामा. नारि पुरुष लघु मध्य बडेरे, सब सनमानि कृपानिधि फेरे.. (रामचरितमानस अयोध्या कांड-398/4). द्वापर युग में भी अर्जुन अज्ञातवास के दौरान किन्नर का वेष धारण करते हैं. कुरुक्षेत्र में भीष्म पितामह की मौत का कारण किन्नर शिखंडी है. वात्स्यायन के कामसूत्र में भी किन्नर का उल्लेख है. भाषा के इतिहास पर नज़र डालें तो संस्कृत में तीन लिंग थे जो हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में दो ही रह गए. संस्कृत का तृतीय लिंग भारतीय समाज में तीसरे लैंगिक समुदाय के अस्तित्व को दर्शाता है. भारत में तुर्कों, अफगानों, व मुगलों के समय में भी किन्नर शाही हरम में निवास करते थे. अंग्रेजों के आगमन के उपरांत धीरे-धीरे किन्नर समुदाय समाज की मुख्य धारा से कटा रहा और अंततः हाशिये पे चला गया. आज भारतीय जनमानस में किन्नर या हिजड़ा शब्द एक गाली है, साथ ही साथ सम्बोधन है- कायरता का, लिजलिजापन का, यौन विकृति का. यह गंभीर विषाद का विषय है कि तकनीकी और वैज्ञानिक रूप से विकसित हो रहा हमारा समाज किन्नरों के प्रति विद्रूप, क्रूर और अमानवीय है. जिस तरह एक पुरुष का जन्म होता है, स्त्री का जन्म होता है उसी तरह एक किन्नर का भी जन्म होता है. उसका जन्म अप्राकृतिक नहीं बल्कि प्रकृति का ही सृजन है. हिजड़ा भी मनुष्य है, उसके अंदर भी संवेदनाएँ हैं, ममत्व है, कला है, विज्ञान है, फिर भी हमारा समाज उसे हिकारत भरी नज़रों से देखता है, तिरस्कार रूपी चाबुक से क्रूरतापूर्वक उसके कोमल अंतस की महीन सतह को बारंबार उधेड़ता है. इस तिरस्कार की शुरुआत सबसे पहले घर में

ही होती है. किन्नरों के माँ - बाप ही सबसे पहले उसे दुत्कार देते हैं. अगर कोई माँ-बाप उसे अपने साथ रखना भी चाहते हैं तो लोगों के चुभते व्यंग बाण उन्हें ऐसा करने से रोक देते हैं. और बचपन से ही प्रेम शब्द हिजड़ों की तीसरी दुनिया में बेबस, लाचार और अपाहिज नजर आता है. अपने प्रति हो रहे भद्दे मज़ाक, उपहास और व्यंग्य को अपनी नियति समझ बैठते हैं या साफ और कठोर लहजे में कहें तो रोटी का जुगाड़. स्कूलों,कालेजों, निजी और सरकारी दफ्तरों में उनके लिए अप्रत्यक्ष रूप से नो-एंट्री का बोर्ड लगा हुआ है. जिसके कारण हमारे समाज में किन्नरों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति काफी दयनीय है. वो सड़कों, रेलगाड़ियों में भीख मांगकर या अपना शरीर बेचकर दो वक़्त की रोटी का जुगाड़ कर पाते हैं. नवदंपत्ति या किसी के घर बच्चा होने पर नाच-गाकर बधाई देने वाला हिजड़ा समुदाय भूख और ज़िल्लत की जिंदगी जीने को अभिशप्त है. दरअसल मर्यादारूपी झूठे और खोखले कवच में रहने वाला हमारा सभ्य समाज किन्नरों को उपेक्षित और मर्यादा विहीन समझता है. उनके पास रोजगार के अवसर नहीं हैं. वो करना चाहते भी हैं तो समाज उन्हें करने नहीं देता, उन्हें अपने आस-पास स्वीकार नहीं करता. जिसका परिणाम हुआ कि वे हमसे अलग होते गए. और हमारे प्रति उदासीन हो गए. जिसका . फायदा नकली हिजड़ों ने उठाया. इन नकली हिजड़ों ने साड़ी पहनकर लोगों को डरा-डराकर भीख मांगना शुरू किया. भीख न मिलने पर

दादागिरी और मारपीट करने लगे. समाज में उनकी छवि और विकृत हो गई.

कुछ सामाजिक संस्थाओं, संगठनों के प्रयासों के परिणामस्वरूप 15 अप्रैल,2014 को माननीय उच्चतम न्यायालय ने किन्नरों को स्त्री और पुरुष से अलग तीसरे लैंगिक समूह की तरह मान्यता देने का ऐतिहासिक फैसला दिया. साथ ही साथ सरकार को आदेश दिया कि इस थर्ड जेंडर को समाज का एक उपेक्षित और पिछड़ा वर्ग मानकर उसके उत्थान के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराएँ. ताकि किन्नरों को उनके मौलिक अधिकारों से वंचित न रखा जाए और उनके मानवीय अधिकारों की रक्षा की जा सके. उच्चतम न्यायालय का ये फैसला स्वागत योग्य है. ये केवल किन्नर समुदाय की जीत नहीं बल्कि समूची मानवता की जीत है. इस आदेश से असली किन्नरों की सामाजिक स्थिति बदलेगी और नकली किन्नरों पर पर्दा गिर जाएगा.

तीसरे लैंगिक समुदाय के उत्थान के लिए प्रयास लगातार जारी है. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, शबनम मौसी, जैसे कई नाम हैं जो अपने समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं. ये लोग देश के किन्नरों को एकजुट कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं. भविष्य में जब इस समाज द्वारा मानवीय अधिकारों की लड़ाई वृहत स्तर पर लड़ी जाएगी तो समाज भी उन्हें स्वीकार करेगा.

उज्जैन में आयोजित वर्ष 2016 का महाकुंभ थर्ड जेंडर की दुनिया को नई पहचान दी है. इस महाकुंभ में प्रथम बार थर्ड जेंडर संप्रदाय के लिए अलग स्थान निर्धारित किया गया था जहां लाखों श्रद्धालुओं ने उनसे आशीर्वाद और दुआएं लेकर उनके प्रति प्रेम, आस्था और विश्वास की डोर से उन्हें स्वीकार करने की पहल की. इसी वर्ष हाल में ही प्रयागराज में सम्पन्न हुए अर्धकुंभ में पहली बार किन्नर अखाड़े को शामिल किया गया है.गौरतलब है कि किन्नर अखाड़े की स्थापना 2016 में उज्जैन के सिंहस्थ कुंभ में हुई थी. लेकिन अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के तहत आने वाले किसी अखाड़े ने किन्नर अखाड़े को मान्यता नहीं दी थी. पहली बार प्रयागराज कुंभ में किन्नर अखाड़े को मान्यता मिली है.सबसे बड़े शैव अखाड़े श्री पंचदशनाम जूना अखाड़े ने लिखित समझौते के तहत किन्नर अखाड़े को मान्यता प्रदान कर दी है. इसके साथ ही किन्नर अखाड़े का अपना वजूद भी बचा हुआ है. उनकी पेशवाई निकाली गई. इस अखाड़े की महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी हैं. जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवदेशानन्द गिरि ने किन्नर अखाड़े को जूना अखाड़े का अभिन्न अंग और हिस्सा करार दिया. उन्होंने कहा कि जिनके दर्शन मात्र से दरिद्रता और सारे विकार दूर हो जाते हों, उसे अपने से कौन दूर रखना चाहेगा. किन्नरों के दर्शन से धन की ही नहीं ज्ञान की कमी भी दूर हो जाती है. किन्नर अखाड़े की आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने कहा - " कुंभ में एंट्री के लिए हम लोगों ने लंबी लड़ाई लड़ी है. काफी मेहनत और मशक्कत के बाद मंज़िल मिली है. ये इतिहास है प्रयागराज में. उज्जैन में हमारा अखाड़ा स्थापित हुआ था. प्रयाग में इसका वजूद बरकरार है.ये कुंभ सच में दिव्य कुंभ है, ये कुंभ भव्य कुंभ है और ये कुंभ दर्शाता है कि भारत की विविधता और सनातन धर्म के विस्तार को जो हर एक जाति और हर एक लैंगिकता को अपने अंदर समाता है. कुंभ में किन्नर अखाड़ों को मिली मान्यता, शाही स्नान और देवत्व यात्रा के दौरान हजारों श्रद्धालुओं से मिला प्रेम, सहयोग विशाल जनसमूह की जय-जयकार की ध्वनि,किन्नर समुदाय की भारतीय समाज की मुख्यधारा में बढ़ रहे उनकी स्वीकार्यता का जयघोष है. प्रयागराज कुंभ में किन्नर अखाड़ों को मिली मान्यता ने न केवल अपने देश में बल्कि विश्व के मंच पर भी किन्नर समुदाय की आवाज़ को मजबूत किया है.

कुंभ में किन्नरों की सहभागिता तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा आदेशित संवैधानिक अधिकारों के बावजूद समाज किन्नरों को पूर्णतया स्वीकार करने में हिचक रहा है. इसका कारण वर्षों से हमारे दिमाग में रची-बसी घृणा और समवादी मानसिकता है जो कंक्रीट की तरह मजबूत है और जिसको पूर्णतया तोड़ना अभी समय के गर्भ में है. फिर भी ये स्वीकार करना होगा कि दिन-प्रतिदिन विकसित हो रहे भारतीय समाज ने अब इन्हें थोड़ी सी जगह देनी शुरू कर दी है, उनको दुतकारने के बजाय थोड़ा सा ही सही लेकिन सम्मान देना शुरू कर दिया है. अत: हम ये आशा कर सकते हैं कि निकट भविष्य में किन्नर समुदाय समाज में सामान्य लोगों की भांति अपने मानवीय और मौलिक अधिकारों के साथ जीवन यापन कर सकेंगे और सम्मान के साथ सर उठाकर जी सकेंगे.

निशांत कुमार
क्षे.का, प्रयागराज

प्रयागराज के शाही स्नान

शाही स्नान का कुंभ मेले में अपना महत्व होता है. शाही स्नान अर्थात विशिष्ट समय पर नदी के पवित्र जल में साधुओं द्वारा स्नान करना. ऐसा माना जाता है कि कुंभ का यह स्नान जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाता है. हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार त्रिवेणी संगम के पवित्र जल में डुबकी लगाकर मनुष्य अपने समस्त पापों को धो डालता है. इस वर्ष प्रयागराज के महा कुंभ मेले में कुल आठ प्रमुख तिथियों पर शाही स्नान हुये. पहला स्नान मकर संक्राति के दिन शुरू हुआ और आठवां शाही स्नान महाशिवरात्रि के दिन समाप्त हुआ. इस दौरान महानिर्वाणी और अटल अखाड़ा, निरंजनी और आनंद अखाड़ा, जूना अग्नि आवाहन अखाड़ा, निर्मोही अखाड़ा, दिगंबर अखाड़ा, किन्नर अखाड़ा आदि अखाड़ों ने शाही स्नान किया. इन शाही स्नानों की झांकियां फोटोग्राफर श्री. एस. के. यादव के साथ आपके लिए प्रस्तुत हैं.

- अनिल रंजन भौमिक
सेवानिवृत्त स्टाफ,
प्रयागराज

कुंभ आयोजन में आने वाली समस्याएँ/उपाय

विश्व का सबसे बड़ा त्योहार "कुंभ" जो कि भारतवर्ष के प्रयागराज,उज्जैन,हरिद्वार एवं नासिक की पावन धरती पर प्रत्येक छः वर्षों के अंतराल पर अर्धकुंभ एवं प्रत्येक बारह वर्षों के अंतराल में कुंभ आयोजित किया जाता है. कुंभ हिन्दू धर्म का सबसे बड़ा एवं पवित्र त्योहार है.

वर्ष 2019, प्रयागराज में अर्धकुंभ ('महाकुंभ') 14 जनवरी से 4 मार्च तक मनाया गया. जिसमें सरकारी आकड़ों के हिसाब से लगभग 25 करोड़ श्रद्धालुओं ने न केवल भारतवर्ष के विभिन्न जगहों बल्कि विश्व के कई देशों के श्रद्धालुओं ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई. पहली बार मेले क्षेत्र को दोगुना कर 3200 हेक्टयर में कुल 20 सेक्टरों का निर्माण किया गया. प्रथम बार इस त्योहार में अक्षयवट व सरस्वती कूप खोला गया. प्रयागराज में इस वर्ष किए जाने वाले आयोजन में प्रत्येक स्तर पर विभिन्न व्यवस्था की गयी थी.

- इसके सफल आयोजन करने में आने वाली अनगिनत समस्याओं से सामना करना पड़े. जिसमें कुछ प्रमुख मूलभूत आने वाली समस्याओं में श्रद्धालुओं की भीड़ एवं ट्रैफिक का प्रबंधन करना है. एक निश्चित समय के लिए विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले शहर प्रयागराज में भीड़ के प्रबंधन के लिए कुंभ के अंदर के क्षेत्र को दोगुना किया गया. सभी क्षेत्र को बीस सेक्टर में बांटा गया और प्रत्येक सेक्टर में जन सुविधा की व्यवस्था सुचारु रूप से की गयी. एक सेक्टर से दूसरे सेक्टर में जाने के लिए 22 प्लाटून के पुल का निर्माण कराया गया. स्नान करने के लिए कई घाटों के निर्माण के साथ-साथ विदेशी सैलानियों के स्नान की व्यवस्था भी अलग से की गयी. श्रद्धालुओं की भीड़ का प्रबंधन करने के लिए जगह-जगह पर सुरक्षा दल अर्थात आरएएफ़, सीआरपीएफ़ पुलिस, आर्मी तैनात किए गए एवं लगातार श्रद्धालुओं को सही दिशा निर्देशों के द्वारा नियंत्रण में रखा गया. स्नान के क्षेत्र के आस-पास किसी भी प्रकार की अनावश्यक दुकानें नहीं थीं. अंदर का प्रबंध करने के लिए 264 सड़कों का चौड़ीकरण, 64 यातायात चौराहों का पुन:निर्माण एवं 40,700 से अधिक एल. ई .डी. लाइट लगाई गयीं (एक सरकारी आंकड़े के अनुसार). शहर के मुख्य रेलवे स्टेशन के अलावा सभी आस- पास के रेलवे स्टेशन का उच्चीकरण किया गया. विशेष ट्रेनें चलाकर ट्रेन यातायात की सुविधा बढ़ाई गयी. इसके अलावा कई ट्रेनों को मुख्य स्टेशन से न चला कर पास के स्टेशन से चलाया गया जिससे भीड़ एक ही स्टेशन में न जुट पाये. 524 शटल बसों द्वारा श्रद्धालुओं को लगातार यातायात की सुविधा दी गयी. मुख्य स्नान के दिन मेला क्षेत्र के आस-पास सभी प्रकार के वाहन के आवागमन पर रोक लगाकर केवल पैदल चलने की ही अनुमति दी गयी, 5 लाख से अधिक वाहनों के लिए 94 पार्किंग स्थल, 524 शटल बस,1000 से अधिक रिक्शा की सुविधा उपलब्ध करवाकर सड़कों का चौड़ीकरण किया गया.
- दूसरी सबसे बड़ी चुनौती सुरक्षा की थी जिसके लिए विभिन्न पुलिस थानों की अवस्थापना एवं विकास व उच्चीकरण का निर्माण, ड्रोन कैमरे से निगरानी, कई सुरक्षा कर्मी, अग्निशमन केंद्रों का निर्माण, 40 वॉच टावर बनाए गए. इंट्रीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम प्रत्येक सेक्टर के साथ पूरे शहर पर निगरानी रखी गयी.
- तीसरी चुनौती स्वच्छता से संबंधित है. विशाल संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं के कारण मेला क्षेत्र को निरंतर स्वच्छ रखना बहुत बड़ी चुनौती थी, जिसके लिए 1500 स्वच्छताग्राही एवं स्वच्छता दूतों की सेवाएँ पहली बार ली गयीं जो निरंतर अपने कार्य को सजगता से कर रहे थे. त्रिवेणी जल को स्वच्छ रखने के उपाय में लगातार श्रद्धालुओं द्वारा त्रिवेणी में फेंके जाने वाली फूल मालाएं, धूप, दीया एवं अन्य सामग्री स्वच्छता ग्राही के द्वारा संगम जल से तुरंत साफ की जा रही थी. जिसकी निगरानी प्रशासन द्वारा निरंतर रखी जा रही थी. 20000 कूड़ेदान, हर 50 मीटर पर एक कूड़ेदान की व्यवस्था थी. 1,22,500 शौचालयों एवं टॉयलेट की सुविधा भी हर जगह उपलब्ध करा दी गयी थी और अपशिष्ट को बायो तकनीकी द्वारा निस्तारण किया जा रहा था. 15000 सफ़ाईकर्मी की तैनाती भी गयी थी. कूड़ा निस्तारण के लिए 120 टिप्पर वाहन थे एवं जी.पी.एस. द्वारा निगरानी रखी जा रही थी.
- मूलभूत सुविधाएं जैसे बिजली, पानी, खाद्य पदार्थ, रहने की सुविधा, मोबाइल नेटवर्क, बैंकिंग सुविधाएं भी श्रद्धालुओं को

सुचारु रूप से पहुंचाना भी एक चुनौती रही. जिसके लिए प्रत्येक सेक्टर में बिजली पावर हाउस, जल निगम का ऑफिस, मोबाइल नेटवर्क के लिए विभिन्न कंपनियों के नेटवर्क टावर एवं बैंक की शाखा, कैश वैन एवं एटीएम उपलब्ध कराये गए. रहने के लिए कई प्रकार के टेंट किराए पर उपलब्ध थे, साथ ही साथ टेंट सिटी, वैदिक सिटी, इंद्रप्रस्थ सिटी (विशेष रूप से विदेशी सैलानियों के लिए) बनाई गई जो कि किसी एक शहर से कम नहीं लग रही थी. इन सबकी जानकारी, तथा बुकिंग कुंभ की वैबसाइट पर उपलब्ध कराई गई थी. एयरपोर्ट से पिकअप से लेकर रहने, खाने, कुंभ स्नान, गंगा आरती आदि सभी बातों की व्यवस्था एक ही जगह की गयी, जिससे कि विदेशी सैलानियों को कोई दिक्कत का सामना ना करना पड़े .

- इसी क्रम में यदि कोई श्रद्धालु अपने परिजन से बिछड़ जाता है तो उसे अपने परिजन को संगम तट पर खोज पाना बहुत ही कठिन हो जाता है जिसके लिए खोया पाया विभाग बड़ी ही तत्परता से मेला परिसर के साथ-साथ शहर के अंदर भी बार-बार घोषणा की जा रही थी. जिससे भूले बिछड़े लोगों को एक दूसरे से मिलने में आसानी हो सके.
- बिना टेक्नालाजी के आजकल कहीं भी बड़ा आयोजन करना असंभव है, जैसे कि कुंभ की जानकारी लेना, रहने के लिए टेंट की उपलब्धता को दूर बैठे श्रद्धालुओं को जानना, मेले परिसर में श्रद्धालुओं को ट्रेन की स्थिति अर्थात कौन सी ट्रेन कहाँ से कहाँ तक जाएगी, किस स्टेशन से जाएगी, आरक्षण की स्थिति जानना एवं 'दिव्य कुंभ-भव्य कुंभ' को डिजिटल तरीके से उसकी भव्यता को जो इस कुंभ में नहीं आ सके हैं, उन्हें देश-विदेश में बैठे अन्य लोगों तक पहुंचाना है.

इन सब के लिए कुंभ से जुड़ी सभी जानकारी कुंभ की साइट पर उपलब्ध थी, 218 मीडिया कैंप की स्थापना कर कवरेज के माध्यम से सभी चीजों का निरंतर प्रचार-प्रसार किया जा रहा था. वेबसाइट, मोबाइल ऐप व सोशल मीडिया द्वारा लोगों को जोड़ा गया था. सम्पूर्ण मेला परिसर को गूगल मैप से जोड़ा गया था. मेला परिसर में फ्री वाई-फाई की सुविधा दी गयी थी, राशन वितरण व स्वछता के लिए आई.सी.टी. आधारित निगरानी का उपाय किया गया.

- संगम स्नान में इतनी बड़ी तादाद में श्रद्धालुओं की भीड़ स्नान करने के लिए आती है जिससे कि संगम क्षेत्र में कोई भी अप्रिय घटना हो सकती है जैसे कि अधिक बहाव के कारण डूबना या बह जाना. संगम तट पर गंदगी नहाने के कारण होती है जिससे महामारी फैलती है और पवित्र जल प्रदूषित होता है. परंतु इस बार पहले से ही कई जगह घाटों की व्यवस्था की गयी थी, पानी के बहाव को कम कर दिया गया था एवं सभी स्नान वाली जगहों को चारो तरफ से बैरिकेडिंग की गयी थी तथा वहाँ पर जल प्रहरियों को भी तैनात किया गया था. एनडीआरएफ़ की टीम के साथ साथ बचाव के लिए लाइफ जैकेट प्रत्येक नाव पर उपलब्ध थी.
- संगम क्षेत्र में स्नान के अलावा कई और भी स्थल ऐसे हैं जो प्रमुख रूप से आकर्षण का केंद्र रहे जैसे अक्षयवट, बड़े हनुमान जी का मंदिर,किला घाट, अखाड़े एवं कला ग्राम, संस्कृति ग्राम एवं कला कुंभ स्थल इत्यादि. सभी स्थलों में सुरक्षा के इंतजाम, भीड़ प्रबंधन,यातायात की व्यवस्था के लिए लाइन को बैरिकेडिंग के माध्यम से कंट्रोल करना और समय प्रबंधन कर श्रद्धालुओं को होने वाली असुविधा से बचाया गया.

'दिव्य कुंभ,भव्य कुंभ' के आयोजन को सफल बनाने के लिए ऐसे तो छोटी-बड़ी बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है. जिनका संक्षिप्त रूप से वर्णन ऊपर बताया गया है लेकिन इनके अलावा कुछ और बातों की तरफ ध्यान केन्द्रित करना चाहूँगा जैसे कुंभ समाप्ति के बाद मेला परिसर में जिस तरह लोग उपयोग की हुई चीजों को छोड़ देते हैं उससे संगम स्थल प्रदूषित होता है,जिससे जल प्रदूषण,वायु प्रदूषण होने के कारण शहर के पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है. इनसे निपटने के लिए कुंभ के बाद भी उतनी ही सजगता से कुंभ के समापन के दौरान मेला परिसर की साफ सफाई का ध्यान रखा जाए और अपशिष्ट पदार्थ,बायो टॉयलेट का निस्तारण,टूटी-फूटी वस्तुएं,प्लास्टिक उत्पाद का निस्तारण सही तरीके से किया जाए.

'स्वच्छ कुंभ सुरक्षित कुंभ' का जो कि तीर्थों की नगरी कही जाने वाली प्रयागराज में सफलतापूर्वक समापन हो गया है. वास्तव में वर्ष 2019 के महाकुंभ ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है, जिसका आयोजन पूरे मनोभाव,मनोबल के साथ किया गया है.

गौरव सिंह
क्षे. का, प्रयागराज

कुंभ और गुमशुदगी

प्रयागराज में 'कुंभ' कानों में पड़ते ही गंगा, यमुना एवं सरस्वती का पावन सुरम्य त्रिवेणी संगम मानसिक पटल पर चमक उठता है. पवित्र संगम स्थल पर विशाल जन सैलाब हिलोरें लेने लगता है और हृदय भक्ति-भाव से विह्वल हो उठता है. श्री अखाड़ों के शाही स्नान से लेकर सन्त पंडालों में धार्मिक मंत्रोच्चार, ऋषियों द्वारा सत्य, ज्ञान एवं तत्वमीमांसा के उद्गार, मुग्धकारी संगीत, नादों का अनहद नाद, संगम में डुबकी से आप्लावित हृदय एवं अनेक देवस्थानों के दिव्य दर्शन प्रयागराज कुंभ की महिमा से भक्तों को परिचित कराते हैं.

प्रयागराज का कुंभ मेला लगभग 50 दिनों तक संगम क्षेत्र के आस-पास हजारों हेक्टेअर भूमि पर चलने के चलते विश्व के विशालतम अस्थायी शहर का रूप ले लेता है. समस्त क्रियाकलाप, सारी व्यवस्थाएं स्वत: ही चलने लगती हैं. आदिकाल से चली आ रही इस आयोजन की एकरूपता अपने आप में ही अद्वितीय है. लगातार बढ़ता हुआ जनांकिकीय दबाव और तेजी से फैलते शहर जब नदियों को निगल लेने को आतुर दिखायी देते हैं ऐसे में कुंभ जैसे उत्सव नदियों को जगत जननी होने का गौरव देते प्रतीत होते हैं. सनातन काल से भारतीय जनमानस के रगों में बसी, उनके रक्त में प्रवाहित होती अगाध श्रद्धा एवं आस्था ही अमृत है. उनका अमर विश्वास ही प्रलय में अविनाशी 'अक्षयवट' है, ज्ञान, वैराग्य एवं रीतियों का मिलन ही संगम है और आधार धर्म प्रयाग है.

कलश को कुंभ कहा जाता है. कुंभ का अर्थ होता है घड़ा! इस पर्व का संबंध समुद्र मंथन के दौरान अंत में निकले अमृत कलश से जुड़ा है.

कुंभ मेला एक अद्भुत समारोह है. भारत के कोने-कोने में इस धार्मिक मेले का आह्वान पहुंच जाता है और वहां से असंख्य नर-नारी आकुल भाव से इस धर्मामृत का आस्वादन करने चले आते हैं. नवशक्ति के प्रबल जागरण से राष्ट्र शक्ति की प्रत्येक धमनी में विशेष धर्म-धारा उद्दाम गति से प्रवाहित होने लगती है. भारत का उज्ज्वल भविष्य निश्चित है- इस पर विश्वास करें, अनुभव करें और सिंहस्थ में आकर दर्शन करें.

भारत में कुंभ मेला दुनिया में किसी भी अन्य धर्मसभा की तुलना में अधिक लोगों को आकर्षित करती है. यह हिन्दुओं की सामूहिक इच्छा को दर्शाता है. दुर्भाग्य से कभी-कभी कुंभ मेले में भीड़ तीर्थयात्रियों के प्रवाह को विनियमित करने के लिए मेला अधिकारियों द्वारा किए गए विस्तृत व्यवस्था के बाबजूद असहनीय हो जाती है. आज से सौ साल पहले भी लोग जान-माल की परवाह किये बगैर कुंभ के मेले में शामिल होने के लिए दूर-दूर से पहुंचते थे. कई बार हम सबने

भी सुना होगा कि कुंभ स्नान पर छोटे-छोटे बच्चे बिछड़ जाते थे, जो या तो मिलते नहीं थे अथवा बड़े हो जाने के पश्चात माँ-बाप से उनका मिलन होता था. इस विषय पर हमारे बॉलीवुड ने भी तमाम फिल्में बनायी हैं, जो इसकी भव्यता की अपने आप में गवाही देती है. ऐसा भी नहीं है कि कुंभ-स्नान करने केवल देशवासी ही पहुँचते हैं, बल्कि विदेशी नागरिक भी बड़ी संख्या में 'भारत दर्शन' के इरादे से कुंभ मेले में पहुँचते हैं. जाहिर है कि ऐसे में यह पर्यटन का भव्य श्रोत बनकर भी उभरा है. कुछ पूर्व के वर्षों का अगर हम आकलन करें तो हम पाएगें कि बहुत पहले कुंभ नहाने का प्रचलन और सुविधा प्रयाग शहर में ही थी! ज्यादातर लोग प्रयाग के कुंभ में ही इकठ्ठा होते थे. हालांकि, उस समय में प्रयाग आने वाले तीर्थ यात्रियों को लुटेरों का डर सताता रहता था, लेकिन हमारे देश के धर्मभीरू लोगों की तो यही खासियत रही है कि हर 'डर' पर विजय प्राप्त करके वह धार्मिक आयोजनों में हिस्सा लेते रहे हैं. आज तो हर तरह की यातायात सुविधा होने से हम सहजता से कहीं से कहीं पहुँच जाते हैं, किन्तु पुराने समय में तो सार्वजनिक यातायात की सुविधाएं न होने के कारण कुंभ में आने के लिए लोग पैदल या बैलगाड़ी से ही संगम पहुंच पाते थे. कहावतों में अक्सर कुंभ में बिछड़े परिजनों के मिलने का जिक्र होता है. लेकिन यह सिर्फ कहावतों की बात नहीं है और न ही कुंभ की. अक्सर भीड़भाड़ वाले स्थानों पर लोगों के बिछड़ जाने का अंदेशा होता है. खास कर बच्चों के साथ ऐसी अनहोनी की आशंका अधिक होती है, बच्चों को बिल्कुल भी पता नहीं होता कि घर कैसे जाएं. इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए प्रयागराज में इस साल आयोजित कुंभ के दौरान खास व्यवस्था की गई है.

आरएफआईडी जो एक तरह का वायरलेस संचार माध्यम है. इसमें इलेक्ट्रो मैग्नेटिक या इलेक्ट्रोस्टैटिक कफलिंग का इस्तेमाल होता है, जिससे किसी भी व्यक्ति या वस्तु की पहचान में मदद ली जा सकती है. वहीं, सत्यार्थी की संस्था ने मेले में खोने वाले बच्चों की तलाश के लिए पूरे मेला क्षेत्र में अपने स्वयंसेवियों को तैनात करने की बात कही है. कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेंस फाउंडेशन की ओर से इस संबंध में जारी एक बयान में कहा गया है, कुंभ में ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे भी बड़ी संख्या में आते हैं और इन बच्चों पर मानव तस्करी से जुड़े समूहों की नजर रहती है. ऐसे में हम खोने वाले बच्चों को ढूंढ़ने की मदद के लिए अपने स्वयंसेवी तैनात करेंगे. मेले में आने वाले बच्चों और अन्य लोगों के बिछड़ने की स्थिति में उनका पता लगाने के लिए कई जगहों पर खोया-पाया केंद्र भी बनाए गए हैं. पूरे मेला क्षेत्र में ऐसे 15 आधुनिक एकीकृत डिजिटल खोया-पाया केंद्र बनाए गए हैं, जहां से संपर्क किया जा सकता है.

सार्वजनिक घोषणा प्रणाली के अलावा एलईडी के जरिए सूचना के डिस्प्ले की व्यवस्था की गई है. डीजीपी ने बताया कि पहली बार ऑटोमैटिक नंबर प्लेट पहचान प्रणाली का इस्तेमाल किया जाएगा. यह वाहनों की पहचान उनके रंग, लाइसेंस प्लेट, तारीख और वक्त से करने में सक्षम होगी.मेला में बिछड़ जाने वालों के बारे में वेबसाइट पर लॉग-इन करके भी पता लगाया जा सकता है. सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्विटर) पर भी ऐसे लोगों को लेकर संदेश पोस्ट किए जाएंगे. 12 घंटों के भीतर यदि खोए हुए व्यक्ति का पता नहीं लगता है या उसके संबंधी उसे लेकर दावा नहीं करते हैं तो ऐसे मामलों में पुलिस सहायता दी जाएगी. इन सुविधाओं के साथ हम यह कह सकते हैं कि अब कुंभ में बच्चे नहीं खोएंगे और अगर भीड़ में इधर-उधर हो भी गए तो आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से हम उन्हें जरूर ढूंढ़ लेगें.

नवीन कुमार,
नो. क्षे. का., बेंगलूरु

कुंभ पर्व और पर्यावरण

महर्षि दुर्वासा के शाप से दुर्बल हुए देवताओं को सृष्टि के पालनकर्ता भगवान विष्णु ने असुरराज बलि के साथ मिलकर समुद्र-मंथन करने का आदेश दिया. मंथन से प्राप्त होने वाले अमृत का पान करके देवता अमरत्व प्राप्त कर पुन: बलशाली और समृद्ध हो जाते. देवराज इन्द्र ने असुरों को समुद्र-मंथन के लिए मना लिया और मंथन के उपरांत अन्य दुर्लभ द्रव्यों के साथ अमृत-कलश (कुंभ) की प्राप्ति हुई जिसे असुरों ने दुर्बल देवताओं से बलपूर्वक छीन लिया.

वर्ष 2019 में 14 जनवरी से 4 मार्च तक प्रयागराज में संगम- तट पर अर्द्धकुंभ मेले का आयोजन किया गया. 55 दिनों तक चलने वाले दुनिया के इस सबसे बड़े आयोजन में एक सरकारी गणना के अनुसार लगभग 24 करोड़ से अधिक व्यक्तियों ने स्नान किया. अकेले 4 फरवरी, 2019 को मौनी अमावस्या के शाही-स्नान के दिन लगभग 5 करोड़ से ज़्यादा लोगों ने संगम में स्नान किया. जहां तक कुंभ मेले के दौरान पर्यावरण की स्थिति का प्रश्न है, तो यह विचारणीय होगा कि जिस नगर की जनसंख्या पहले से ही लगभग 12 लाख से अधिक हो और कुंभ के दौरान प्रतिदिन आनेवाले श्रद्धालुओं/तीर्थयात्रियों की संख्या करोड़ों में हो, वहाँ मानव एवं पर्यावरण के मध्य सामंजस्य स्थापित करना असीम चुनौती होगी. यहाँ यह वर्णन करना समीचीन होगा कि वर्ष 2013 में महाकुंभ के दौरान जब लगभग 10 करोड़ से ज़्यादा व्यक्तियों ने संगम में डुबकी लगाई थी, उस मेले के प्रथम स्नान दिवस के दौरान उत्तर-प्रदेश के स्टेट पोल्यूशन कंट्रोल बोर्ड द्वारा करवाई गई जांच में संगम के जल में बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बी.ओ.डी.) की मात्रा 7 मिलीग्राम प्रति लीटर पाई गई जो अधिकतम मान्य स्तर के दोगुने से भी ज़्यादा थी. रिपोर्टों के अनुसार, किसी कुंभ पर्व के आयोजन के दौरान पर्यावरण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक निम्नलिखित हैं :

- श्रद्धालुओं के अपार जन-सैलाब का विचरण संगम के तटीय क्षेत्र में होता है. प्रत्यक्ष रूप से खुले में श्रद्धालुओं द्वारा मल-मूत्र का विसर्जन करना पर्यावरण के लिए सर्वाधिक घातक है. यह केवल जल- प्रदूषण ही नहीं बल्कि वायु तथा मृदा-प्रदूषण का भी मुख्य कारण है.
- स्नानार्थियों द्वारा स्नान के दौरान साबुन, डिटर्जेंट तथा तेल का इस्तेमाल करने से नदियों में जल-प्रदूषण की वृद्धि होती है.
- पर्व के दौरान विभिन्न स्नानों के समय साधु-सन्यासियों द्वारा नदी के जल में केश/बाल छिलवाने की परंपरा है. रिपोर्टों के अनुसार इस संस्कार से जल-प्रदूषण का स्तर अत्यंत बढ़ जाता है. इस दौरान श्रद्धालुओं में रक्त जनित व्याधियों तथा पेट के रोगों से संबंधित घटनाओं में वृद्धि हो जाती है.
- सामान्यतया, कुंभ पर्व के स्नान के दौरान श्रद्धालुगण केवल आस्था से वशीभूत होकर बिना विचार किए गंगा यमुना के पावन जल में फूल, माला, प्लास्टिक, कपड़े तथा अन्य अनावश्यक वस्तुएँ फेंक जाते हैं जो न सिर्फ नदियों के लिए, बल्कि पर्यावरण के अन्य घटकों के लिए भी दीर्घकालिक संकट उत्पन्न करते हैं.
- अपार जन-सैलाब उमड़ने से नगर के साथ-साथ संगम क्षेत्र में भी आधारभूत संरचनाओं में गुणात्मक सुधार नहीं होने से धूल और गंदगी में भी अत्यधिक वृद्धि हो जाती है जो इस दौरान वायु-प्रदूषण का मुख्य कारण होते हैं.
- सामान्यतया कुंभ पर्व के दौरान तीर्थयात्री/कल्पवासी भोजन पकाने हेतु परंपरागत चूल्हों में लकड़ी या उपलों का प्रयोग करते हैं जो वायु-प्रदूषण में वृद्धि का कारण बनते हैं.

अब उपरोक्त विचारणीय कारकों के आलोक में प्रयागराज में आयोजित कुंभ 2019 का विश्लेषण करना आवश्यक होगा. कुंभ 2019 को यूनेस्को द्वारा अमूल्य धरोहर की मान्यता प्रदान की गई है. उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा कुंभ-मेला 2019 के लिए सूक्ति-वाक्य 'सर्वसिद्धिप्रद: कुंभ:' को प्रतीक चिन्ह के रूप में घोषित किया गया जिसका तात्पर्य है, सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाला कुंभ. कुंभ मेला के आयोजन हेतु प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने वृहत स्तर पर योजनाबद्ध तरीके से कई कार्य निष्पादित किए जो कुंभ पर्व और पर्यावरण के मध्य सामंजस्य स्थापित करने की दिशा में बेहद कारगर साबित हुए. सर्वप्रथम, यह बताना आवश्यक होगा कि इस बार कुंभ मेले को लगभग 45 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में विकसित किया गया जो पूर्व की अपेक्षा लगभग ढाई गुना अधिक क्षेत्र है. इसका सबसे अच्छा प्रभाव यह हुआ कि सुनियोजित तरीके से भीड़ के घनत्व के

दबाव को मेला क्षेत्र में कम व नियंत्रित किया जा सका. सरकार तथा मेला प्राधिकरण द्वारा स्वच्छता पर सर्वाधिक ज़ोर दिया गया. इस दृष्टिकोण से यह आयोजन पहले के सभी आयोजनों से अलग और विलक्षण रहा है. इस दिशा में मेला प्राधिकरण तथा सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों का वर्णन किया जा सकता है जिनसे कुंभ मेले के दौरान आने वाले अपार जन समुदाय से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों को सकारात्मक रूप से निम्न स्तर पर नियंत्रित किया जा सका. ऐसे कुछ कार्यों का विवरण निम्नवत है :

- मेला क्षेत्र में स्वच्छता को विशेष महत्व देते हुए सेप्टिक टैंक विधि के अस्थायी शौचालय लगाए गए. इस प्रकार के लगभग 1 लाख 22 हज़ार शौचालयों की व्यवस्था की गई. इन सारे शौचालयों की साफ-सफाई हेतु नो-टच क्लीनिंग विधि यानी जेट स्प्रे मशीन की सहायता ली गई.
- कुंभ क्षेत्र को साफ सुथरा रखने हेतु कूड़ा निस्तारण पर विशेष ध्यान रखा गया है. मेला क्षेत्र में हर 50 मीटर की दूरी पर लाइनर बैग युक्त डस्टबिन लगवाए गए.
- इस बार के कुंभ मेले में लगभग 2000 स्वच्छाग्राहियों/गंगामित्रों की नियुक्ति उल्लेखनीय है. कुंभ क्षेत्र में नियमित स्वच्छता को निगरानी एवं नियंत्रित करने हेतु इनकी भूमिका अत्यंत सराहनीय रही. नियमित सफाई हेतु भी 1000 से ज़्यादा सफाईकर्मी तैनात किए गए.
- इस बार के कुंभ आयोजन का सबसे उल्लेखनीय कार्य पूरे शहर के चयनित भवनों, पुलों इत्यादि पर कलात्मक पेंटिंग करना था. यद्यपि, पर्यावरण पर इसका परोक्ष असर नहीं दिखता, लेकिन सांस्कृतिक वातावरण एवं स्वच्छता को सुदृढ़ करने में इस प्रयोग को कम नहीं आँका जा सकता.
- सारे शहर में सड़कों के चौड़ीकरण तथा सुंदरीकरण पर उल्लेखनीय कार्य किए गए. साथ ही, सारे शहर में सड़कों के किनारे तथा डिवाइडर पर 2 लाख से ज़्यादा पौधों/वृक्षों का रोपण किया गया.
- कुंभ क्षेत्र से नियमित दूरी पर लगभग 3200 हेक्टेयर क्षेत्र में 84 पार्किंग स्थलों का निर्माण किया गया. साथ ही, मेला क्षेत्र में पर्याप्त संख्या में नियमित बैटरी चालित ई-रिक्शा वाहनों की व्यवस्था की गई.
- मेला क्षेत्र में भोजन पकाने हेतु एलपीजी गैस का इस्तेमाल अनिवार्य किया गया जिससे वायु की गुणवत्ता को मानक स्तर के भीतर रखने में सहायता मिली.

इस आयोजन में यदि संगम के जल, मुख्य रूप से गंगा नदी, के गुणवत्ता का उल्लेख न किया जाए तो सब कुछ बेमानी हो जाएगा. इस संदर्भ में सरकार की व्यवस्था को पूरा अंक प्रदान किया जा सकता है. इस बार कानपुर और उन्नाव के चमड़ा कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट व दूषित पदार्थों को गंगा नदी में गिरने से पूरी तरह रोक दिया गया था. इतना ही नहीं प्रयागराज, कानपुर जैसे नगरों के नालों को सीधे नदी में प्रवाहित होने से भी रोका गया. सीवेज प्लांट के जरिये नालों के दूषित जल के शोधन के उपरांत ही उन्हें नदियों में प्रवाहित किया गया. इसका प्रभाव यह रहा कि कुंभ मेले के दौरान न तो आम-जन ने और न ही किसी अखाड़े के साधु-सन्यासी ने इस संबंध कोई शिकायत/विवाद किया. इसके साथ ही, एक बात का उल्लेख करना भी बेहद प्रासंगिक होगा, यद्यपि यह पर्यावरण से संबंधित नहीं है. दूसरे शब्दों में कहें तो यह उल्लेख पूरे कुंभ के वातावरण को मित्रवत और सहयोगात्मक बनाने वाले बेहद सुखद व्यवहार का है जो उत्तर-प्रदेश पुलिस द्वारा पूरे कुंभ में निभाया गया. इस बार के कुंभ में पुलिस को विशेष ट्रेनिंग दी गई थी ताकि आगंतुक श्रद्धालुओं के साथ-साथ नगरवासियों को भी वे सार्थक सहयोग व समुचित सेवा प्रदान कर सके.

वर्ष 2019 के इस महान कुंभ पर्व का आयोजन जिस रूप में प्रयागराज की इस अलौकिक धरती पर सम्पन्न हुआ है, बिना उसका प्रत्यक्ष हिस्सा बने, उसकी विशालता, भव्यता, दिव्यता का अनुभव कल्पना के परे है. उसे शब्दों में बांधना मुमकिन नहीं है. लेखक को सौभाग्य से पिछले तीनों कुंभ आयोजनों, जो वर्ष 2001, 2006 तथा 2013 में प्रयागराज की धरती पर सम्पन्न हुए थे, में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ था. व्यवस्था और विशालता में वे भी उस समय के हिसाब से अद्वितीय थे. परंतु इस बार के आयोजन ने एक अलग आयाम प्रदान किया जो न केवल स्नान से जुड़ा था बल्कि शहर के समुचित विकास और मानसिकता को नई ऊंचाइयों पर भी ले जाने वाला था. इस मेले में पश्चिम-बंगाल तथा विदेश से आए कुछ परिचितों को कौतूहल वश भीड़ को निहारते हुए बदहवास होने के दृष्टांत का वर्णन बड़ा प्रासंगिक होगा जो कई दिनों तक कहते रहे कि अगर वे इस मेले का हिस्सा न बनते तो कभी नहीं विश्वास करते कि मानव-सभ्यता के इतिहास में ऐसा कोई आयोजन संभव है. इसमें दो राय नहीं कि कुंभ मेले जैसे कोई आयोजन में पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित करना बेहद चुनौतीपूर्ण होता है. करोड़ों की संख्या में अपने पाप धोने आए स्वर्गाकांक्षी अपने पीछे शहर में गंदगी, गुबार और अव्यवस्था के मंज़र छोड़ जाते हैं. लेकिन, इस लिहाज से यह कुंभ आयोजन एक अपवाद माना जा सकता है.

अरुण कुमार राय

क्षे. का, प्रयागराज

कुंभ पर्व - कट्टरता

अनेक विविधताओं वाला भारत युगों-युगों से धार्मिक आस्थाओं का गुरु रहा है. भारतीय संस्कृति और सभ्यता की बात करें तो उसमें बहुत कुछ है. पर समय के साथ-साथ बहुत कुछ बदला है. कुछ बदलाव लाभदायक होते हैं और कुछ नुकसानदायक. आप जब भी संस्कृति और सभ्यता की बात करेंगे तो आपको निश्चित ही रूढ़िवादी या कट्टररवादी माना जाने लगेगा.

अपने परम सिद्धांतों पर शिद्दत से आस्थावान रहना कट्टरता नहीं है, वह तो श्रद्धा है. सत्य तथ्य पर प्रत्येक मानव को अटल ही रहना चाहिए. दूसरे के धर्म की बुराई कर अपने धर्म की कुप्रथाओं को ऊंचा सिद्ध करना भी कट्टरता नहीं, कलह है., एक व्यक्ति शांति संदेश देता है, ज़ोर शोर से शांति, शांति अलाप करने को मजबूर करता है और कहता है कि ज़ोर-ज़ोर से बोलकर दिखाओ, तो ही तुम शांतिदायक हो. इस तरह दिखावे की कुश्ती लड़ना ही कट्टरता है. अर्थात, किसी भी तरह के सिद्धांत, परंपराएं, रीति रिवाज दिखावे के लिए बलात दूसरे पर लादना कट्टरता है. किसी संप्रदाय या विचार को आँख मूंदकर मानना और उसके लिए अति उत्साह से काम करना कट्टरता कहलाता है. जॉर्ज संतायन के अनुसार, “जब लक्ष्य ही भूल गया हो तब अपने प्रयास को दोगुना बढ़ा देना कट्टरपन है. कट्टर व्यक्ति बहुत कड़ाई से किसी विचारधारा का पालन करता है तथा उससे भिन्न या विपरीत विचारों को सह नहीं सकता. अर्थात किसी भी धर्म जाति, वर्ण या कोई भी राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक संगठन के लिए पूरी तरह समर्पित होकर कार्य करना, उससे मानना ही कट्टरता है. यह कट्टरवादिता निश्चित रूप से देश की संस्कृति और सभ्यता को बचाने में मदद करती है.

आज कल विभिन्न असामाजिक संगठनों द्वारा की जाने वाली गैर कानूनी कार्यवाही भी कट्टरता की ही मिसाल है. यह पाया जा रहा है कि लोग पहले अमन व शांति के संदेश को सौम्य भाषा में ले आते हैं और आखिर में कट्टरता का रुख अपना लेते हैं. कुछ लोगों को यह अमन का पैगाम शायद समझ में नहीं आता कि इन धार्मिक संगठनों का मकसद कुछ और है. बस, इससे दूर रहना चाहिये.

हमारे देश का हर कोना यहाँ की आस्थाओं के लिये प्रसिद्ध रहा है. जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो उसका हिस्सा सभी धर्म, जाति, प्रांत और समाज के लोग हैं. अतः संस्कृति को बचाने की ज़िम्मेदारी उन सभी लोगों की है जो खुद को भारतीय मानते हैं.

कुंभ का पर्व भी एक कट्टरता का प्रतीक है, जिसमें एक धर्म विशेष के लोग संगम और अन्य नदियों पर किसी पर्व पर स्नान करते हैं, और धार्मिक मुखिया, लोगों को शांति के अनेक संदेश देते हैं. कुंभ मेले का इतिहास कम से कम 850 साल पुराना है. माना जाता है कि आदि शंकराचार्य ने इसकी शुरुआत की थी लेकिन कुछ मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन के आदिकाल से ही हो गई थी.

भारत विश्व में सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है और विभिन्न सांस्कृतिक विरासत का संगम है. यहाँ पर हर तीज त्योहार काफी आस्था के साथ मनाए जाते हैं. कुंभ मेला भी इन्हीं आयोजनों में से

एक है. हिन्दू धर्म में कुंभ मेले का बड़ा ही महत्व है. कुंभ मेला 2019 में प्रयागराज में आयोजित किया गया है. भारत में सिर्फ चार स्थानों में ही इसका आयोजन किया जाता है.

महाकुंभ के संबंध में मान्यता

शास्त्रों में बताया गया है कि पृथ्वी का एक वर्ष देवताओं का एक दिन होता है, इसलिए हर बारह वर्ष पर एक स्थान पर पुनः कुंभ का आयोजन होता है. यह क्या है ? एक विश्वास और कट्टरता! लोग यही मानकर एक निश्चित तिथि को अपना स्नान कुंभ में करते हैं.

कट्टरता के कारण ही लोग काफी मुश्किलों के बाद भी स्नान करने जाते हैं. हाल ही का कुंभ जो प्रयागराज में 14 जनवरी से 14 मार्च तक हुआ. मकर संक्रांति के मौके पर शाही स्नान के साथ कड़ाके की सर्दी में अलग-अलग घाटों में लगभग 1 करोड़ से भी ज्यादा लोगों ने डुबकी लगाई. यह धार्मिक कट्टरता के कारण ही पूरा हुआ.

2013 में जहां कुंभ 1700 हेक्टेयर में आयोजित किया गया था, इस साल 3200 हेक्टेयर में आयोजन के इंतजाम किए गये हैं. आयोजन के लिए करीब ₹ 4300 करोड़ का बजट रखा गया है.

अगर यह कट्टरता सकारात्मक विचारधारा के साथ हो तो निश्चित रूप से यह देश के विकास में सहभागिता निभाती है. पर कभी-कभी यही कट्टरता नकारात्मक विचारधारा के साथ विकसित होती है तो देश का नुकसान होता है. धार्मिक एवं दंगे इसी नकारात्मक सोच के परिणाम होते हैं.

कट्टरता के लाभ

यह लोगों की कट्टरता ही है जिसके कारण करोड़ों की संख्या में लोग धार्मिक पर्वों में इकठ्ठा होते हैं. एक ओर जहां भीड़ को नियंत्रण में रखने की समस्या है, वहीं दूसरी ओर काफी फायदे भी होते हैं. देश में काफी लोगों को रोजगार मिलता है तथा अन्य निम्नानुसार लाभ भी हैं:-

1 देश की संस्कृति को बढ़ावा

आप जब भी संस्कृति और सभ्यता की बात करेंगे तो निश्चित ही आपको रूढ़िवादी या कट्टरवादी माना जाएगा और व कट्टरवाद के बिना संस्कृति नहीं बचाई जा सकती. विभिन्न पर्व भी संस्कृति को बचाने का काम करते हैं. कुंभ मेला उनमें से एक है. मेले में लगने वाले विभिन्न प्रांतों के अखाड़े एवं दुकानों के माध्यम से हम देश की संस्कृति को जानते हैं.

2 रोजगार के अवसर

कट्टरता के कारण ऐसे अवसरों पर सरकार को कानून व्यवस्थाएं बनाने के लिए विशेष बजट की व्यवस्था करनी होती है. साथ ही साथ लोगों को रहने-खाने की व्यवस्था व अन्य साधनों के कारण लोगो को रोजगार मिलता है. व्यापार का विकास होता है. प्रदेश की आर्थिक सम्बलता ठीक होती है. इस बार के कुंभ मेले में लगभाग ₹ 4300 करोड़ का बजट सरकार ने रखा है जिससे, 6 लाख व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा.

3 सरकार को कर संरचना का लाभ

प्रयागराज के कुंभ से सरकार को विभिन्न कर संरचना से लगभग ₹1.20 लाख करोड़ प्राप्त होने की उम्मीद है जो कि देश के विकास में सहयोग देगी.

4 सामाजिक समरसता

महाकुंभ विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक व सामाजिक उत्सव वाला एवं व्यापक जनसंपर्क का स्थान है. महाकुंभ भारत का धार्मिक ही नहीं, अपितु एक सामाजिक उत्सव भी है. यहां आने वाले सभी श्रद्धालु धर्म यात्री हैं, जिसमें सम्पूर्ण भारत के प्रतिनिधि एकत्रित होकर परस्पर परिचय प्राप्त करने के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं पर भी विचार कर उनके समाधान के मार्ग खोजते हैं.

कट्टरता से हानि

मूलतः कट्टरवाद धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के लिए खतरा होता है. साथ ही अगर कट्टरता नकारात्मक रूप से ली जाती है तो इसके दुष्परिणाम होते हैं. किस तरह लोगों को धार्मिक आड़ में लेकर अन्य गलत कार्य पूरे विश्व में हो रहे हैं यह आप जानते हैं., जिसके परिणाम भी गलत ही होते हैं. जहां भी ऐसे पर्व होते हैं, उनके देश /प्रदेश को कुछ नुकसान भी हैं जो इस प्रकार हैं :

1 कानून व्यवस्था समस्या

2 धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा

3 धार्मिक विवाद

4 अंध विश्वास को बढ़ावा

5 सरकार द्वारा वित्त पोषण

6 भीड़ के कारण गंदगी और बाद में महामारी की संभावना

अतः किसी तरह बाजारवाद, साम्यवाद और आधुनिकता के इस दौर में हम अपनी संस्कृति को बचाएं. देश की संस्कृति और सभ्यता को बचाने के लिए देश में ऐसे कट्टरवाद की जरूरत है जो सामाजिक समरसता एवं भाई चारे को बढ़ावा दे सकती है.

- बी. एम सैनी,
स्टा. प्र. कें, गुड़गाँव

कुंभ में हिंसा एवं अव्यवस्था

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में मकर संक्रांति से शुरू होकर महाशिवरात्रि तक चलने वाले विश्व विख्यात कुंभ का आयोजन किया जा रहा है.

दुनिया के इस सबसे बड़े धार्मिक और आध्यात्मिक मेले में जहाँ कई नए रिकॉर्ड बने और कई पुराने रिकार्ड टूटे जिनकी चर्चा देश विदेश में हो रही है. धर्म, आस्था और विश्वास के इस अनूठे संगम में हिंसा और अव्यवस्थाओं का संगम भी देखने को मिला जिनका जिक्र करना उतना ही जरूरी है जितना कि इसकी उपलब्धियों के बारे में चर्चा करना. पहले कुंभ का स्वरूप पूर्णत: धार्मिक एवं पौराणिक था किन्तु स्वाधीनता के पश्चात यह मेला कम और झमेला ज्यादा हो गया है, विस्तृत रूप में इनका उल्लेख निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है.

हिंसा - देश के इतने बड़े धार्मिक मेले में प्रमुख रूप से हिंसा, अखाड़ों की पेशवाई में देखने को मिलती है. हालांकि अखाड़ों में हथियारों के प्रदर्शन पर रोक थी, किन्तु जूना अखाड़े के नागा साधुओं द्वारा हथियारों का प्रदर्शन किया जाता रहा.

विभिन्न अखाड़ों के बीच वर्चस्व की लड़ाई भी देखने को मिलती है और इसी लड़ाई की वजह से एक अखाड़े का विलय दूसरे अखाड़े में हो जाता है. पहली बार किन्नर अखाड़े की पेशवाई में भी अव्यवस्था और अराजकता का माहौल रहा. चूंकि देश में चुनाव का मौसम है इसलिये इस बार कुंभ राजनीतिक अखाड़े का भी केंद्र बन गया है. कई प्रमुख दलों के राजनेताओं द्वारा संगम में स्नान करते देखा गया जिसके कारण आम नागरिकों एवं श्रद्धालुओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा.

कई असामाजिक तत्वों द्वारा लूट पाट, चोरी, मारपीट की घटनाएँ प्रमुख रूप से देखने को मिलीं, हालांकि मेला प्रशासन इस बात का दावा करता रहा कि पुलिस की माकूल व्यवस्था की गई है, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही देखने को मिलती है. वहीं मेले के दौरान यौन उत्पीड़न एवं छेड़-छाड़ की घटनाएँ भी सुनने को मिलती हैं. जिनकी शिकायत की पर्याप्त व्यवस्था देखने को नहीं मिलती है.

आगजनी - कुंभ के दौरान अलग-अलग स्थानों में आगजनी की कई घटनाएँ देखने को मिलती हैं, हुई भी हैं. कुंभ में आगजनी की घटनाएँ आम होती हैं. इस कुंभ में भी आगजनी की चौथी घटना दर्ज की गयी. लेकिन ईश्वर का आशीर्वाद रहा कि कोई जन हानि नहीं हुई.

महंगाई - वैसे तो मेला प्रशासन ने कुंभ में रहने के लिए कई टेंट सिटी बनाई हैं और मेला अधिकारियों द्वारा कम किराए का दावा किया गया लेकिन महंगाई की मार यह रही कि लग्जरी कॉटेज का एक दिन का किराया ₹12000/- रहा. कहीं-कहीं तो वह ₹35,000/- भी रहा लेकिन सुविधाएं उपलब्ध कराई गयीं थीं. जहाँ एक ओर खाने-पीने की वस्तुओं की भी किल्लत रही, वहीं छोटी से छोटी चीजों के दाम आसमान छूते हैं.

गंदगी - कुंभ मेला प्रशासन सफाई व्यवस्था को ठीक रखने का दावा करता रहा लेकिन कुंभ में 1 दिन में 1000 मीट्रिक टन कचरा एकत्र हो रहा है जबकि 90 लाख लीटर से ज्यादा अपशिष्ट एकत्र हुआ जिसका निस्तारण स्वास्थ विभाग और सफाई अधिकारियों के लिए काफी दुविधा भरा रहा. बावजूद इसके पहले कई कुंभों की तुलना में यह कुंभ सुनियोजित और स्वच्छ रहा.

कुंभ के आयोजन में इतनी भारी भीड़ के लिए चल शौचालय पर्याप्त नहीं थे जिसकी वजह से लोगों ने अपशिष्ट पदार्थों का उत्सर्जन खुली जगहों पर किया जो कि संगम के जल में ही प्रवाहित हो रहा था, गंदगी और अव्यवस्था का आलम यह रहा कि संगम में एक साधु ने अपने कुत्ते के साथ स्नान किया.

चिकित्सा व्यवस्था - यूँ तो प्रयागराज एक दिन के लिए ही सही पर विश्व का सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर बना और लगातार 49 दिन तक चलने वाले इस आयोजन का साक्षी बना परंतु इतनी भारी भीड़ के लिए प्रशासन द्वारा किए गए इंतजाम नाकाफी रहे. डॉक्टरों एवं अन्य चिकित्साकर्मियों के साथ दवाइयों की कमी की वजह से लोग चिकित्साकर्मियों से उलझते हुये नज़र आए.

यद्यपि प्रयागराज में आयोजित कुंभ ने भारत देश का मान, देश और विदेश में बढ़ाया हो लेकिन इस आयोजन को सफल बनाने वाली भीड़ को कहीं ना कहीं कुछ ऐसे सबक मिले जिनको वे ताउम्र नहीं भूल पाएंगे.

आयोजनकर्ताओं को भी यह सबक लेना चाहिए कि सही मायनों में किसी मेले का आयोजन तभी सफल हो सकता है जब इस मेले में शामिल होने वाले हर शख्स को यह अहसास हो कि उसको कुंभ स्नान से सात्विक पुण्य मिल चुका है.

बजरंग लाल कुमावत
क्षे. का., जयपुर

कुंभ, अर्धकुंभ और महाकुंभ

यह कुंभ है - आस्था, विश्वास और सौहार्द का
मिलन विभिन्न संस्कृतियों का.
आदिकाल का वर्तमान काल से
पूर्व का पश्चिम से
अपने आप में समाहित किए हुए इतिहास अनोखा
कहते हैं, उत्पत्ति हुई देवासुर संग्राम से

"कुंभ" पर्व आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का, ज्ञान और विज्ञान के परस्पर मंथन कुंभ मेले का वो आयाम है जो आदिकाल से ही हिन्दू धर्म के अनुयायियों को बिना किसी आमन्त्रण के खींच लेता है. इसका इतिहास समय द्वारा निर्मित इतिहास है. जिसकी रचना किसी मानव समुदाय ने नहीं की है बल्कि आस्था, विश्वास एवं धर्म द्वारा की गई है. आदिकाल में मेला विभिन्न संस्कृतियों एवं समुदायों के मिलन हेतु आयोजित किया जाता था. यह एक सूत्र में बांधे रखता था समाज को ! आज के युग की मानसिकता और संस्कृति से एकदम भिन्न है यह मेला !

जब हम बात करते हैं कुंभ की, तो हम भूल नहीं सकते हैं देवासुर संग्राम को ! जब देवताओं एवं असुरों ने समुद्र मंथन किया और मंथन से 14 रत्नों की प्राप्ति हुई तो उसे दोनों ने परस्पर एक-दूसरे में बाँट लिया किन्तु जब धन्वंतरि जी अमृत कलश लेकर आए तो दोनों पक्षों में अमृत प्राप्ति हेतु द्वंद्व होने लगा. तब जाकर भगवान विष्णु ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात रखी एवं अमृत कलश का उत्तरदायित्व इंद्र के पुत्र जयंत को सौंप दिया. अमृत-कलश को प्राप्त कर जब जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु भाग रहे थे तभी अमृत की बूंदे पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिर गईं-हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज. चूँकि भगवान विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं वृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुंभ एवं मेष) में विचरण कर रहे थे इसी कारण यह सभी कुंभ पर्व के आवश्यक अंग बन गए. ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण कुंभ पर्व ज्योतिष का पर्व भी बन गया. कहा जाता है कि इन्द्रपुत्र जयंत को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और ऐसी मान्यता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है. यही कारण है कि कालान्तर में वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुंभ मेले का आयोजन होता है.

कुंभ पर्व का आयोजन कब कहां और कैसे :-

1. **हरिद्वार में कुंभ-** वृहस्पति के कुंभ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा के तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है.
2. **प्रयागराज में कुंभ-** वृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने पर तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आ जाने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है.
3. **नासिक में कुंभ-** 12 वर्षों में एक बार सिंहस्थ कुंभ मेला का आयोजन नासिक में होता है. वृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट करने पर नासिक में गोदावरी तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है. इसे महाकुंभ भी कहते हैं
4. **उज्जैन में कुंभ-** वृहस्पति के सिंह राशि में एवं सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है.

अर्ध कुंभ- अर्ध का अर्थ होता है आधा. अर्ध कुंभ का आयोजन हरिद्वार एवं प्रयाग में होता है. हरिद्वार एवं प्रयाग में दो कुंभ के बीच छः वर्ष का अंतराल होता है. इन छः वर्षों के अंतराल पर इन दोनों जगह अर्धकुंभ का आयोजन किया जाता है. कुंभ हर 3 वर्ष के अंतराल पर हरिद्वार से शुरू होता है .

कुंभ अपने आप में इस संसार में आयोजित होने वाला अनूठा मेला है. धर्म एवं खगोलीय पिंडों के अलावा तत्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है. "श् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" अर्थात जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इसलिए ब्रह्मॅाण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिलें, इसी रहस्य का पर्व है कुंभ. विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यवहारिक मंथन का पर्व है कुंभ और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुंभ-पर्व का प्रसाद है.

परम्परा की मानें तो कुंभ मेला का मूल 8वीं शताब्दी के महान दार्शनिक शंकर से जोड़ती है, जिन्होंने वाद-विवाद एवं विवेचना हेतु विद्वान सन्यासीगण की नियमित सभा आयोजित करने का प्रावधान बनाया. हिन्दू धर्मावलम्बी तीर्थयात्रीगण के बीच कुंभ एक सर्वाधिक पवित्र पर्व है. करोड़ों महिलायें, पुरूष, आध्यात्मिक साधकगण और पर्यटक आस्था एवं विश्वास की दृष्टि से शामिल होते हैं. यह विद्वानों के लिये शोध का विषय है कि कब कुंभ के बारे में जनश्रुति आरम्भ हुई थी और इसने तीर्थयात्रीगण को आकर्षित करना आरम्भ किया किन्तु यह एक स्थापित सत्य है कि प्रयाग कुंभ का केन्द्र बिन्दु रहा है ऐतिहासिक साक्ष्य कालनिर्धारण के रूप में राजा हर्षवर्धन का शासन काल (590-647 ई.) के प्रति संकेतन करते हैं जब कुंभ मेला को विभिन्न भौगोलिक स्थितियों के मध्य व्यापक मान्यता प्राप्त हो गयी थी. प्रसिद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा वृत्तांत में कुंभ मेला की महानता का उल्लेख किया है. यात्री का उल्लेख राजा हर्षवर्धन की दानवीरता का सार संक्षेपण भी करती है.

- श्वेता सिंह
एफ़जीएमओ, कोलकाता

प्रयागराज कुंभ में वैश्विकता और नवीनता

कुंभ मेला भारत में चार पवित्र शहरों प्रयाग (इलाहाबाद), हरिद्वार, उज्जैन और त्र्यंबकेश्वर(नासिक) में हर 12 साल में आयोजित होने वाला सबसे बड़ा हिंदू धर्म मेला और आध्यात्मिक संगम है. 'हिंदुओं की एकता' कुंभ मेले का मुख्य उद्देश्य है. 'कुंभ मेला' के 4 स्थान 4 दिशाओं के प्रतीक हैं. जब आदमी द्वारा परिवहन के आधुनिक साधनों का आविष्कार नहीं किया गया था तब भी कुंभ मेले का आयोजन किया जाता था. इसलिए ये 'कुंभ मेले' हिंदू एकता और संस्कृति के प्रतीक बिंदु हैं.

कुंभ मेले के दौरान, भारत भर के लाखों श्रद्धालु और विदेशी श्रद्धालु धार्मिक अनुष्ठानों जैसे गंगा नदी में स्नान करने, आध्यात्मिक अभ्यास करने, दान करने, पितृपक्ष, श्राद्ध का अनुष्ठान, संतों के दर्शन, धर्म पर बहस आदि करने के लिए एकत्र होते हैं. धर्म में आस्था रखने वालों की मण्डली के लिए यह एक अनूठा अवसर है जिसमें भक्त, देवता, साधु, संत और 330,000,000 तीर्थयात्री भी कुंभ मेले में आते हैं. इन पवित्र स्थानों पर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के लिए हिंदुओं द्वारा इस तीर्थयात्रा (प्रत्येक 12 वर्ष) को कुंभ मेला के रूप में जाना जाता है.

जगतगुरु आदि शंकराचार्य ने 'कुंभ मेला' को वैदिक रूप दिया. जगतगुरु आदि शंकराचार्य ने पहली बार हिंदुओं के धार्मिक त्योहारों को मनाने की शुरुआत की, क्योंकि भारतीय त्योहार विभिन्न संप्रदायों के संतों और धर्मगुरुओं को प्रेरित करते थे और विभिन्न धर्मों का अनुसरण करते थे. उनकी प्रेरणा से, देश के विभिन्न हिस्सों और विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के संत और धार्मिक नेताओं ने भाग लेना शुरू कर दिया. प्रतिष्ठा प्रदान की और इसलिए इसे अधिक पहचान मिली और 'कुंभ मेले' में संतों और धार्मिक नेताओं की भागीदारी बढ़ी.

कुंभ मेले का आध्यात्मिक महत्व

सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी कुंभ मेला महत्वपूर्ण है. कुंभ मेले के दौरान विशिष्ट ग्रह स्थिति के कारण वातावरण में निर्मित प्रभाव आध्यात्मिक अभ्यास और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए उपयुक्त होता है. इस प्रयोजन के लिए, ऋषि और भक्त कुंभ पर्व के दौरान कुंभ मेले के स्थान पर जाते हैं और धार्मिक अनुष्ठान करते हैं जैसे कि गंगा नदी में स्नान, देवताओं की पूजा, पितृतर्पण (मृतक पूर्वजों को जल चढ़ाना), श्राद्ध, यज्ञ, दान, ध्यान, तपस्या और आध्यात्मिक अभ्यास.

गंगा नदी में पवित्र स्नान के लिए प्रयाग में आयोजित महाकुंभ मेले में न्यूनतम 5 करोड़ श्रद्धालु शामिल होते हैं; जबकि हरिद्वार, उज्जैन और त्र्यंबकेश्वर नासिक के कुंभ मेलों में 1 से 2 करोड़ श्रद्धालु शामिल होते हैं. जैन, बौद्ध और सिख धर्म के अनुयायी भी 'कुंभ मेलों' में भाग लेते हैं.इस बार प्रयाग में 'कुंभ मेले' में भाग लेने वाले भक्तों की संख्या 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में दर्ज की गई है.

संतों के साथ सत्संग.

कुंभ मेले की प्रकृति वैभवशाली है जैसे कि यह संतों का सम्मेलन है. कुंभ मेले के कारण, भक्तों को संतों की संगति में रहने का सुनहरा अवसर मिलता है. कुंभ मेले में भक्तों, सन्यासियों और संतों द्वारा सक्रिय रूप से भाग लिया जाता है.

कुंभ मेले में विभिन्न अखाड़ों के तपस्वी भी भाग लेते हैं. तपस्वी पवित्र शास्त्रों के विशेषज्ञ होने के साथ-साथ पारंपरिक हथियारों का भी इस्तेमाल करते हैं.

इन सन्यासियों ने हथियारों का उपयोग करना सीखा क्योंकि प्राचीन काल में, वे अन्य धर्मों से संबंधित आक्रमणकारियों से हिंदू धर्म की रक्षा के लिए योद्धा थे. इसलिए, अखाड़ों में तपस्वियों और संतों के लिए धर्म की रक्षा के लिए आक्रमणकारियों को मारना अपरिहार्य था. चूँकि गंगा में स्नान करने से पापों का नाश होता है, अखाड़ों में शस्त्र-विद्या करने वाले तपस्वियों और संतों को राजयोगी स्नान (शाही स्नान) के लिए वरीयता दी जाती थी. परंपरा आज भी जारी है.

कुंभ मेले के दौरान स्नान करने से, पृथ्वी के चारो ओर 1,000 अश्वमेध यज्ञों, 100 वाजपेय यज्ञों और 100,000 प्रदक्षिणाओं (परिक्रमा) करने के लिए योग्यता प्राप्त होती है. इसी प्रकार, कुंभ मेले के दौरान एक बार स्नान करने से, कार्तिक महीने में 1,000 स्नान के बराबर, माघ महीने में 100 स्नान और वैशाख महीने के दौरान नर्मदा नदी में 10 मिलियन स्नान प्राप्त करने का पुण्य प्राप्त होता हैं.

यहां, लोग अपनी पहचान भूल जाते हैं चाहे वे पुरुष हों या महिला! लोग यह नहीं देखते हैं कि कोई व्यक्ति कपड़े पहने है या नहीं; महिलाएँ अपनी साड़ियों को सुखाती हुई देखी जाती हैं; लेकिन कोई उनकी ओर ध्यान भी नहीं देता. महिलाओं से छेड़छाड़, बलात्कार, अभद्र व्यवहार या कानून व्यवस्था की समस्या का कोई सवाल ही नहीं है.

साधु और संतों द्वारा प्रवचन

कुंभ मेले में लगभग 10,000 पंडाल स्थल पर लगाए गए हैं और इनमें से अधिकांश पंडालों में हर दिन धार्मिक विषयों पर प्रवचन आयोजित किए जाते हैं.

पूरे दिन भोजन देने वाले अन्न-छत्र

कुंभ मेले के दौरान भक्तों को विभिन्न संप्रदायों या अखाड़ों के पंडाल में दिन भर चलने वाला 'अन्न-छत्र' भक्तों के लिए चलता है. एक भी 'अखाड़ा' नहीं होगा जहाँ 'अन्न-छत्र' नहीं चलाया जाता हो.

समाज की असमानताओं को भुला दिया जाता है

कुंभ मेले के दौरान कुछ अमीर अखाड़ों ने 'अन्न-छत्र' चलाए. आमतौर पर, यह लोगों के बीच एक भावना है. 'अन्न-छत्र' का अर्थ है गरीबों को भोजन उपलब्ध कराया जाना; लेकिन 'कुंभ मेले' के दौरान, इन 'अन्न-छत्रों' के लिए आध्यात्मिकता का एक आधार है. यहाँ, एक भक्त, जो एक करोड़पति है, को एक गरीब भिखारी के बगल में बैठे भगवान के प्रसाद (पवित्र संस्कार) के रूप में भोजन करते देखा जाता है.

गत माह प्रयागराज में आयोजित अर्ध कुंभ जिसे इस बार प्रयागराज मेला प्राधिकरण द्वारा 'दिव्य कुंभ भव्य कुंभ' के नाम से प्रचारित किया गया था वह सही मायने में नवीनतम था एवं अपने में वैश्विकता को समेटे हुए था. कुंभ 2019 की शुरुआत में भारत सरकार के विदेश राज्य मंत्री जनरल वी के सिंह द्वारा 72 से भी अधिक देशों के प्रतिनिधियों के साथ मेले का शुभारंभ किया गया एवं प्रयागराज के अरैल क्षेत्र में सभी देशों के प्रतिनिधियों द्वारा उनके देश के झंडे का झण्डारोहण किया गया. मेले के दौरान देश एवं विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के आगंतुक आये. केरल से कुंभदर्शन को आए आर. महादेवन गंगा की उत्ताल तरंगों को देखकर मंत्रमुग्ध हैं तो आस्ट्रेलिया के सिडनी से आए जेम्स और उनकी सहयोगी चेल्सा अखाड़ों का वैभव देखकर चकित. संतों की यज्ञशालाओं से उठता हविश का धुआं वातावरण को सुगंधित ही नहीं कर रहा, दिव्यता का अनुभव भी दे रहा है. खाकचौक में धूनी रमाये संतों की टोली और संगम के पावन जल में खड़े होकर जटा-जूट संवारते युवा संतों का उल्लास इस बात का साक्षी है कि कुंभ भौतिकता से इतर दिव्यता और आध्यात्मिकता से सराबोर है. सागर मंथन से निकले हलाहल को पीकर नीलकंठ हुए महादेव जैसी भस्म रमाये नागाओं का समूह जब यहां से निकल पड़ता है तो ऐसा लगता है मानो साक्षात महादेव अपने गणों के साथ संगम की रेती पर रमण कर रहे हों. दंडी सन्यासियों के समूह समष्टि की समरसता के प्रत्यक्ष स्वरूप दिखते हैं. कुंभ की यह सतरंगी छटा किसी को भी बरबस मुग्ध कर लेती है. यहां गूंजते गीत और कर्णप्रिय संगीत सरस्वती के प्राकट्य का आभास देते हैं. हर-हर गंगे और हर-हर -महादेव का उद्घोष करते स्नानार्थियों के समूह उस अनहद नाद को प्रकट करते दिखते हैं जो निरंतर हमारे भीतर गूंजता रहता है.

त्रिवेणी के जल में पड़ने से सूर्य की रश्मियां हीरे-मोतियों के उजाले को फीका करती दिखती हैं. यहीं वह अनंत ऊर्जा घनीभूत होकर अंतस में भर जाती महसूस होती है. संगम के गहरे जल में खड़े होकर शरीर पर रेणुका (संगम की बलुई मिट्टी) रगड़ते हुए कायाशोधन में लगे साधु को देखकर ऐसा लगता है मानो वह संगम के जलरूपी अमृत की संपूर्ण ऊर्जा अपने में समाहित कर लेने का आतुर हो. डमरूधारी साधुओं ने अपनी जटाओं में गेंदे की मालाएं ऐसे सजा रखी हैं मानों स्वयं नारद, याज्ञवल्क्य और भारद्वाज रामकथा सुनने-सुनाने की तैयारी में शृंगार किये बैठे हों. कौपीनधारी संतों के समूह अपनी संपूर्ण चेतना के साथ यहां विद्यमान हैं तो भक्तिरस में सराबोर रामलीला और रासलीला के कलाकार अवधी और ब्रज भाषाओं का सम्मेलन सा करते दिखते हैं. सिर पर गठरी लादे त्रिवेणी रोड से संगम की ओर आते स्नानार्थी ग्रामीण परिवेश का समूचा दृश्य उपस्थित करते हैं तो मेले की चकर्ड प्लेटों वाली सड़कों पर फर्राटा भरती बेशकीमती गाड़ियां देश की आधुनिकता व शहरी भारत का आभास देती हैं.

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश

इस बार आयोजित कुंभ वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश दे रहा है. अरैल में सोमेश्वर महादेव के आगे संगम किनारे लहराते 72 देशों के राष्ट्रध्वज इसके साक्षी हैं कि कुंभ में संपूर्ण विश्व की संस्कृतियां समाहित होने को आतुर हैं. वह साक्षी बनना चाहती हैं उन देवताओं की, जो कुंभ का अमृत पान करने को देवलोक से धराधाम में आ चुके हैं. साधारण सनातनी की असाधारण आस्था और ज्ञानियों के संगम से निकले विचारों का संदेश देता यह कुंभ अपनी कहानी स्वयं कह रहा है. कुंभ मेले के लिए प्रयागराज में प्रवेश करते ही आपको शहर नया-नया दिखने लगता है. महर्षि भारद्वाज की 30 फिट ऊंची भव्य प्रतिमा इस बात की साक्षी है कि यह नगर पहले भारद्वाज की तपोभूमि और कथाभूमि है तब किसी अन्य की विरासत. सजे चौराहे और उनमें हरित गमले बताते हैं कि यहां महाउत्सव है. इमारतों की दीवारें कुंभ की पुरातनगाथा खुद कहती दिख रही हैं. हजारों प्रहरी सुरक्षा बोध कराते हैं. लोगों को रास्ता बताते और मदद करते स्वयंसेवक इस बात का जीवंत प्रमाण हैं कि परोपकार का माध्यम और संदेशप्रदाता है कुंभ.

देखते ही बनती है भव्यता

संतों के शिविरों में उनका वैभव देखते ही बनता है. ऊंचे सिंहासन, कीमती मालाएं, महंगे झूमर और सोफे भी भारतीय अध्यात्म जगत के वैभव का एक पहलू है. जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि का शिविर देखें तो ज्ञान और धन दोनों का वैभव एक साथ यहां मिलेगा. ऐसे ही निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, रामानंदाचार्य, रामानुजाचार्य, समेत अनेक संतों के आश्रम यहां वैभव की गवाही दे रहे हैं. अरैल क्षेत्र में स्वामी निदानंद सरस्वती मुनि का परमार्थ आश्रम शिविर अपने आप में वैश्विकता की झलक देता है. यहां देशी विदेशी संतों और पर्यटकों की खासी जमात है. राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संगम में पूजन कर यहीं आकर अपना संदेश दिया है. स्वामी चिदानंद मुनि आये दिन किसी न किसी वीवीआईपी को बुलाकर गंगा आरती कराते हैं. वह अपने किसी न किसी कार्यक्रम के माध्यम से मेले में चर्चा के केंद्र में बने हुए हैं.

सबको जोड़े रहा मेला

कुंभ मेले में कुंभ के अनेक आयाम हैं . यहां स्वच्छता का संदेश गूंजता है तो उसे अमल में लाते स्वच्छाग्रही भी लाल सड़क से लेकर मुक्ति मार्ग और मोरी मार्ग से लेकर अरैल तक घूम रहे हैं . गंगा में पुष्पार्पण करते भक्त हैं तो उन पुष्पों को फौरन अपने जाल में छान लेने वाले किशोर भी, ताकि गंगाजल निर्मल रहे. हवनकुंडों में अगर उत्तर का अनाज हविश के रूप में है तो दक्षिण के चंदन की समिधा भी है. समिधा प्रज्वलन से उठी अग्निशिखाएं त्यागवृत्ति की संदेशवाहक हैं. कुंभ दक्षिण से उत्तर को और पूरब से पश्चिम को जोड़ रहा है. यहां असम के व्यंजन हैं तो गुजरात के ढोकला का भी भोग लग रहा है. तमिलनाडु के डोसा और इडली खाने को पंजाब के रजिंदर रेस्टोरेंट में आधा घंटे से भी ज्यादा इंतजार करने को तैयार हैं.

इस प्रकार प्रयागराज का कुंभ मेला 2019 नवीनता के साथ वैश्विकता को भी समेटे रहा.

तुषार श्रीवास्तव
क्षे. का, प्रयागराज

कुंभ - सुरक्षा व्यवस्था, आपदा प्रबंधन

प्रयागराज में 15 जनवरी, 2019 से शुरू हुए इस अर्धकुंभ महापर्व के लिए यूपी सरकार द्वारा इस बार खास तैयारियां की गईं एक ओर जहां कुंभ मेले में देश विदेश से आए श्रद्धालुओं के लिए विश्वस्तरीय इंतजाम किए गए, वहीं दूसरी ओर सुरक्षा के लिए सेना, एयरफोर्स और एनडीआरएफ की टीमों की तैनाती की गई. इस बार के कुंभ को भव्य और सुरक्षित बनाने के साथ ही स्वच्छ कुंभ बनाने का भी प्रयास रहा. इस कुंभ के दौरान आपदा की हर स्थिति से निपटने की तैयारी की गई. पुलिस, प्रशासन और चिकित्सा विभाग ने मिलकर एक ऐसा प्लान तैयार किया, जिससे भगदड़ से लेकर केमिकल और न्यूक्लियर हमलों तक की स्थिति से निपटा जा सके. इसके लिए आर्मी, वायुसेना और एनडीआरएफ की मदद भी ली गई. इस सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन के कुछ मुख्य पहलू इस प्रकार रहे.

- ★ कुंभ मेले में श्रद्धालुओं के लिए सख्त सुरक्षा इंतजाम
- ★ पुलिस, जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग ने संयुक्त योजना बना कर काम किया
- ★ अस्पतालों में कुंभ मेले के श्रद्धालुओं के मुफ्त इलाज की व्यवस्था
- ★ भगदड़, विस्फोट और परमाणु हमले तक से निपटने के इंतजाम

कुंभ मेला के दौरान प्रयागराज में लगभग 15 करोड़ श्रद्धालुओं के उमड़ने की उम्मीद जताई गई थी, जिसे देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए. हालांकि भीड़ का आंकड़ा इससे ऊपर रहा. मेले में देशी-विदेशी मेहमानों और श्रद्धालुओं के पहुंचने का औपचारिक आगाज मंगलवार (15 जनवरी) से शुरू हो गया. इस बार का मेला करीब 50 दिनों तक चला जिसमें लगभग 12 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पहुंचे. इस दौरान लोगों की भारी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए. इस बार प्रयागराज में करीब 3200 हेक्टेयर भूमि क्षेत्र में आयोजित किए गए इस मेले के दौरान व्यापक सुरक्षा व्यवस्था को लेकर यूपी के डीजीपी ओपी सिंह ने प्रशासन द्वारा किए गए इंतजामों के बारे में जानकारी दी. उन्होंने बताया कि किसी भी तरह के हादसे को रोकने के लिए पुलिस आधुनिक तकनीकों से पूरी तरह से लैस होगी.

मेला क्षेत्र में आतंकवादियों, अपराधियों और संदिग्ध तत्वों की गतिविधियों पर 'त्रिनेत्र ऐप' के जरिये नजर रखी जा रही थी. यहां तक कि इस बार सोशल मीडिया पर भी कड़ी नजर रखी गई. किसी भी साइट पर कोई गलत सामग्री होने पर उसे तुरंत ब्लॉक कर दिए जाने के सख्त निर्देश दिये गए. मेला क्षेत्र में आतंकी गतिविधियों से निपटने के लिए आतंकवाद रोधी स्क्वाड के कमांडो, बम निरोधक दस्तों और खुफिया एजेंसियों की तैनाती की गई. पूरे मेला क्षेत्र को नौ जोन और 20 सेक्टरों में बांटा गया, जहां 20 हजार से अधिक पुलिसकर्मी, 6 हजार होमगार्ड, 40 थाने, 58 चौकियां, 40 दमकल स्टेशन, केन्द्रीय बलों की 80 कंपनियां और पीएसी की 20 कंपनियां तैनात की गई हैं. इस बार के कुंभ में त्रि-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था के इंतज़ाम किए गए. पहली पंक्ति में कुंभ मेला क्षेत्र, दूसरी पंक्ति में प्रयागराज नगर और तीसरी पंक्ति में आसपास के जिलों में सुरक्षा बलों की तैनाती थी. सेना के हेलीकाप्टरों द्वारा ड्रोन के माध्यम से पूरे क्षेत्र की निगरानी की जा रही थी. शाही स्नान के तीनों मुहूर्तो के दिन सुरक्षा व्यवस्था और ज्यादा पुख्ता कर दी गई.

सुरक्षा व्यवस्थाओं के साथ ही आपदा प्रबंधन हेतु भी इस कुंभ मेले में प्रशासन द्वारा व्यवस्थित इंतज़ाम किए गए. इस महा जन सैलाब वाले पर्व में अनायास ही किसी प्रकार की प्राकृतिक और गैर-प्रकृतिक आपदा का होना स्वाभाविक है. इसलिए केंद्र और राज्य सरकार की खुफिया एजेंसियों द्वारा मिलकर मेले के लिए ऐसे इनपुट इकट्ठा किए गए, जिससे किसी आपातकालीन स्थिति से पहले ही बचा जा सके. हालांकि मेले में किसी घटना के घटित होने के बाद उससे निपटने की तैयारियां भी योजनाबद्ध तरीके से की गईं थीं. आपदा की स्थिति में जहां एंबुलेंस के लिए ग्रीन कॉरिडोर तैयार किए गए, वहीं वाटर और एयर ऐम्बुलेंस की तैनाती भी की गई. मेले में सेंट्रल हॉस्पिटल के साथ ही शहर के सरकारी और निजी अस्पतालों और सैन्य अस्पताल में भी करीब एक हजार बेड रिजर्व करवाए गए.सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन हेतु निम्न नए कदम उठाए गए:

इमर्जेंसी में मदद के लिए एयरफोर्स की टीम तैयार -

आपदा प्रबंधन के नोडल ऑफिसर डॉ. ऋषि सहाय के अनुसार मेले में भगदड़, नाव पलटने से लेकर विस्फोट, केमिकल और न्यूक्लियर हमलों तक की स्थिति से निपटने की तैयारी की गई. आपदा के नजरिए से मेले को 36 क्षेत्रों में बांटा गया और हर क्षेत्र में एक क्विक मेडिकल रेस्पॉन्स टीम तैनात की गयी है जो सिर्फ दो मिनट में स्पॉट पर पहुंचेगी. आपदा के नजरिए से प्रोटोकॉल भी तैयार किया गया. 80 एम्बुलेंस, 4 रिवर एम्बुलेंस और एक एयर एम्बुलेंस भी हर वक्त तैनात रहेगी. इसके साथ ही एयर फोर्स की टीम भी आपदा

की स्थिति में मदद के लिए तैयार रहेगी. एम्बुलेंस के लिए आपदा प्रबंधन टीम को आर्मी की मेडिकल कोर, विस्फोटक विशेषज्ञों और एनडीआरएफ से ट्रेनिंग दिलवाई गई.

एक हजार से अधिक सीसीटीवी से निगरानी-

प्रशासन ने 1000 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरों की मदद से पूरे मेला क्षेत्र की निगरानी की व्यवस्था की. पूरे इलाके पर नजर रखने के लिए 40 निगरानी टावरों का निर्माण किया गया जिसकी मदद से पुलिस के जवान मेला क्षेत्र की हर गतिविधि पर नजर रख सके.

अग्निशामक दलों की व्यवस्था -

आपातकालीन आग से बचाव के लिए मेला क्षेत्र में 40 अग्निशमन केन्द्र और 15 अग्निशमन चौकियों की स्थापना की गई. जहां ज्यादा क्षमता वाली दमकल ट्रकें, पानी की बौछार करने वाली बाइक्स और जीपें उपलब्ध थीं. इसके अलावा फायर एंबुलेंस और सांस लेने वाले उपकरण भी मौजूद थे. किसी तरह की जरूरत पड़ने पर इन केन्द्रों से संपर्क किया जा सकता है.

बाइस हजार जवानों की तैनाती-

मेले में राज्य पुलिस बल, पीएसी और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के करीब 22,000 जवानों की तैनाती भी की गई. इसके अलावा जरूरत के अनुसार समय-समय पर आर्मी के जवानों को भी तैनात किया गया. आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए पूरे मेला क्षेत्र में 40 पुलिस थाने, 3 महिला पुलिस थाने और 60 पुलिस चौकियां स्थापित की गईं. इसके अलावा 4 पुलिस लाइन भी बनाए गए. किसी भी प्रकार की असुविधा होने पर श्रद्धालु यहां संपर्क कर पाएंगे. 24 घंटे निगरानी के लिए मेला क्षेत्र में 1 घुड़सवार पुलिस लाइन को भी स्थापित किया गया, जहां से घोड़े पर सवार पुलिसकर्मी हर समय मेला क्षेत्र की निगरानी कर रहे थे.

खोया-पाया: खोए लोगों का किया जाएगा डिजिटल पंजीकरण-

मेले में लोगों की सुविधा के लिए पुलिस विभाग ने 15 उच्च तकनीक वाले खोया-पाया केन्द्रों की स्थापना की. इन केन्द्रों पर श्रद्धालु अपने खोए हुए साथियों का डिजिटल पंजीकरण करा सकेंगे. पंजीकरण के बाद स्पीकर से लापता व्यक्ति के नाम अनाउंस किए जाएंगे. ये संदेश सोशल मीडिया पर भी शेयर किए जाएंगे. इसके अलावा इसके लिए एक खास वेबसाइट भी शुरू की गई, जहां लोग खोए हुए लोगों की लिस्ट उनकी फोटो के साथ देख पाएंगे. मेला क्षेत्र में लापता व्यक्तियों के बारे में सूचना देने के लिए एक हेल्पलाइन नंबर (1920) भी जारी किया गया. इसके अलावा सामान खोने की रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा एक डेडिकेटेड वेबसाइट बनाई गई, जिस पर जाकर इसकी शिकायत दर्ज कराई जा सकती है.

स्वास्थ्य सेवा: तैयार किया गया है 40 बिस्तरों वाला ट्रॉमा सेंटर

लोगों की भीड़ को ध्यान में रखते हुए मेला क्षेत्र में 40 बिस्तरों वाला एक ट्रॉमा सेंटर स्थापित किया गया. इसके अलावा गंभीर रोगियों के उपचार के लिए न्यूरो सर्जरी, न्यूरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, इन्डोक्रइनोलॉजी, यूरोलॉजी, प्लास्टिक सर्जरी, आनको सर्जरी, सीटीवीएस गैस्ट्रोइन्ट्रोलॉजी और कार्डियोलॉजी जैसे 10 सुपर स्पेशलिटी डिपार्टमेंट भी 24 घंटे उपचार के लिए उपलब्ध कराए गए. मेला क्षेत्र में आईसीयू की सुविधाओं से सम्पन्न 100 बिस्तरों वाला एक हॉस्पिटल भी बनाया गया. इसके अलावा किसी भी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटना की स्थिति से निपटने के लिए शहर के स्वरूप रानी नेहरू हॉस्पिटल में 30 और अन्य सरकारी अस्पतालों में 5-5 बिस्तर रिजर्व किए गए. आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने के लिए करीब 80 एंबुलेंस भी मेले में चलाई गईं. निजी अस्पतालों को निर्देश दिए गए कि वे मुख्य स्नान पर्वों पर मेला क्षेत्र से पहुंचने वाले मरीजों का मुफ्त इलाज करें. ऐसा ना करने पर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी. मेले में तीन सौ डाक्टरों की तैनाती हुई. इसके साथ ही मेदांता अस्पताल के एक कार्डियोलॉजिस्ट और एक फिजीशियन ने पूरे मेले में अपनी सेवाएं दी. इस मेले में स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए लगभग 234 करोड़ रूपए खर्च किए गए.

बाढ़ नियंत्रण: लाइफ जैकेट के साथ तैनात प्रशिक्षित पुलिसकर्मी

मेले में भगदड़ रोकने के लिए भी तमाम उपाय किए गए. इससे निपटने के लिए उच्च जोखिम वाले इलाकों में बैरीकेटिंग की गई. इन इलाकों में हर समय पुलिस की तैनाती करवाई गई. इसके अलावा इस तरह की किसी आपातस्थिति से निपटने के लिए विशेष आपदा प्रबंधन बलों की भी तैनाती की गई. स्नान के दौरान डूबने से बचाने के लिए लाइफ जैकेट के साथ विशेष रूप से प्रशिक्षित पुलिस बल को भी तैनात किया गया. इनके पास बड़ी संख्या में जेट्टी, सोनार सिस्टम, नाव आदि जैसे उपकरण उपलब्ध थे.

कुल मिलाकर इस कुंभ महापर्व को भव्य और स्वच्छ बनाए जाने के साथ ही श्रद्धालुओं के लिए एक सुरक्षित कुंभ बनाने पर भी प्रशासन ने बल दिया ताकि आस्था का यह पर्व किसी परिवार के लिए किसी अपने को खोने का कारण न बने. प्रशासन ने इस कुंभ मेले को आपदा रहित बनाने के लिए सभी मैनुअल और डिजिटल माध्यमों को अपनाया और निश्चित रूप से यह कुंभ एक सुरक्षित कुंभ साबित हुआ. 4 मार्च, 2019 महाशिवरात्रि के पावन शाही स्नान के साथ यह लगभग 50 दिनों का अर्धकुंभ महापर्व निरापद रूप से सम्पन्न हुआ.

शारदा साव

क्षे. का, दुर्गापुर

कुंभ मेले का आर्थिक व्यवस्था पर प्रभाव

कुंभ मेले के आयोजन का प्रावधान कब से है इस बारे में विद्वानों में अनेक भ्राँतियाँ हैं. सदियों से आयोजित किए जा रहे इस कुंभ मेले ने हाल के दशकों में बहुत बड़ा रूप ले लिया है.

प्रयागराज में कुंभ मेले का आयोजन प्रत्येक 12 साल पर होता है तथा अर्धकुंभ हर 6 साल में. महाकुंभ पृथ्वी पर मनुष्य का सबसे बड़ा समूह माना जाता है. वैदिक और पौराणिक काल में कुंभ तथा अर्धकुंभ स्नान में आज जैसी प्रशासनिक व्यवस्था का स्वरूप नहीं था.. 2001 में आयोजित कुंभ मेला इलाहाबाद का पहला ऐसा 'मेगा मेला' था.

मौजूदा कुंभ की बात की जाए तो इस बार सरकार इसके आयोजन पर क़रीब ₹ 4200 करोड़ रुपए ख़र्च कर रही है जो कि पिछली बार हुए कुंभ की तुलना में तीन गुना ज़्यादा है. यह अब तक का सबसे महंगा तीर्थ आयोजन बन गया है. वर्ष 2013 में महाकुंभ मेले पर क़रीब ₹ 1,300 करोड़ की राशि ख़र्च की थी. कुंभ मेले का परिसर पिछली बार के मुक़ाबले क़रीब दुगुने वृद्धि के साथ 3,200 हेक्टेयर है, वर्ष 2013 में इसका फैलाव 1,600 हेक्टेयर तक था.

उद्योग में लाभ

भारतीय उद्योग परिसंघ ने एक अनुमान लगाया है कि 49 दिन तक चलने वाले इस मेले से राज्य सरकार को क़रीब एक लाख बीस हज़ार करोड़ रुपए का राजस्व मिलने की उम्मीद है. ख़ुद सरकार ने इस तरह का कोई अनुमान अब तक नहीं लगाया है लेकिन सरकार को आय ज़रूर होती है.

पिछले कुंभ, अर्धकुंभ या फिर हर साल प्रयाग क्षेत्र में लगने वाले माघ मेले में अब तक इस तरह के आंकड़े जुटाने का प्रयास नहीं किया गया लेकिन इस बार किया जा रहा है. सरकार को यह आय दो तरह से होती है, एक तो प्राधिकरण की आय है और दूसरी जो कई तरीक़े से होते हुए राज्य के राजस्व खाते में जाती है.

प्राधिकरण मेले में जो दुकानें आबंटित की जाती हैं, तमाम कार्यक्रमों की अनुमति दी जाती है, कुछ व्यापारिक क्षेत्रों का आवंटन किया जाता है, इन सबसे थोड़ी बहुत आय होती है. मसलन इस बार लोगों ने क़रीब दस करोड़ रुपये कमाए हैं कुंभ मेले से! लेकिन परोक्ष रूप से इसकी वजह से राज्य के राजस्व में काफ़ी लाभ होता है जिसका इस बार अध्ययन भी हो रहा हैं.

भारतीय उद्योग परिसंघ की एक रिपोर्ट की मानें तो मेले के आयोजन से जुड़े कार्यों में छह लाख से ज़्यादा कामगारों के लिए रोज़गार उत्पन्न हो रहा है. रिपोर्ट में अलग-अलग मदों पर होने वाले राजस्व का आकलन किया गया है, जिसमें आतिथ्य क्षेत्र, एयरलाइंस, पर्यटन, इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों से होने वाली आय को शामिल किया गया है. रिपोर्ट के मुताबिक़ इन सबसे सरकारी एजेंसियों और व्यापारियों की कमाई बढ़ती है. यही नहीं, कुंभ में इस बार जगह-जगह लक्ज़री टेंट, बड़ी कंपनियों के स्टॉल इत्यादि की वजह से भी आय की बड़ी संभावना है.

हालांकि यह आकलन बहुत भरोसेमंद नहीं हैं. इस बार अर्धकुंभ है जो सरकार कुंभ से प्रचारित कर रही है. अर्धकुंभ में भी ज़्यादातर लोग आस-पास से ही आते हैं जबकि कुंभ में बाहर से आने वालों की तादाद काफ़ी होती है. इसलिए जो लोग आ रहे हैं, वो अर्थव्यवस्था में बहुत ज़्यादा योगदान देने वाले लोग नहीं हैं. वहीं बड़ी कंपनियां सि.र्फ अपने प्रचार-प्रसार के मौक़े तलाशने यहां आई हैं, उन्हें कारोबार से ज़्यादा न तो उम्मीद है और न ही वो कमाई कर पा रही हैं. छोटे व्यापारी जो कमाई करते हैं उससे भी सरकार को कुछ न कुछ राजस्व की प्राप्ति होती ही है लेकिन यह राशि इस आयोजन पर ख़र्च होने वाले धन की तुलना में बहुत कम होती है. अतः सरकार को सीधे भले ही राजस्व की प्राप्ति ज़्यादा न होती हो लेकिन परोक्ष रूप से तो पर्याप्त लाभ होता ही है. बहरहाल, कुंभ जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन पर सरकार भले ही लाभ को ध्यान में रखकर न ख़र्च करती हो लेकिन ख़र्च की तुलना में आय के आंकड़े ज़्यादा दिखते हैं.

पर्यटन

मेले में बड़ी संख्या में विदेशी नागरिक-ऑस्ट्रेलिया, यूके, कनाडा, मलेशिया, सिंगापुर, साउथ अफ्रीका, न्यूज़ीलैंड, ज़िम्बावे और श्रीलंका जैसे देशों से भी आ रहे हैं. कुंभ की वजह से पड़ोसी राज्यों

जैसे राजस्थान, उत्तराखंड, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के राजस्व में भी बढ़ोत्तरी संभव होती है क्योंकि बड़ी संख्या में देश और विदेश से आने वाले पर्यटक इन राज्यों में भी घूमने जाते हैं. राज्य सरकार के पर्यटन विभाग ने मेहमानों को रहने के लिए और अन्य जगहों की यात्रा साथ-साथ करने संबंधी टूरिज़्म पैकेज भी तैयार किया है और निजी क्षेत्र में इस बार जगह-जगह लक्ज़री टेंट में ठहरने का एक दिन का किराया दो हजार रुपये से लेकर पैंतीस हज़ार रुपये तक बताया जा रहा है. यही नहीं, कुंभ में, बड़ी कंपनियों के स्टॉल्स इत्यादि की वजह से भी आय की संभावना है.

विकास के अवसर-रोजगार और आर्थिक संरचना

पिछले 12 महीनों में शहर के बुनियादी ढांचे में बहुत बड़ा बदलाव आया है. यहां बना एक नया हवाई अड्डा दिल्ली से एक घंटे से भी कम समय में आगंतुकों को यहां पहुंचा रहा है. रेलवे ने भी भीड़ को देखते हुए कई ट्रेनों की घोषणा की है.. इस मेले के दौरान 35 लाख श्रद्धालुओं द्वारा ट्रेन से यात्रा करने की उम्मीद है जिनके लिए स्टेशनों को संवारा और बड़ा किया गया है. इस बार ऐसे उपाय किए गये हैं कि पिछली बार इस मेले के दौरान मची भगदड़ जैसी कोई घटना नहीं हो. पिछली बार उस दौरान 40 लोगों की मौत हो गई थी.

कई प्लेटफॉर्म्स को जोड़ते हुए एक पैदल यात्री पुल का निर्माण किया गया है तथा आगमन और प्रस्थान करने वाले यात्रियों के लिए कलर कोड के साथ वेटिंग एरिया बनाया गया है ताकि भीड़ को नियंत्रित किया जा सके. इस मेले को देखते हुए पांच हज़ार अतिरिक्त रेलवे कर्मचारियों को यहां लाया गया है. मेले के दौरान यातायात और सुरक्षा से निपटने के लिए 30 हज़ार से अधिक पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवानों को तैनात किया गया है.

इससे पहले का कुंभ 2013 में इलाहाबाद में हुआ था. महाकुंभ जो हर 144 सालों बाद होता है और 12 पूर्ण कुंभों के बाद होता है, इसमें लगभग 10 करोड़ तीर्थयात्री आए थे. जो तीर्थयात्री आसपास से आते हैं वे अपना खाना साथ लेकर आते हैं लेकिन धार्मिक संगठन और तीर्थयात्री ख़ुद भी कैंप लगाते हैं जो एक महीने तक लगे रहते हैं. कई बार वे खाने पीने की चीजों के लिए सरकार पर आश्रित रहते हैं. मेला स्थल पर चावल, आटा, चीनी और खाना पकाने के लिए मिट्टी का तेल वितरित करने के लिए पांच गोदाम और 160 उचित मूल्य की दुकानें लगाई गईं. कुल मिलाकर इस उत्सव के लिए 5,384 टन चावल, 7,834 टन गेहूं का आटा, 3,174 टन चीनी और 767 किलोलीटर मिट्टी के तेल की व्यवस्था की गई. मेले में मुफ़्त और स्वच्छ पेयजल के लिए 160 डिस्पेंसर लगाए गए.

मेले में लोगों की शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के मद्देनजर 93 डॉक्टरों और 1500 से अधिक स्वास्थ्य कर्मी, फार्मसिस्ट और दंत विशेषज्ञों की टीम बनाई गयी. इसके अलावा 80 आयुर्वेदिक प्रैक्टिशनर पुरातन विधि से इलाज कर रहे थे. अस्पतालों में सर्जरी करने और एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड और लैब टेस्ट करने की भी सुविधा है. 86 एंबुलेंस, नौ रिवर एंबुलेंस और एक एयर एंबुलेंस भी है. सुरक्षा के लिए 3 पुलिस लाइन, 40 थाने, 20 हजार पुलिसकर्मी, पीएसी की 20 कंपनी, पैरामिलिट्री की 17 कंपनियों को तैनात किया गया था.

कुंभ मेला हमेशा बड़े व्यापार को अवसर देता है. कंपनियों पारंपरिक मनोरंजन और आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर उपभोक्ताओं के साथ कनेक्ट करने हेतु अपने ब्रांड को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास करती है.

कुंभ में इस वर्ष पंद्रह करोड़ लोगों के आने की संभावना है और इस लिहाज़ से कुछ गणनाएं ऐसी भी की गई हैं कि यदि हर व्यक्ति लगभग 500 रुपये ख़र्च कर रहा है तो ये आंकड़ा क़रीब 7500 करोड़ रुपये के ऊपर पहुंचता है.

कुंभ जैसे सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजन में आय का मूल्यांकन नहीं किया जाता है लेकिन जिस जगह पर ऐसे आयोजन होते हैं वहां अर्थव्यवस्था में धन का प्रवाह होता है जिसकी वजह से स्थानीय स्तर पर लोग लाभ लेते हैं और आख़िरकार तमाम तरीक़े से ये फ़ायदा राज्य सरकार का ही होता है.

आयुषी अग्रवाल
क्षे. का., जयपुर

कल्पवास

जब-जब प्रयाग का नाम हमारी जिह्वा पर आता है, तब-तब कल्पवास का स्मरण ज़रूर होता है. प्रयाग (प्रयागराज अथवा इलाहाबाद) अत्यंत ही महत्वपूर्ण एवं अद्भुत देवस्थान है, जहां हर छः वर्ष में अर्ध कुंभ या कुंभ का आयोजन एवं बारह वर्ष में महाकुंभ का आयोजन होता है. कल्पवास हर वर्ष गंगा तट पर लाखों श्रद्धालुओं द्वारा सामूहिक रूप से आयोजित होने वाला एक ऐसा पर्व है जहां हर जाति, धर्म, समाज, उम्र, तबके, द्वारा सम्पूर्ण मन से एक जैसी व्यवस्था को अपना कर आत्मा की शुद्धि की जाती है. शासन द्वारा आम जनता के लिए लगभग सारी व्यवस्थाएं की जाती हैं, जिससे कि आम जन को कल्पवास के दौरान कोई दिक्कत का सामना न करना पड़े.

इस परंपरा के महत्व की चर्चा वेदों से लेकर महाभारत और रामचरित मानस में अलग-अलग नामों से मिलती है. आज भी कल्पवास नयी एवं पुरानी पीढ़ी के लिए अध्यात्म की राह का एक पड़ाव है, जिसके जरिये स्वनियंत्रण एवं आत्मशुद्धि का प्रयत्न किया जाता है. कल्पवास के लिए माना जाता है कि मोहमाया से मुक्त और जिम्मेदारियों को पूरा कर चुके व्यक्ति को ही कल्पवास करना चाहिए क्योंकि आजकल के बदलते परिवेश में जिम्मेदारियों से जकड़े व्यक्ति के लिए एक माह का समय निकाल पाना कठिन माना जाता है. कल्पवास करने के कुछ नियम भी पुराने समय से चले आ रहे हैं जैसे कि कल्पवासी को जमीन पर शयन करना होता है, इस दौरान फलाहार, एक समय का आहार या निराहार रहने का भी प्रावधान है. कल्पवासियों को नियम पूर्वक तीन समय गंगा स्नान, यथा संभव भजन कीर्तन, प्रभु की चर्चा व प्रभु की लीला का दर्शन करना चाहिए. चूंकि कल्पवासी को लगभग एक माह का समय गंगा तट पर व्यतीत करना होता है, अतः वह अपनी सारी व्यस्थाओं के साथ यहाँ पर आता है. कल्पवास की शुरुआत करने के बाद इसे बारह वर्ष तक जारी रखने की परंपरा है, परंतु कल्पवास के दौरान जो नयी ऊर्जा और अध्यात्म का प्रवाह हमारे जीवन में होता है उसकी वजह से अधिकतर लोग ऐसे जीवन पर्यंत जारी रखते हैं. भारतीय परंपरा के अनुसार चार आश्रमों के सिद्धांत ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास के अंतर्गत तीसरा आश्रम व्यतीत कर चुके व्यक्तियों, यानी उनके लिए जो अपनी उम्र के पचास साल पूरे कर चुके हैं निश्चित किया गया था क्योंकि गृहस्थ आश्रम व्यतीत कर चुके गृहस्थी लोग उस वक्त अपना अधिकतम समय आर्यण्य यानि जंगल में व्यतीत किया करते थे.

कल्प उसे कहा जाता है जब व्यक्ति ईश्वर आसक्त होकर पूरे ब्रह्मचर्य के साथ एक प्रकार की ही दिनचर्या को एक निश्चित अवधि के लिए करता है. इस प्रकार की दिनचर्या को प्रायः लंबी अवधि वाले धार्मिक अनुष्ठानों के दिनों में किया जाता है. कुंभ भी एक लंबा धार्मिक अनुष्ठान है इसलिए कुंभ की पूरी अवधि भी लगभग 50 दिनों की होती है. इसमें भगवान की भक्ति में आशक्त होकर पूरे दिन हवन, मंत्र जाप, स्नान आदि जैसी क्रियायों को कल्पवास कहा जाता है. आधुनिकता के जीवन में आगमन के साथ-साथ व्यक्ति के कल्पवास के तरीके में बदलाव ज़रूर हुये हैं परंतु उसका मुख्य लक्ष्य जीवन में शांति और ऊर्जा का संचार ही है. इस एक माह के समय में इंसान अपने बारे में, समाज के बारे में और जीवन से जुड़े अध्यात्म के विभिन्न पहलुओं के बारे में मनन और चिंतन करता है जो उसको जीवन को जीने के नए आयाम देता है. कल्पवास के दौरान अनेकता में एकता देखने को मिलती है, जहां पर हर व्यक्ति एक ही तरह की जीवन शैली को अपनाता है और एक दूसरे की जीवन शैली से वाकिफ होता है. यहाँ पर लाखों साधु-संतों की मौजूदगी मात्र ही जीवन में अध्यात्म की प्रेरणा देती है.

कुंभ मेले के दौरान संगम तट पर रहने वाले श्रद्धालु कल्पवासी कहलाते हैं. पुराणों और धर्म शास्त्रों में इसे आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के लिए जरूरी बताया गया है, वहीं आधुनिक विज्ञान के मुताबिक हमारे पूर्वजों ने इस महान स्नान पर्व की शुरुआत करके आमजन को शारीरिक रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने की दिशा में एक सूझबूझ भरा कदम उठाया है. कल्पवास के बारे में मत्स्य पुराण में लिखा गया है कल्पवास का अर्थ होता है संगम के तट पर निवास कर वेद अध्ययन और ध्यान करना. कुंभ में कल्पवास का अधिक महत्व माना जाता है. कल्पवास पौष महीने के

11वें दिन से माघ के 12वें दिन तक रहता है. पद्मपुराण के अनुसार संगम तट पर रहने वालों को सदाचारी, शांत मन वाला व जितेंद्रिय होना चाहिये.

मत्स्य पुराण के अनुसार जो कल्पवास की प्रतिज्ञा करता है, वह अगला जन्म राजा के रूप में लेता है, और जो मोक्ष की अभिलाषा लेकर कल्पवास करता है उसे अवश्य मोक्ष मिलता है, सवाल उठता है कि कल्पवास क्यों और कब से चला आ रहा है. असल में कल्पवास वेद कालीन अरण्य संस्कृति की देन है, कल्पवास का नियम हमारे यहाँ हजारों वर्षों से चला आ रहा है. जब प्रयाग क्षेत्र में गंगा जमुना के आसपास घना जंगल था, इस जंगल में ऋषि मुनि ध्यान और तप करते थे. वह पत्तों और घास-फूस से बनी कुटिया में रहते हैं, जिसे पर्णकुटी कहते हैं. इस दौरान दिन में एक ही बार भोजन किया जाता है, मानसिक रूप से धैर्य, अहिंसा और भक्तिभाव का पालन किया जाता है. दिन में संतों की सतचर्चा या सत्संग किया जाता है और देर रात तक भजन कीर्तन चलता है. इस प्रकार यह लगभग दो महीने का समय सांसारिक भागदौड़ से दूर तन और मन को नयी स्फूर्ति से भर देने वाला होता है.

कल्पवास न सिर्फ भारत वर्ष में विख्यात है अपितु विदेशों से भी लोग कुंभ के दौरान कल्पवास करने आते हैं. इसकी ख्याति को देखकर कुछ वैज्ञानिकों ने इस महापर्व को तर्क की कसौटी पर कसने का प्रयास किया, हैरानी की बात है कि उन्होंने पाया कि जाने अनजाने हर साल सामूहिक स्नान की प्रक्रिया हमारे शरीर में रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देती है,

इससे भी बढ़कर तथ्य यह है कि हमें कोई दवा या बाहरी कारक की जरूरत नहीं पड़ती. सब कुछ प्राकृतिक तरीके से हो जाता है. जब रोग फैलाने वाले बैक्टीरिया वायरस से संपर्क में आते हैं तो हमारा शरीर उनके खिलाफ एंटीबॉडी बनाता है, एंटीबॉडी प्रोटीन के बने हैं जो हमारे शरीर की कोशिकाओं में बनते हैं और बीमारियों से शरीर की रक्षा करते हैं. कुंभ स्नान और कल्पवास के जरिए कल्प वासियों का शरीर पहले तो प्रकृति में या कल्पवास करने आए दूसरे कल्पवासियों के शरीर में मौजूद नए रोगों और रोग फैलाने वाले सूक्ष्मजीवों के संपर्क में आते हैं जिसके परिणाम स्वरुप उनके शरीरों में इन रोगों के खिलाफ एंटीबॉडी बनना शुरू हो जाती है.

बारबार स्नान करने से शुरुआती दिनों में ही शरीर में एंटीबॉडी बनती है इसका असर यह होता है कि शरीर में रोग पनप नहीं पाता बल्कि उसके खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता पैदा होने लगती है, इस तरह से डेंगू, चिकनगुनिया, टीबी और दूसरी बीमारियों के खिलाफ शरीर मजबूत हो जाता है. कुंभ स्नान सर्दियों में होता है और इसी नदियों का जल लगभग 7 से 12 डिग्री के आसपास रहता है और इतने कम तापमान में रोग फैलाने वाले जीव तेजी से पनप नहीं पाते हैं. इसके बाद दूसरा अहम तत्व है भोजन, कल्पवास करने वाले श्रद्धालु शुद्ध सात्विक भोजन करते हैं यह भोजन रोगों का मुकाबला करनें में शरीर की मदद करता है और उसकी प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है.

चकाचौंध से दूर कुछ ऐसे भी कैंप लगे होते हैं जिसमें देश के कोने-कोने से आकर लोग कल्पवास करते हैं. इन कल्पवासियों की आस्था कुंभ मेले की रीढ़ बनी हुई है. ऐसा माना जाता है कि कल्पवास करने से वस्तुत: साधक का काया कल्प हो जाता है. मनसा, वाचा कर्मणा व पवित्रता के बिना कल्पवास निष्फल हो जाता है, इसीलिए कल्पवास के लिए कठोर नियम बताए गए हैं जिनमें झूठ ना बोलना, हिंसा व क्रोध ना करना दया-दान करना, नशा ना करना, सूर्योदय से पूर्व उठना, नित्य प्राय: संगम स्नान, तीन समय संध्या पूजन, हरिकथा श्रवण, एक समय भोजन व भूमि पर शयन करना मुख्य हैं. कड़कती सर्दी में गंगा-यमुना और सरस्वती के मिलन स्थल पर कल्पवास की परंपरा आदि काल से चली आ रही है. तीर्थराज प्रयाग में संगम के निकट हिंदू माह महीने में कल्पवास करते हैं. मानना है कि प्रयाग में सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने के साथ शुरू होने वाले एक मास के कल्पवास से एक कल्प अर्थात ब्रह्मा के एक दिन का पुण्य मिलता है.

कल्पवास के दौरान जौ का बीजारोपण किया जाता है कल्पवास की शुरुआत के पहले दिन तुलसी और शालिग्राम की स्थापना और पूजन होता है कल्पवासी अपने कुटिया के बाहर जौ का बीज रोपित करते हैं और कल्पवास की समाप्ति पर इस पौधे को कल्पवासी अपने साथ ले जाते हैं जबकि तुलसी को गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है.

इस प्रकार यह लगभग एक महीने से ज्यादा का समय सांसारिक भाग दौड़ से दूर तन और मन को नयी स्फूर्ति से भर देने वाला होता है. वर्ष 2019 में कुंभ के दौरान करोड़ों लोग कल्पवास करने आए और प्रयाग की पावन धरती में अपने पाप को धो कर और पुण्य कमा कर चले गए. इस वर्ष का कुंभ और कल्पवास हर वर्ष की तरह ही था परंतु इसकी चर्चा न सिर्फ देश में हुयी अपितु विदेशों में भी इसकी ख्याति हुयी. यह लोगों का बढ़ता विश्वास ही है जो कल्पवास को देशव्यापी बनाता है, नहीं तो लोग कड़कती ठंड में गंगा के खुले मैदान में सूर्योदय से पहले दैनिक स्नान न करते. हर वर्ष कल्पवासियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है और कल्पवासियों की संख्या में वृद्धि देखकर शासन ने भी सुविधा एवं सुरक्षा के इंतजाम में कोई कसर नहीं छोड़ी. सच कहते हैं लोग 'कुंभ नहीं देखा तो क्या देखा'.

मधु दुबे
क्षे. का., प्रयागराज

लक्ष्मीपति त्रिपाठी

आचार्य, महामंडलेश्वर किन्नर अखाड़ा

प्रयागराज का इस वर्ष का यह अर्धकुंभ, जिसे महाकुंभ की संज्ञा दी गयी है, अनेक कारणों से तथा अपने 'न भूतो न भविष्यति' जैसे महा आयोजन को लेकर पूरे विश्व में ख्यातकीर्त हो गया है. अनेक बातें इस आयोजन का आकर्षण बन गयी हैं लेकिन, इस कुंभ का सबसे बड़ा आकर्षण तथा विशिष्टता रही-'किन्नर अखाड़ा'. अनेक अखाड़ों से भरपूर साधुओं के आगमन से छलकता और यात्रियों के उत्साह से लबालब यह महाकुंभ अनेक गतिविधियों का भी आयोजक रहा. लेकिन 'किन्नर अखाड़े' को जो स्वागत और सम्मान मिला, वह शायद ही इससे पूर्व कभी किसी अखाड़े को मिला होगा.

'किन्नर अखाड़े' के आचार्य महामंडलेश्वर के रूप में लक्ष्मी पति त्रिपाठी जी ने पूरे विश्व में अपनी एक आभा तैयार की है. भीड़ में हर एक का मुस्कराते हुए स्वागत करने वाली, सभी से बात करने के साथ अपने आशीर्वाद और प्रसाद से सबको नवाजने वाली, लक्ष्मी पति त्रिपाठी जी ने अपने सभी किन्नर साथियों /सहेलियों के साथ वर्ष 2015 में ही अखाड़ा बनाया. वर्ष 2016 उज्जैन में उन्हें उस अखाड़े का आचार्य महामंडलेश्वर बनाया गया. यह किन्नर अखाड़े का प्रथम कुंभ था. प्रयागराज में किन्नर अखाड़े का बोलबाला इसलिए कुछ ज्यादा हुआ क्योंकि इस बार 'किन्नर अखाड़े' को जूना अखाड़े के साथ इतिहास में पहली बार 'शाही स्नान' का सम्मान दिया गया. हालांकि कोई सम्मान न तो लिया जाता है या ना तो दिया जाता है. सम्मान की यह भावना आपको अपने लिए अर्जित करनी होती है और किन्नर अखाड़े ने अपने बलबूते पर यह स्थान अर्जित किया है. 'प्रयागराज महाकुंभ' में अपना विशिष्ट स्थान निर्माण करनेवाले 'किन्नर अखाड़े' के आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मी पति त्रिपाठी जी से सनातन धर्म, समाज की मानसिकता, कुंभ आदि विषयों पर हुई बातचीत के कुछ अंश:

सवाल: 'किन्नर अखाड़े' की महामंडलेश्वर बनकर तथा जूना अखाड़े के साथ शाही स्नान करने के पश्चात आप कैसा महसूस कर रही हैं?

जवाब: देखिए, हमने सम्मान किसी से मांगा नहीं, जबकि धर्म में हमारा जो स्थान है, वही स्थान हमें दिया गया. हमने कुछ ज्यादा मांगा नहीं और उन्होंने कुछ ज्यादा दिया नहीं. हम इस समाज में सम्मान के साथ पहले मौजूद थे आदिशंकराचार्य जी ने हिन्दू सनातन और वैदिक सनातन धर्म की स्थापना की. जब बौद्ध और जैन धर्म का प्रभाव ज्यादा बढ़ गया तब उन्होंने 'पीठ' की स्थापना कर एक अखाड़े की भी स्थापना की. इस एक अखाड़े से और सात अखाड़े बनाए गए. हालांकि यह बात एक दिन में नहीं हुई है. धीरे-धीरे समय के साथ ये अखाड़े बनते गये. वैसे तो हमारा अस्तित्व हिन्दू धर्म में है, इसाई धर्म में है और मुस्लिम धर्म में भी है. जब हिन्दू धर्म से हमारा पतन हो गया, हमें बाहर फेंक दिया गया तब मुगलों ने, सूफ़ी. ज्म ने हमें स्थान दिया. इसाई धर्म तथा बाइबल ने भी हमें स्थान दिया लेकिन समस्या की शुरुआत तब हुई जब ब्रिटिशों ने inheritance & succession of law की सही शुरुआत की. इसके तहत उन्होंने बेटी को कोई अधिकार नहीं दिया.रानी लक्ष्मीबाई को भी इस कानून को झेलना पड़ा. इस कानून के तहत गुरु शिष्य परंपरा को भी ब्रिटिशों ने नकारा. हम तब तक सशक्त थे, पुख्ता थे लेकिन उनके विक्टोरियन कानून तथा चर्च में लैंगिकता के बारे में कोई बात नहीं थी. परिणामस्वरूप उन्होंने हमें प्रभावहीन कर दिया. nobles से हम no where तक पहुँच गये. हमें एक जिले से दूसरे जिले की यात्रा करने के लिए भी कलेक्टर की अनुमति लेनी पड़ती थी. समाज से हमें पूरी तरह से बाहर कर दिया गया. यह सिलसिला चलता रहा. बाद में ब्रिटिशों ने धारा 377 में हमें स्थान दिया लेकिन स्वतंत्रता के 70 सालों के बाद हम जाग गये. अपने अधिकारों के लिए हम कोर्ट में गये. मैं हिन्दू हूं, मैं अपना धर्म क्यों बदलूं. मेरे धर्म में मुझे उपदेवता कहा

जाता है. देव, दानव, यक्ष, किन्नर, अप्सरा, किंपुरुष ... उसके बाद संत, महात्मा, साधु... अर्थात हमारे बाद संत, महात्मा, साधु आते हैं, ऐसे में मैं अपना धर्म क्यों बदलूं?, कुंभ में तो अर्धनटेश्वर का रूप है, मोहिनी रूप है, इसलिए मुझे यहाँ आकर बहुत अच्छा लग रहा है, क्योंकि मैं पहले भी एक एक्विस्ट थी और आज भी एक्टिविस्ट रहूं.

सवाल: कुंभ में आप 'आकर्षण' का केंद्र बनी हुई हैं? इस बारे में आप क्या सोचती हैं?

जवाब: देखिए, हम पुरुष प्रधान समाज से हैं उत्तर प्रदेश को तो वैसे भी परम्पराओं तथा प्राचीनता का वाहक माना जाता है. यहाँ औरतों को पल्लू में रखते हैं. लेकिन इसका कारण भी है. हमारी संस्कृति मुक्त संस्कृति थी पहले उसमें,नैतिकता की कोई बात नहीं होती थी. औरतें ब्लाउज नहीं पहनती थीं बल्कि चोलियाँ बांधती थीं, लेकिन हम पर तुर्क, लोधी, शक, हूण, मुगल, ब्रिटिश आदि इतने आक्रमण हुए हैं कि हमारी औरतों को बचाने हेतु हमें ये परम्पराएं शुरू करनी पड़ी. आप महाराष्ट्र से आए हो, महाराष्ट्र ने जिजाबाई जैसी मां दी, जिसने शिवाजी राजा जैसे पुत्र को जन्म दिया और इन आक्रमण कर्ताओं के विरुद्ध लड़ने हेतु उसे भवानी तलवार भी दी गई. हमारी लाज बच गयी.

प्रयागराज में मेरा आगमन हुआ. सब लोगों ने मदद की, पत्रकारों ने समर्थन दिया. यहाँ की जनता ने बड़े शान से हमारा स्वागत किया और पुरानी धारणाओं को तोड़ दिया. ऐसा स्वागत इससे पहले कभी किसी अखाड़े का नहीं हुआ. यह हमारे बुजुर्गों और भाइयों की तपश्चर्या का बल है. वर्ष 2016 में मेरा आचार्य महामंडलेश्वर के रूप में पदाभिषेक किया गया और ज्योतिर्पीठ शंकराचार्य प्रभु वासुदेवानंद सरस्वती जी ने हमें मान्यता दी तथा कहा कि "आप मेरे सनातन धर्म के बच्चे हो. मैं तुम्हें कहाँ फेंक दूं? मेरे दरवाजे आपके लिए हरदम खुल रहेंगे". उसके बाद जूना अखाड़े के संरक्षक तथा 13 अखाड़ा परिषद के महामंत्री हरिगिरी जी के साथ बात हुई. उन्होंने कहा कि "इन तेरह अखाड़ों में से कोई इन्हें अपना ले और यदि कोई नहीं अपनाता है तो मैं इन्हें अपना लूँगा." फिर उन्होंने और हमने भी इंतजार किया. और अब प्रयागराज में गंगाजी की गोद में वह इंतजार खत्म हो गया और समय आ गया. जूना अखाड़े के साथ किन्नर अखाड़ा, अखाड़ा बनकर ही रहेगा, यह हमारा कहना था. उन्होंने फिर एक ही बात कही "किन्नर अखाड़ा था, अखाड़ा है और अखाड़ा रहेगा. आप हमारे साथ तीनों शाही स्नान करेंगे". यह सच्चा पुरुषार्थ है. उन्होंने इस बात का ख्याल रखा कि हमें कोई तकलीफ ना हो और पूरी आन, बान, शान के साथ हमारा सम्मान भी संभाला. जूना अखाड़े के आचार्य अवधेशानंद गुरुजी ने कहा, "किन्नर हमारी आस्ति है, संपत्ति है और इसे हम आदर और सम्मान के साथ रखेंगे". वे यहां आकर हमसे मिलकर गये. आपको बता दूँ शाही स्नान का वह दृश्य अद्भुत था, हमारे ईश्वर दत्त प्रभु सबसे आगे, उनके पीछे जूना अखाड़े की ध्वजा, नागा साधु, शंकराचार्य प्रभु, जूना अखाड़ा के आचार्य, महामंडलेश्वर, आवाहन अखाड़ा, अग्नि ब्रह्मचारी, भाईवाड़ा, दशनामी सन्यासिनी माता और उनके बाद किन्नर अखाड़ा. बड़ा अद्भुत नजारा था, यह दृश्य समूची दुनिया ने देखा. दुनिया ने यह भी देखा कि हिन्दू सनातन धर्म कितना उदार है. यह आधुनिक धर्म है लेकिन आधुनिक धर्म की इसकी व्याख्या बदलकर इसे पुरुष प्रधान धर्म का करार दिया गया. लेकिन जब भक्ति स्त्रीलिंग है तब पुरुषार्थ कहां बचता है?

सवाल: आपका पढ़ना, लिखना अपने संघर्षपूर्ण जीवन से उठकर यह सफलता हासिल करना, इसका श्रेय आप किसे देंगी?

जवाब: यह तो मेरी मां के कठोर परिश्रम का प्रतिफल है. उसने ही मुझे प्रेरित किया, संघर्ष करने के लिए आगे बढ़ाया. वह मेरा संबल है.

सवाल: यह जो सम्मान लोगों का प्यार आपको मिल रहा है, लोग आपका आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं, आप क्या कहेंगी इस पूरी प्रक्रिया को ?

जवाब: विजय, विजय होती है और सम्मान किसे अच्छा नहीं लगता? सच कहूं, मैं इस आचार्य महामंडलेश्वर गद्दी की प्रहरी हूं. मैं चाहती हूं कि हमारी आने वाली पीढ़ी व पूरी दुनिया अपने इस सनातन धर्म के बारे में गहराई से जाने. हमारा सहिष्णु धर्म किसी पर आक्रमण नहीं करता. हाल ही में पुलवामा में जो बात हुई वह बड़ा दर्द देकर गई. पुलवामा में हमारे बच्चे थे. हमारी परंपरा के अनुसार उन्हें भी उनके जन्म पर किसी किन्नर ने अपनी गोद में लेकर आशीर्वाद दिया होगा. मुझे गहरा अफसोस है, पुलवामा की घटना को लेकर! इसीलिए पर्व स्नान में मैंने कहा 'अब हमारी महिमा की बात है. राजनीति, चुनाव को परे हटा दो और दम दिखाओ, जिन्होंने यह घृणित कार्य किया है उन्हें मुंहतोड़ जवाब दो!

किन्नर अखाड़े की आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मीपति त्रिपाठी जी की आवाज यह कहते हुए बिल्कुल अपने चरम पर थी. अपने देश, धर्म के प्रति अभिमान और गर्व महसूस करने के लिए लैंगिकता से परे उठी वह आवाज बुलंद भी थी और गर्व से ओतप्रोत थी. वहां से निकलते समय हमारे दिल में भी एक नयी ज्योति जल उठी थी और एक नया नजरिया जाग गया था, जिसे किसी लैंगिकता का तूफान बुझा नहीं सकता था.

डॉ. सुलभा कोरे
यूनियन धारा, के. का.

दिनांक 14.02.2019 को दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा CUSAT, कोच्चि में आयोजित "राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह" के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय कोट्टयम को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यन्वयन हेतु वर्ष 2017-18 के लिए (दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र) बैंक वर्ग में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. CUSAT विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर शशिधरण; श्री शैलेश, सचिव (राजभाषा विभाग); डॉ. बिपिन बिहारी, संयुक्त सचिव (राजभाषा विभाग) एवं अन्य गणमान्यजन की उपस्थिति में केरल के राज्यपाल श्री पी सदाशिवम के कर-कमलों से यह पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री वी प्रदीप, क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, कोट्टयम.

हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 45 वीं बैठक में वर्ष 2018 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु दिनांक 04.02.2019 को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

नराकास(बैंक), लुधियाना द्वारा वित्त वर्ष 2017-18 के तहत राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने के लिए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है. पुरस्कार प्राप्तकर्ता (दाएं से बाएँ) श्री एच. एस. संधु, क्षेत्र प्रमुख; श्री प्रवीण आनन्द, अध्यक्ष नराकास; श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं सुश्री रीता, राजभाषा अधिकारी.

दिनांक 14.02.2019 को दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा CUSAT, कोच्चि में आयोजित 'राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' के दौरान यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यन्वयन हेतु वर्ष 2017-18 के लिए (दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र) बैंक वर्ग में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. CUSAT विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर शशिधरन, श्री शैलेश, सचिव (राजभाषा विभाग), डॉ. बिपिन बिहारी, संयुक्त सचिव(राजभाषा विभाग) एवं अन्य गणमान्यजन की गरिमामयी उपस्थिति में माननीय केरल के राज्यपाल श्री पी सदाशिवम के कर-कमलों से यह पुरस्कार श्री ए कृष्णस्वामी, क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम ने ग्रहण किया.

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा "कोचीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, एर्णाकुलम, कोच्चि के भव्य सेमिनार हाल में 'दक्षिण व दक्षिण पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में वर्ष 2017-18' हेतु हमारे बेंगलूरु के क्षेत्र प्रमुख श्री आलोक कुमार, उप महाप्रबंधक को राजभाषा शील्ड व राजभाषा प्रभारी श्री कृष्ण कुमार यादव, प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान कर केरल के राज्यपाल व भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री पी. सत्यशिवम द्वारा सम्मानित किया गया. इस अवसर पर कोचीन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आर.शशिधरन, श्री.विपिन बिहारी, उप सचिव, श्री शैलेश, सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार भी उपस्थित रहे.

दिनांक 13.02.2019 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग की 48 वीं अर्ध वार्षिक समीक्षा बैठक में श्री गोविंद दास अग्रवाल, उप शाखा प्रमुख, भिलाई शाखा को राजभाषा में अच्छे कार्य के लिए विशेष राजभाषा सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया.

दि. 08.03.2019 को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष्य में क्षेका भोपाल द्वारा महिलाओं के लिए विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता, महाप्रबंधक, भोपाल श्री विनायक व्ही. टेम्भुर्ने की धर्मपत्नी श्रीमती वैशाली टेम्भुर्ने एवं क्षेत्र प्रमुख भोपाल, श्री गुरतेज सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती बलतेज कौर तथा क्षे.म.का. से सहायक महाप्रबंधक, श्री याचना पालीवाल द्वारा की गयी. कार्यशाला में स्थानीय शाखाओं के साथ अंचल कार्यालय एवं क्षे.का.की महिलाओं ने प्रतिभागिता की.

दि. 08.03.2019 को क्षे.का.हावड़ा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला स्टाफ सदस्यों हेतु एक दिवसीय विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन मुख्य अतिथि, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय की सहायक प्राध्यापिका, डॉ.मुन्नी गुप्ता की अध्यक्षता में किया गया.

दि. 08.03.2019 को क्षे.का. रायपुर में सहकर्मी महिला स्टाफ सदस्यों के लिए विशेष सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. इस आयोजन में मुख्य अतिथि के तौर पर डॉ. मधुलिका अग्रवाल, प्रोफेसर वाणिज्य शासकीय विश्वविद्यालय, रायपुर उपस्थित रहीं साथ ही श्री एम पी सिंह, क्षेत्र प्रमुख, रायपुर एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती रंजू सिंह ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की.

दि. 05.03.2019 को महिलाओं हेतु विशेष कार्यशाला का आयोजन क्षे.का.कोल्हापुर में किया गया.

दि. 08 मार्च 2019 को क्षे.का.रीवा में आयोजित की गई महिला कर्मियों हेतु विशेष कार्यशाला.

कर्मचारी महाविद्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 8 मार्च, 2019 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह के दौरान लिए गए छायाचित्र में उप प्राचार्य डॉ.चेतना पाण्डेय एवं सभी कर्मचारीगण.

दि. 19.03.2019 को क्षे.का.जयपुर द्वारा महिला स्टाफ सदस्यों के लिए विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दि. 08.02.2019 को इंदौर क्षेत्र की स्थानीय महिला शाखा प्रमुखों, उप शाखा प्रमुखों, इंदौर सरल, क्षे.का.इंदौर की समस्त महिला कार्मिकों के लिए "महिलाओं का महाकुंभ" नामक एक विशेष महिला कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर-श्री राजेश कुमार की उपस्थिति में केंद्रीय कार्यालय मुंबई से उपस्थित मुख्य प्रबंधक एवं संपादक, यूनियन धारा, डॉ.सुलभा कोरे; रीइनवेंट ऑन की संस्थापक एवं निदेशक, सुश्री नूपुर सिंह; अरिहंत कैपिटल की असिस्टेंट वाइस प्रेसीडेंट ने इस कार्यक्रम में अतिथियों की भूमिका निभायी.

दि.08 मार्च, 2019 को क्षे.का.बड़ौदा द्वारा महिलाओं हेतु विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती वंदना भट्, एडवोकेट एवं एक्स मेम्बर ऑफ कंज्यूमर फोरम उपस्थित रहीं.

क्षे.का.नागपुर द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में क्षे.का.एवं विभिन्न शाखाओं से महिला स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की तथा विशेष अतिथि के रूप में सुश्री नन्दा जीचकर, महापौर, नागपुर तथा मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री रश्मि बंसल उपस्थित रहीं.

दि.08.03.2019 को क्षे.का.एर्णाकुलम में महिला विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ उषा नायर, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), सेंट थेसा कॉलेज, एर्णाकुलम;क्षे.का. एर्णाकुलम के क्षेत्र प्रमुख श्री ए कृष्णस्वामी; उप क्षेत्र प्रमुख,श्रीमती आनी डायस एवं साथ में एर्णाकुलम क्षेत्रीय कार्यालय एवं शाखाओं की महिला स्टाफ-सदस्य.

दि. 08 मार्च, 2019 के अवसर पर क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय एवं क्षे.का.रांची के सभी पुरुष स्टाफ सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित ग्रीटिंग्स कार्ड, उपस्थित सभी महिला स्टाफ सदस्यों को प्रदान करते क्षेत्र प्रमुख रांची, श्री विपन सिंह; उनके साथ उप क्षेत्र प्रमुख रांची, श्री के पी मण्डल एवं सरल प्रमुख रांची, श्री संजीव कुमार.

दि. 08 मार्च, 2019 को महिला दिवस के अवसर पर क्षे.का.मदुरै में महिलाओं हेतु विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला का शुभारंभ मदुरै क्षेत्र के अधीन शाखाओं से आयी हुई महिलाओं द्वारा केक काटकर किया गया. क्षेत्र प्रमुख, श्री श्रीनिवास वंगला और उप क्षेत्र प्रमुख, श्री बेन्नी स्टीफन ने भी उपस्थितों को संबोधित किया.

करते हैं, गोवा की सैर

मन में गोवा का ख़्याल आते ही हमारे सामने असंख्य तस्वीरों से जो कोलाज बनता है वो दूर-दूर तक फैले ख़ूबसूरत बीच, रेत पर अठखेलियां करते लोग और बीच के किनारे पर रात भर चलने वाला ट्रांस म्यूज़िक और पार्टी की तस्वीरों से मिलकर बनता है. दरअसल यही वो चीज़ें हैं, जो गोवा को देश के अन्य पर्यटन स्थलों से अलग बनाती हैं. हो सकता है आप इनमें से बहुत सारी चीज़ों का आनंद देश या दुनिया के अंदर कहीं और भी ले लें, लेकिन गोवा के माहौल में जो खुलापन और नशा है वो आपको शायद ही कहीं मिलेगा. यही कारण है कि देश के युवाओं की पार्टी के लिये गोवा पहली पसंद होता है. मेरे लिये गोवा की यात्रा पहली बार नहीं थी, लेकिन गोवा जितनी भी बार जाओ, नया सा लगता है. तो आइए, आज मैं गोवा के बारे में अपने अनुभवों को आपके साथ साझा करता हूँ.

मैं और मेरी पत्नी ने नवंबर महीने में गोवा जाने का प्लान बनाया था, इस दौरान गोवा में पर्यटकों की आवक सबसे ज़्यादा होती है, क्योंकि नवंबर से फरवरी तक गोवा का मौसम खुशगवार रहता है. हालांकि यदि आप गोवा में बजट हॉलीडे प्लान कर रहे हैं तो आपके लिये मार्च का महीना सबसे अच्छा रहेगा क्योंकि मौसम लगभग फरवरी जैसा ही होता है, लेकिन होटल और अन्य खर्चों में लगभग 50 प्रतिशत की कमी आ जाती है. दिसंबर का अंतिम सप्ताह और जनवरी के पहले सप्ताह में गोवा में मेले का माहौल रहता है क्योंकि यहां नए साल का जश्न बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है, साथ ही इसी दौरान सनबर्न फेस्टिवल भी होता है जो ट्रांस म्यूज़िक पर डांस के शौकीनों के लिये जन्नत से कम नहीं है. ये फेस्टिवल नॉर्थ गोवा के वैगातोर बीच पर आयोजित किया जाता है. इस दौरान विश्व के नामचीन डी जे अपनी धुनों पर युवाओं को थिरकाते हैं. क्षेत्रफल के हिसाब से गोवा भारत का सबसे छोटा और जनसंख्या के हिसाब से चौथा सबसे छोटा राज्य है. गोवा पहले पुर्तगाल का एक उपनिवेश था, जब आप गोवा जाएंगे और विशेषकर पुराना गोवा घूमेंगे तो वहां आपको पुर्तगाली संस्कृति और स्थापत्य की झलक साफ़ दिखाई देगी. पुर्तगालियों ने गोवा पर लगभग 450 सालों तक शासन किया और दिसंबर 1961 में यह भारतीय प्रशासन को सौंपा गया. गोवा में मुख्यत: कोंकणी, मराठी, अंग्रेज़ी, हिन्दी बोली जाती है. पुरानी पीढ़ी के कुछ लोग अब भी आपस में पुर्तगाली में ही बात करते हैं पुर्तगाली प्रभाव वाली कॉलोनियों में रहने वाले लोग आज भी पुर्तगाली भाषा में ही संवाद करते हैं. गोवा जाकर आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है कि यहां बहुसंख्यक आबादी ईसाई है, क्योंकि जगह-जगह आपको चर्च दिखाई देते हैं और यदि आप क्रिसमस के दौरान गए हैं तो वहां का नज़ारा देखकर आपको इस पर यक़ीन भी हो जाएगा, लेकिन ऐसा है नहीं. गोवा में बहुसंख्यक आबादी हिंदू ही हैं और दूसरे स्थान पर ईसाई हैं जो क़रीब 7 प्रतिशत हैं. विषुवृत्तीय जलवायु के कारण गोवा में सामान्यत: दिन में तेज़ धूप होती है और रातें सुहानी होती हैं. यही वजह है कि यहां यूरोप, रूस और मध्य एशिया के देशों से आने वाले सैलानियों की संख्या बहुत अधिक होती है.

कहां घूमें

गोवा में घूमने के लिये बहुत से स्थान हैं यदि आप 'समुद्री बीच' पसंद करते हैं तो पूरा गोवा आपका है, यदि आप पार्टी और वॉटर स्पोर्ट्स पसंद करते हैं तो नॉर्थ गोवा आपके लिये जन्नत है. यदि आप शॉपिंग के शौकीन हैं तो उत्तरी गोवा का मापुसा और गोवा की राजधानी पणजी आपके लिये अच्छी जगह हैं. यदि आपको गोवा के इतिहास से रूबरू होना है तो आपके लिये दक्षिणी गोवा अधिक बेहतर होगा. उत्तर गोवा में सबसे मशहूर बीच कैंडोलिम, कंलगूट, वाघा, अंजुना, वागातोर, ऐश्विम, मोर्जिम और आरंबोल है. जो पार्टी और खाने के शौकीन हैं वो कंलगूट, कैंडोलिम और वाघा बीच जाना पसंद करेंगे लेकिन आप शांति से बैठकर प्रकृति की खूबसूरती का आनंद लेना चाहते हैं तो मोर्जिम और ऐश्विम बीच जा सकते हैं. दक्षिण गोवा में कोलवा, बेनोलीम, मजोर्दा, पालोलेम या मोरजिम तट घूमे जा सकते हैं. आप वाटर स्पोर्ट्स के शौकीन हैं तो बनाना राइड्स, पैरासैलिंग, बंपर राइड, जेटस्की, बोट राइड, पैराग्लाइडिंग इत्यादि विकल्प आपको मिल जाएंगे. लेकिन मेरी सलाह होगी कि आप वाटर स्पोर्ट्स अंजुना बीच पर न करें क्योंकि ये बीच बहुत पथरीला है और कई बार यहां

पैरों में चोट लगने की संभावना होती है. बीच के अलावा यदि आप अन्य स्थानों पर जाना चाहें तो निम्नलिखित विकल्प हैं.

कहां रूकें

पूरे गोवा में चाहे वो उत्तरी गोवा हो, दक्षिणी गोवा या फिर पणजी हर जगह बीच के आस-पास गोवा पर्यटन विभाग ने बहुत से टूरिस्ट होम और हट बनाए हैं, इसके अलावा बहुत से प्राइवेट होटल, रिसॉर्ट, फ्लैट्स, बंगले और हॉस्टल भी उपलब्ध हैं. रुकना पूरी तरह से आपकी योजना पर निर्भर करता है. यदि आप 5 रातें और 6 दिन का प्लान बनाकर जाते हैं तो आप 2 रातें उत्तरी गोवा के किसी बीच पर गुज़ार सकते हैं और 2 रातें दक्षिणी गोवा के किसी बीच पर. 1 रात आप पणजी के आस-पास का इलाक़ा घूमने के लिये बिता सकते हैं. . ज्यादा बेहतर तरीक़ा यह होगा कि यदि आप ट्रेन से जा रहे हैं तो आप थिविम स्टेशन पहुंचकर वहां से प्राईवेट टैक्सी से उत्तरी गोवा के किसी बीच पर रुक सकते हैं और उत्तरी गोवा का आनंद लेने के बाद आप पणजी और फिर अंत में दक्षिणी गोवा मे रुकें और वहां से आपको मडगांव, वास्को-द-गामा और करमाली स्टेशन मिलेंगे जहां से आप अपनी ट्रेन ले सकते हैं. फ्लाइट से आने जाने वालों के लिये भी यही तरीक़ा बेहतर है कि वो एयरपोर्ट से सीधा उत्तरी गोवा जाएं और वहां के किसी होटल में रुकने के बाद पणजी और फिर दक्षिणी गोवा में रुकें और वापसी में दक्षिणी गोवा से चेक आउट करके सीधा एयरपोर्ट के लिये टैक्सी ले लें.

परिवहन

गोवा न सिर्फ़ भारत बल्कि विश्व भर के पर्यटकों के लिये भारत का एक पसंदीदा स्थान है और यह पूरी दुनिया से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है. यहां देश के किसी भी कोने से पहुंचने के लिये फ्लाइट और ट्रेन की सुविधा उपलब्ध है. मुंबई, पुणे और बेंगलूरु से बसें भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं. घरेलू या अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों के लिए कई एयरवेज़ डाबोलीम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के आसपास ही उपलब्ध हैं. लेकिन यदि आप मुंबई या मैंगलोर से गोवा जा रहे हैं तो मेरी सलाह होगी कि आप कोंकण रेलवे रूट से ट्रेन लें और ख़ूबसूरत नज़ारे देखते हुए गोवा पहुंचें. गोवा में लोकल साइट घूमने के लिये यहां कार व बाइक किराए पर मिलती हैं जिसमें पेट्रोल-डीजल आपको डलवाना होगा और आप 12 या 24 घंटे के हिसाब से इन्हें किराए पर ले सकते हैं. यहां बाइक किराए पर लेने वालों के बीच एक्टिवा सबसे ज़्यादा मशहूर है, हालांकि बहुत से लोग स्पोर्ट्स और क्रूज़र बाइक भी लेना पसंद करते हैं. एक्टिवा के लिये ऑफ सीज़न में ₹250-350 रुपये प्रति दिन और सी. जन में ₹300-500 प्रतिदिन किराया लगता है वहीं स्पोर्ट्स और क्रूज़र बाइक के लिये ऑफ सीज़न में किराया ₹400-800 और सीज़न में ₹600-1200 तक होता है. बाइक किराए पर लेना भी बहुत आसान है, आप जिस भी होटल में रुके हों वहां रिसेप्शन पर बात करके आपको बाइक या कार दोनों मिल जाएंगी. जिन्हें सनबर्न से परेशानी हो और बिल्कुल धूप पसंद न करते हों वो कार किराए पर लें लेकिन जो गोवा में आराम से मस्ती करना चाहते हैं और जिन्हें सनबर्न से भी कोई परेशानी नहीं, खुली हवा में रहने के लिये बाइक पर जाएं, क्योंकि बाइक कहीं भी रोकना और पार्क करना, कार की तुलना में बहुत आसान है. गोवा में बाइक टैक्सी भी एक आनंददायक अनुभव है.

वन्यजीव अभयारण्य- बोंडला वन्यजीव अभयारण्य और कोटिगांव वन्यजीव अभयारण्य

संग्रहालय- गोवा राज्य संग्रहालय, नैवेल एविएशन संग्रहालय, पुरातत्व संग्रहालय और पौट्रेट गैलेरी

किले- अगुआड़ा दुर्ग, छापोरा फोर्ट, एगोंडा फोर्ट, तिरकोल किला

प्रसिद्ध चर्च- बैसिलिका ऑफ बोम जीसस, सेंट ऑगस्टीन चर्च, होली स्पिरिट, पिलर सेमिनरी, रकोल सेमिनरी, सेंट काजरन चर्च इत्यादि

प्रसिद्ध मंदिर- श्री कामाक्षी, सप्तकोटेश्वर, श्री शांतादुर्गा, महालसा नारायणी, परनेम का भगवती मंदिर और महालक्ष्मी

तो चलिए अब जानते हैं कि पैकिंग सामान में क्या साथ-साथ लें- गॉगल्स रखें, हैट, सनस्क्रीन, वॉटरप्रूफ हैंडबैग, स्पोर्ट्स कॉस्ट्यूम्स, कैमरा, चप्पल-जूते, लाइट इमिटेशन ज्वलेरी, नो एक्सपेंसिव ज्वेलरी, हैवर सैक, पिट्ठू बैग, पानी की बोतल, एनर्जी ड्रिंक्स और इसके अलावा जो भी आपको जरूरी लगे.

आशीष गुप्ता,
क्षे.का. मुंबई (प.)

आयुष्यमान भव!

खट्टी - मीठी चेरी

दिखने में छोटी-सी, लाल-पीले रंग की तथा खट्टे-मीठे स्वाद की चेरी, रोमांटिक फलों में सबसे ऊपर है. मानसून और गर्मियों का ये फल खाने में जितना टेस्टी होता है, सेहत के लिए उतना ही फायदेमंद होता है. पूरी दुनिया चेरी की दीवानी है. चेरी में भरपूर मात्रा में पोषकतत्व जैसे कार्बोहाइड्रेट, विटामिन ए, बी और सी, बीटा कैरोटीन, कैल्शियम, लोहा, पोटेशियम, फॉस्फोरस, मैंगनीज, पोटैशियम पाए जाते हैं, इसलिए चेरी को 'सुपरफूड' की श्रेणी में रखा जाता है. चेरी के छिलके में भी फ्लेवोनॉइड्स और एंटी-ऑक्सीडेंट होते हैं, जो बहुत फायदेमंद होते हैं. तो चलिये, चेरी के प्रभावशाली स्वास्थ्यवर्धक लाभों के बारे में जानते हैं.

- चेरी में पोटैशियम, लोहा, जस्ता, मैगनीज जैसे खनिज लवण पाए जाते हैं. साथ ही इसमें पाए जाने वाले बीटा-कैरोटीन और क्यूर्सेटिन दिल के रोगों को रोकने में अधिक सक्षम होते हैं.
- चेरी में पोटेशियम की मात्रा अधिक होने के कारण शरीर में सोडियम की मात्रा कम होने लगती है जिससे रक्तचाप संतुलित रूप से संचारित होता है. साथ ही हमारे शरीर का कोलेस्ट्रोल का स्तर भी ठीक रहता है.
- चेरी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर को रोगों से लड़ने की शक्ति देते हैं. साथ ही, इसके फिनॉनिक एसिड और फ्लेवोनॉयडस कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के ऊतकों को बढ़ने से रोकते हैं और फ्री रेडिकल्स को भी बेअसर करते हैं. चेरी को कोलोन और प्रोटेस्ट कैंसर में ज्यादा उपयोग किया जाता है.
- चेरी के सेवन से त्वचा कोमल और खूबसूरत और रूखापन दूर होता है. चेरी का बीटा कैरोटिन तेज सूरज की किरणों से हमारी त्वचा को बचाता है. चेरी में पाए जाने वाले कुछ अम्लीय तत्व चेहरे की त्वचा के मृत कोशिकाओं को हटाकर चेहरा चमकदार और आकर्षक बनाते हैं. त्वचा के लिए जरूरी विटामिन भरपूर मात्रा में चेरी में पाए जाते हैं जिससे यह चमकदार और स्वस्थ रहती है. चेरी के एंटीआक्सीडेंटस शरीर के अंदर के फ्री रेडिकल्स से लड़ते हुए एजिंग की प्रक्रिया को धीमा कर देते हैं. चेरी के पेस्ट को नियमित रूप से त्वचा पर लगाने से मृत कोशिकाएं चेहरे से हट जाती हैं और चेहरे में नयी निखार आने लगती है.
- चेरी का सेवन मनुष्य के शरीर की हड्डियों में मजबूती देता है. चेरी में विटामिन सी की भी मात्रा पाई जाती है, जो हमारे शरीर के कोलेजन और ऊतकों के लिए लाभदायक होता है. साथ ही यह शरीर के अस्थि घनत्व को भी बढ़ाता है.
- चेरी में 75 फीसदी पानी होता है, साथ ही इसमें वसा भी नहीं होती है. अत: रोजाना इसका सेवन शरीर के ऊर्जा स्तर को बढ़ाते हुए आपको हर वक्त अपने अंदर एक ताजगी-सी महसूस कराता है और वजन भी घटाता है. चेरी खाने से वजन कंट्रोल में रहने के साथ ही पाचन तंत्र भी मजबूत होता.
- 'एन्थोसियानिन' चेरी में स्थित वो एंजाइम है जिससे शरीर के यूरिक एसिड की मात्रा कम हो जाती है और जल्द ही गठिया रोग से छुटकारा मिल जाता है. अगर किसी व्यक्ति को रोग हो और उसके हाथ-पैरों में अधिक पीड़ा होती है तो उसे दिन में करीब 15 से 20 खट्टी चेरी का सेवन करना चाहिए.
- दिमाग को सक्रिय और तेज करने के लिए चेरी के फ्लेवोनॉइड और कैरोटिनॉइड बहुत ही प्रभावी होते हैं. चेरी के सेवन से आपकी उम्र कितनी भी हो लेकिन आप मानसिक रूप से चतुर बन सकते हैं.
- चेरी दृष्टि हानि, आंखों का सूखापन और आंखों की सूजन कम करने के साथ-साथ आंखों में उचित दबाव बनाए रखने में मदद करता है. वह सामान्य संक्रमण से भी आंखों की रक्षा करता है. चेरी में विटामिन ए की भरपूर मात्रा पाई जाती है. यदि चेरी का सेवन रोजाना किया जाये तो मोतियाबिंद जैसी आँख की बीमारी के होने का खतरा भी टल जाता है.
- चेरी में पाए जाने वाले 'मैलाटोनिन' नामक रासायनिक पदार्थ से सोने की पैटर्न को नियंत्रित करने में मदद मिलती है. मैलाटोनिन अनिद्रा के उपचार में बहुत ही महत्वपूर्ण की भूमिका निभाता है और इससे नींद आने की संभावना बढ़ती है .

सुप्रिया नाडकर्णी

यूनियन धारा, कें.का.

सावधान! ज्यादा मात्रा में चेरी का सेवन करने पर आपको पेट में ऐंठन, आंत्र गैस का अनुभव होता है. यदि आपको चेरी से एलर्जी है, तो इसका सेवन आपकी सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है. कभीकभार चेरी खाने श्वास बंद, खुजली और पित्त हो सकती है.

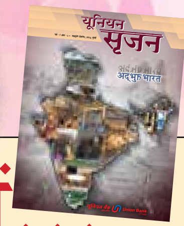

आपकी नज़र में...

मुझे मीरा रोड शाखा, ठाणे से यूनियन सृजन का दिसंबर 2018 अंक पढ़ने का मौका मिला. इस पत्रिका पर अपनी प्रतिक्रिया दिए बिना मैं अपने आप को रोक नहीं पाया. मुझे यह पत्रिका वास्तव में बहुत रुचिकर, पठनीय, लाभदायक लगी. यह 'अद्भुत भारत' अंक वास्तव में अद्भुत है. हिन्दी काव्य के महानायक-गोपाल दास 'नीरज', जिनके बारे में मैंने केवल सुना था, पर इस पत्रिका के माध्यम से मुझे उनके बारे में पढ़ने का भी मौका मिला. इस पत्रिका में मुझे जगन्नाथ मंदिर, केदारेश्वर मंदिर, तनोट राय मंदिर, पद्मनाभस्वामी मंदिर, करणीमाता मंदिर आदि के बारे में सम्पूर्ण जानकारी मिली तथा इस पत्रिका में मुझे पूरे भारत के अद्भुत चीजों को जानने एवं पढ़ने का मौका मिला. इसके लिए मैं यूनियन बैंक का आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि अगला अंक भी मुझे बहुत जल्द पढ़ने को मिले.

प्रवीण म्हात्रे
मीरा रोड, ठाणे

यूनियन सृजन का अक्तूबर-दिसंबर 2018 का 'अद्भुत-भारत' विशेषांक अपने आप में अद्भुत एवं अद्वितीय है. इसको पढ़ते हुए यह आभास हुआ कि हमारी व्यक्तिगत ज्ञानराशि के मुक़ाबले इस भारत देश का पटल कितना विस्तृत और वैविध्यपूर्ण है. इतने कम पृष्ठों में राष्ट्र के अनेकों रंग और झाकियाँ प्रस्तुत करने के लिए भी इस विशेषांक और इसके निर्माताओं को साधुवाद. इसे पढ़कर भारत को जानने-समझने की एक नयी दृष्टि मिली. पुन: आभार एवं आगामी अंकों हेतु शुभकामनाएं.

देवेंद्र पाण्डेय
सहायक प्रबंधक(राजभाषा विभाग)
भारतीय रिजर्व बैंक

तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका का अक्तूबर-दिसंबर 2018 अद्भुत भारत का अंक प्राप्त हुआ है. इस अंक में समूचे भारत के अद्भुत दृश्य को समेकित किया गया है. प्रबंध निदेशक एवं सीईओ माननीय श्री राजकिरण रै जी का संदेश काफी प्रेरणादायक है. आयुष्मान भव: कॉलम काफी ज्ञानवर्धन है. गृह पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद.

अनिल साव
सहायक प्रबंधक,
पंजाब नेशनल बैंक

सबसे पहले यूनियन बैंक के शताब्दी वर्ष पूरे होने पर सभी यूनियनाइट को हार्दिक बधाई. तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका का अक्तूबर-दिसंबर 2018 अद्भुत भारत का अंक प्राप्त हुआ है. यह अंक हमारे अद्भुत भारत को जानने का एक प्रयास है और संपादक मंडल इस कार्य में सफल भी हुए हैं. इतने कम पृष्ठों में राष्ट्र के अनेकों रंग एवं झाकियों को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है. राष्ट्र के जिन अद्भुत क्षेत्रों से अब तक हम सब अंजान थे, उस क्षेत्र को इस पत्रिका के माध्यम से जानने एवं पढ़ने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ. बैंक कवर पर धवल परमार जी द्वारा ली गई "कच्च का रण" की तस्वीर सजीव सी प्रतीत हो रही है. यात्रा संस्मरण बेहद ज्ञानवर्धक एवं रोचक बन पड़ा है. पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और आशा करती हूँ कि अगला अंक भी मुझे बहुत जल्द पढ़ने को मिले.

रेणुका शॉ
कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी, आयकर विभाग, वाराणसी

कुंभ मेले कब होते हैं

स्थान	नद्यतट	माह	आवृत्ति			ज्योतिषीय मुहूर्त
			अर्ध कुंभ प्रति 6 वर्ष	पूर्ण कुंभ या कुंभ प्रति 12 वर्ष	महाकुंभ प्रति 144 वर्ष	
हरिद्वार	गंगातट	चैत्र (मार्च-अप्रैल)	✓	✓		पद्मिनी नायके मेषे कुंभराशि गते गुरौ:. गंगाद्वारे भवेद् योग: कुंभ नामा तथोत्तमा:..
प्रयाग	त्रिवेणी संगम	माघ (जनवरी-फरवरी)	✓	✓	2001 में हुआ	मकरेच दिवानाथे वृषभे च बृहस्पतौ. कुंभ योगो भवेत्र प्रयागे हयति दुर्लभ:?
नासिक त्र्यंबकेश्वर	गोदावरी तट	भद्रा (अगस्त- सितंबर)		✓		सिंह राशिगते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ. गोदावर्या भवेत कुंभो जाते खलु मुक्तिद?
उज्जैन	क्षिप्रा तट	वैशाख (अप्रैल-मई)		✓		मेष राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ:. उज्जयिन्यां भवेत कुंभ सदा मुक्ति प्रदायक:?

स्थान: त्रिवेणी संगम क्षेत्र, प्रयागराज
छायाचित्र: ब्रिगेडियर आशुतोष सीरौठिया (सेना मेडल)
सुरक्षा विभाग, कें. का.

नि:शुल्क वितरण हेतु
RNI No. MAH HIN/2016/68433